मैथिली

भोलालाल दास

जटाशंकर दास

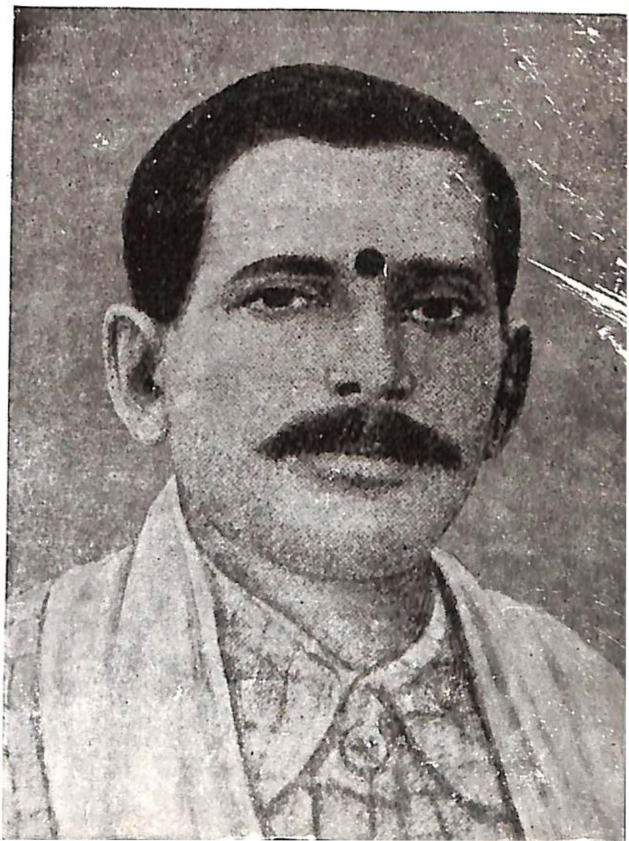

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
817.230 92
D 26 D

81
D 26 D 92

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

भोलालाल दास

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

भोलालाल दास

लेखक

जटाशंकर दास

साहित्य अकादेमी

Bholalal Das · A monograph in Maithili by Jata Shankar Das on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1999), Rs. 25.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९९

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 D 26 D
00117115

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा भवन, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता ७०० ०५३
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२
३०४-३०५, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई ६०० ०१८

MT
817.2 2092
D 26 D

मूल्य : पचीस टाका

117115
9.12.04

ISBN 81-260-0615-3

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स, दिल्ली ११० ०५१

आभार

साहित्य अकादेमीक मैथिली भाषा परामर्शदातृ समिति द्वारा, जकर ओहि समयमें संयोजक डॉ. सुरेश्वर झा छलाह, जखन हमरा बाबू भोला लाल दास पर विनिबन्ध लिखबाक कार्यभार देलगेल, तँ हमरा चिन्ता आ आनन्द दुहू भेल । चिन्ता एहि लेल जे बाबू भोला लाल दासक व्यक्तित्व ओ कृतित्त्व ततेक विराट ओ व्यापक छनि जे ओहि पर एक छोट पोथीमे उचित रुपसँ लिखबामें समर्थ भऽ सकब अथवा नहि । एहिसँ आनन्द एहि हेतु भेल जे एहि लेखन कार्यक सम्पादन में हमरा ओहि महान् व्यक्तिक जीवन ओ कार्यक विषयमें शोध, चिंतन ओ मनन करबाक अवसर भेटत ।

हुनक मैथिली भाषा आ मिथिलांचलक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास आ सुधारक लेल ओहने संघर्षपूर्ण तथा महत्वपूर्ण कार्य छलनि जेहेन कि राष्ट्रीय स्तर पर नवजागरणक प्रथम संवाहक राजा राममोहन रायक छलनि । भोला बाबू मैथिली भाषा में एक भारतीय साहित्य निर्माताक संग-संग एक समाज सुधारक, उच्चकोटिक संगठनकर्त्ता, अपना उद्देश्यक पूर्तिक लेल उच्च आदर्शवादी आ समर्पित नेता छलाह । मैथिली भाषाकें प्राथमिक स्तरसँ विश्वविद्यालय स्तर धरि मान्यता दियेबाक लेल जाहि प्रकारक संघर्ष भोलाबाबू कयलनि तथा अपन ओकालतिक पेशाकेँ छोड़ि गरीबक जीवन बितबैत एक प्रेसक स्थापना कय मैथिली पोथीक प्रकाशन, वितरण आ प्रचार-प्रसारमे जाहि समर्पण सँ ओ जीवन पर्यन्त सक्रिय रहलाह, तकर दोसर उदाहरण मिथिलांचलमे भेटब कठिन अछि । यदि समाज, भाषा साहित्य आ संस्कृतिक उत्थान करबाक कार्यमे संघर्ष करबाक तथा ओहिमे बहुत दूर धरि सफलता प्राप्त करबाक आधार पर मिथिलामे केयो नरेश भेलाह, तँ ओ छलाह बाबू भोला लाल दास । भोला बाबूक कार्यक लेखा-जोखा हुनक जीवन कालमे बहुत थोड़ भेलनि, मुदा हुनक मृत्युक बाद विद्वान ओ साधारण लोकक ध्यान ओहि दिस अधिक आकर्षित भेलनि अछि ।

भारतीय इतिहास पर अपन टिप्पणी प्रस्तुत करैत डॉ. राम मनोहर लोहिया एकठाम लिखलनि अछि जे भारतमे जिबैत मानसिंह पूजित होइत छथि आ मरणोपरान्त महाराजा प्रतापक पूजा होइत छनि । यदि जीबित महाराणा प्रतापक पूजा होइतनि तँ भारतक इतिहास दोसर तरहेँ लिखल गेल रहैत । ''डॉ. लोहियाकेँ अपनौसंग किछु एहिना भेलनि । यदि भोला बाबूकें जीबैत समयमे हुनक कार्य ओ विचारक पाछू लोकक व्यापक सहयोग एवं

सहायता रहितनि तँ मिथिला आ मैथिलीक आइ जे स्थिति छैक ताहिसँ पूर्णरुपेण मित्र रहितैक ।

हमरा एहि विनिबन्धकेँ लिखबामे भोला बाबूक विद्वान सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्ण आ साहित्य अकादेमीक वर्त्तमान सदस्य प्रो. रामदेव झाक जे सहायता, सहयोग आ मार्गदर्शन भेटल ताहि लेल हुनका प्रति हम अपन हार्दिक आभार प्रकट करैत छी । साहित्य अकादेमीक निवर्तमान सदस्य डॉ. सुरेश्वर झाक हम विशेष रुपसँ आभारी छी जे एहि पोथीक समस्त पाण्डुलिपिकेँ पढ़लनि तथा उचित सुधारक लेल हमर मार्ग दर्शन कयलनि ।

साहित्य अकादेमीक मैथिली भाषा परामर्श दातृ समितिक सदस्य लोकनिक प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी जे हमरा भोलाबाबू पर अध्ययन, मनन आ लेखन करबाक अवसर देलनि । आभारी छी हम ओहि समस्त लेखक, समालोचक आ समीक्षकक प्रति सेहो, जनिक रचनासँ हम लाभान्वित भेलहुँ अछि ।

यदि एहि छोट विनिबन्ध द्वारा हम मैथिली भाषी सामान्य पाठक तथा विद्वान साहित्यकार लोकनिकेँ भोला बाबूक बहुआयामी व्यक्तित्व ओ कृतित्वसँ परिचय करबामेँ थोड़बो दूर धरि अपना प्रयासमे सफल भऽ सकब, तँ अपन परिश्रमकेँ सार्थक बुझब ।

—जटाशंकर दास

'शंकर शिविर'
सरहद (मधुबनी)
15, अगस्त 1998

विषय क्रम

आभार	५
परिवेश	९
जीवन वृत्त ओ व्यक्तित्व	१७
स्वतंत्रता आंदोलन एवं समाज सुधार	२७
मैथिली भाषाक उत्थानक लेल संघर्ष	३३
मैथिली साहित्य-साधना	४९
पत्रकारिताक क्षेत्रमे	६०
हिन्दी साहित्यमे अवदान	६८
उपसंहार	७१

परिवेश

मिथिलामे आधुनिक राजनीतिक चेतनाक जागरण कांग्रेसक स्थापनाक प्रारम्भिके युगसँ आरम्भ होइत अछि । एहि क्षेत्रक किछु गोटे बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे देशक सामाजिक ओ सांस्कृतिक आंदोलनसँ अनुप्रेरित एवं आकृष्ट भय गेल-छलाह । 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटीक उद्देश्य एवं कार्यक्रमसँ ई क्षेत्र आकर्षित भऽ गेल छल । मुंगेरक कृष्णप्रसाद जे तखन कानूनक छात्र छलाह, राजेन्द्र बाबूक संग गोखलेसँ भेट कयलनि । मुदा कोनो व्यक्ति गत अथवा पारिवारिक कारणवश ओ सोसाइटिक सदस्य नहि बनि सकलाह । मुजफ्फरपुरक बाबू रामदयालु सिंह सेहो ओहि सोसाइटी दिस आकृष्ट भेल छलाह ।[1]

मुदा ओहिसँ पूर्वक मिथिलाक राजनीतिक परिस्थिति पर एक विहंगम दृष्टि देब आवश्यक अछि । ओइनबार वंशक समाप्त भेलाक बाद तीन सौ वर्ष धरि मिथिलामें कोन तरहक राजनीतिक व्यवस्था अथवा शासन छल सेतँ कहब कठिन अछि, परञ्च अराजकता छल, अव्यवस्था छल, अशान्ति छल तथा अंधकार छल, से तँ स्पष्टे अछि । सोलहम तथा सतरहम शताब्दीमे मिथिलाक कोनो ठेकेनगर इतिहास प्राप्त नहि अछि । हमरा लोकनि ओहि लेल मात्र लोकोक्ति तथा परम्परासँ आयल गाथापर निर्भर करैत छी । इतिहासकार श्याम नारायण सिंहक अनुसारेँ एहि समयमे तिरहुतमे तीन गोट मुख्य भाग छल,— हाजीपुर, चम्पारण आ तिरहुत । मुगलकालीन अकबरक जमानामे, जेनाकि 'आइने-अकबरी'मे कहल गेल अछि तिरहुत, चम्पारण आ बिहार (गंगाक दक्षिण क्षेत्र) में फराक-फराक सरकार छल । परम्परागत गाथा एहि बातकेँ साबित करैत अछि जे खण्डवाल गामक महेशठाकुरकेँ अकबर तिरहुतक जमींदारीक सनद देने छलथिन । महेशठाकुर मध्यप्रदेशक खाण्डव (खण्डवा) सँ सोलहम शताब्दीक प्रारम्भमे आयल छलाह । सनद-प्राप्तिक बाद ओ वर्त्तमान मधुबनी जिलाक भौर ग्राम मे अपन परिवारक संग बसि गेलाह । तेँ हुनक वंश ओहि दिनसँ खण्डवाल वंश कहबैत छनि । जाही प्रकारक 'ग्रांट' ओइनवार वंशकेँ फिरोजशाह तुगलक देने छलनि, सैह अकबर द्वारा महेश ठाकुरकेँ प्राप्त भेल छलनि । 1785 ई. मे प्रिवी काउंसिल'क निर्णय सेहो एहि सम्बन्धमे स्पष्ट अछि । ओहि निर्णयमे कहल गेल अछि जे दरभंगाराजक बटबारा नहि भऽ सकैछ, कारण तिरहुतक सम्पूर्ण 'सरकार' महेशठाकुरकेँ देल गेल छलनि, जनिका समक्ष तिरहुतक सब जमींदार जवाबदेह

छथिन । ओ स्वयं केवल अंगरेजी राजक समक्ष जवाबदेह छथि ।[२]

अंगरेजक समयसँ मिथिला बिहारक अन्य भागक संग बंगालक एक हिस्साक रूपमे रहल । 1857 ई. क्रांतिमे बिहारक कुंवर सिंहक नाम सम्पूर्ण देशमे पसरि गेल छल ।मुदा हुनक गुरु छलाह मधुबनीक निकटस्थ मंगरौनी गामक भिखारी दत्त झा । मिथिलाक ब्राह्मणक एक आओर विद्रोहक उदाहरण अछि सौराठ गामक । मधुबनीसँ आठ किलोमीटर पर स्थित सौराठ गाममे एस. डी, ओ पर ब्राह्मण लोकनि आक्रमण कयने छलाह । 1857 ई. क स्वातंत्र्य आन्दोलनमे मिथिलाक बहुतो व्यक्तिकेँगिरफ्तारकय दण्डित कयल गेलनि । ई आन्दोलन मिथिलांचल मे एक जन-आन्दोलनक रुप पकड़ने छल । आन्दोलनक जड़ि समाजक गरीब आ निम्न वर्गक लोकसँ जुड़ल छल । ई खुशीक बात जे भारतवर्षक सभसँ पैघ जमींदार दरभंगा महाराज मिथिलावासीक भावनाकेँ देखैत एहि स्वतंत्रताक संग्राममे अंगरेजक संग नहि देलनि महाराज लक्ष्मेश्वर सिंह कांग्रेस के पूर्ण सहायता देलन्हि । ई मिथिलाक लेल एक गोट ऐतिहासिक गौरवक विषयथिक ।

कांग्रेसक स्थापनाकालेसँ मिथिलाक लोकमे ओकरा प्रति अत्यधिक आकर्षण छल । 1908 ई. मे सोनपुर मेलाक अवसर पर नवाब सरफराज हुसेन खाँक अध्यक्षतामे एक सभा आयोजित भेलैक, जाहिमे बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीक स्थापना कयल गेलैक । बिहारमें सर्वप्रथम 1912 ई. मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक सत्ताइसम अधिवेशन बाँकीपुर पटनाक ऐतिहासिक भूमिमे भेलैक । ओहीवर्ष बिहारकेँ बंगालसँ पृथक प्रान्त बनाओल गेलैक । भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनमे महात्मा गांधीक प्रवेश एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना मानल जाइत अछि । जनबरी 1914 ई. मे भारत आपस अयलासँ पूर्व-दक्षिण अफ्रिकामे पीड़ित भारतीय लोकनिक उद्धारक हेतु हुनका द्वारा कयल गेल निर्भीकतापूर्वक संघर्षक गाथा देश भरिमे चर्चित भऽ चुकल छल । गांधीजी प्रथमवेर 1916 ई. क दिसम्बर मे लखनउ कांग्रेसमे उपस्थित भेल छलाह । ओहि सम्मेलनमे बिहारसँ सम्बन्धित दुइ गोट प्रस्ताव प्रस्तुत हेबाक छलैक,— एक छल पटना विश्वविद्यालय विधेयक सम्बन्धमे आ दोसर छल चम्पारणक नीलहा साहेब एवं रैयतक सम्बन्धमे । श्री राजकुमार शुक्ल चम्पारण किसानक प्रतिनिधिक रुपमे लखनउ कांग्रसमे भाग लेबाक हेतु गेल छलाह । गांधीजी अपन आत्मकथामे लिखने छथि;—"श्री शुक्ल बिहारक हजार-हजार लोकक ऊपरसँ नीलक कलंककेँ धो देबाक हेतु कृतसंकल्प छलाह ।"[३] कांग्रेस अधिवेशनक दोसर दिन मिथिलाक विशिष्ट प्रतिनिधि बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद प्रस्ताव प्रस्तुत कयलनि जे;—

"ई. कांग्रेस सरकारसँ बिहारमे युरोपीय कोठीवाल एवं नीलहा रैयतक बीच तनावपूर्ण सम्बन्ध आओर कृषि समस्याक कारणक जाँच एवं ओकरा दूर करबाक उपायक अनुशंसा करबाक लेल अधिकारी तथा गैर-सरकारी सदस्य लोकनिक एक संयुक्त समितिकेँ नियुक्त करबाक अनुरोध करैत अछि ।"[४] कांग्रेसमे ई प्रस्ताव सर्वसम्मतिसँ पास भेलैक आ तदुपरान्त मिथिलाक प्रतिनिधि लोकनि गांधीजीसँ चम्पारण अयबाक अनुरोध कयलनि, जाहिमे राजकुमार शुक्ल प्रमुख छलाह ।

नीलहा किसानक समस्याक निदानक लेल गांधीजी 1917 ई. मे चम्पारण सत्याग्रह कयलनि, जे भारतवर्ष में हुनक प्रथम प्रयोग छल । ओहिमे हुनका सफलता सेहो भेटलनि । गांधीजीक चम्पारण-यात्रा एवं एतय हुनक कार्य सम्पूर्ण भारतमे ऐतिहासिक महत्व रखैत अछि । स्वयं गांधीजीक अनुसारें ई "सत्य आ अहिंसाक एक महान प्रयोग छल ।" आगाँ आबयवला समयमे भारतक किसान आ जनताकेँ जे अग्निपरीक्षा देबाक छलैक ओकर भूमिका चम्पारणमे प्रस्तुत भेल छल । राष्ट्रीय संघर्षक परवर्त्ती समयमे एहि सत्याग्रह अस्त्रक कतोक बेर प्रयोग भेल आ तकर परिणाम स्वरूप हमरालोकनि गांधीजीक नेतृत्वमे राष्ट्रीय लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्त कयलहुँ । चम्पारण सत्याग्रह तथा स्वतंत्रता प्राप्तिक बीचमे होइत रहल राष्ट्रीय आंदोलनमे 1920-21 ई. क असहयोग आंदोलन, 1930-31 ई. क नोन सत्याग्रह तथा सविनय अविज्ञा आन्दोलन, 1940 ई. क व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा अंत मे 1942 ई. क अगस्त-क्रांति सभमे मिथिलाक योगदान देशक कोनो दोसर क्षेत्रसँ अधिक रहल अछि । एतय साधारण कार्यकर्त्ता, युवक, छात्र आ' नेता लोकनि जहल जाइत रहलाह, गोलीक शिकार होइत रहलाह तथा अन्य प्रकारक दमन मे पिसाइत रहलाह । किसान आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलन तथा गांधीजीक रचनात्मक कार्यक्रम जतेक एहि क्षेत्रमे भेल ओतेक दोसर ठाम नहि भेल ।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक कालखण्ड मे मिथिलामे सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा मातृभाषा एवं साहित्य सम्बन्धी स्थितिपर सिंहावलोकन सेहो एहिठाम आवश्यक बुझैत छी । 1857 ई. क प्रथम क्रांतिक असफलताक बाद भारतपर अंगरेजी शासनक जंजीर कड़ा होइत गेलैक । दोसर दिस अंगरेजक पिट्ठू पूँजीपति आ जमींदार खुलिकय जनताक शोषण करय लागल । मिथिलांचल शोषणक दोहरी व्यवस्थामे पिसाइत रहल । एक दिस अंगरेजी शासनक कठोर दमन आ दोसर दिस शोषण । दुहूक बीच आपसमे बड़ घनिष्टता, बड़ सहयोग । ओहि कालखण्डक दरभंगा राजक गति विधि पर विचार करब सेहो आवश्यक अछि । 1860 ई. मे दरभंगा महाराज महेश्वर सिंहक मृत्युक बाद दरभंगा राज 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स'क अधीन भऽ गेलैक । तकर उपरान्त अंगरेज शासक लक्ष्मीश्वर सिंह आ हुनक अनुज रमेश्वर सिंह दुनू राजकुमारकेँ अंगरेजी शिक्षा देबाक प्रबन्ध कयलक । ओहि नवीन प्रणालीक शिक्षासँ हिनकालोकनिकेँ मैथिली भाषा तथा मैथिल संस्कृतिक प्रति स्वभावत: किछु उपेक्षाभाव उत्पन्न भऽ गेलनि । ताहि कारणसँ मिथिलामे मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासमे थोड़ेक बाधा उपस्थित भऽ गेलैक । 1880 ई. मे जखन लक्ष्मीश्वर सिंह महाराजक गद्दी पर बैसलाह, तखन मैथिलीक स्थिति आओरो अधलाह भऽ गेलैक । 14 जुलाई 1880 ई. केँ हुनक आदेश एहि प्रसंगकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि ;—

"I have given order for introduction of Hindi character and language in my office a very long time ago. This, however, can not take place till our vernacular Amlas get thoroughly to understand the character to read

and write it fluently. This, however, I am sorry to say that none of our Amlas know how to do.

I have, therefore, been obliged to pass these orders that all Amlas should at once set to work to master the Hindi character and language. That I have given then another three months to learn it. That is by November they will have to master it thoroughly and to save me from the painful necessity of pensioning or dismissing old hands."

Lakshmishwar Singh
14.7.1880

("बहुत पूर्वहिं हम अपन कार्यालयमे हिन्दी लिपि ओ भाषाक प्रयोगक आदेश दय देने छी । मुदा ई ताबत धरि नहि भय सकैछ जाबतधरि हमर देशी भाषा-भाषी अमलालोकनि लिपि ताहि रुपमे नीक जकाँ सीखि नहि लैत छथि जाहिसँ ओलोकनि निधोख पढ़ि लीखि सकथि । मुदा हमरा खेद सहित कहय पड़ैछ जे हमर कोनो अमला नहि जनैत छथि जे ई कोना कयल जाय ।

"अत: हमरा बाध्य भय एहि रुपक आदेश देबय पड़ल अछि । ओ ई जे अविलम्ब सभ अमला हिन्दी लिपि ओ भाषा सिखबाक हेतु लागि जाथि । ई सिखबाक लेल हम हुनका लोकनिकेँ आओरे तीन मासक समय दैत छियनि । नवम्बर धरि हुनका लोकनिकेँ ई नीक जकाँ सीखि लेबाक छनि जाहिसँ हमरा पुरान कर्मचारीकेँ पेंशन दय हटयबाक अथवा छँटनी करबाक दुखद निर्णय नहि लेमय पड़े ।")

दोसर दिस अंगरेज शासक द्वारा जे आधुनिक शिक्षा पद्धति आरम्भ भेल ओहिमे मैथिली भाषाक हेतु कोनो स्थान नहि छल । 1898 ई. मे लक्ष्मीश्वर सिंहक निधन भेलापर हुनक अनुज रमेश्वर सिंह दरभंगा महाराजक कुर्सीपर बैसलाह । ओहि समय मे भारतमे राजनीतिक चेतनाक उदय भऽ रहल छलैक । कतोक जातीय संस्था सभ सेहो 1910 ई. मे 'मैथिल महासभा' नामसँ एक जातीय संगठन ठाढ़ कयलनि । ओकर सदस्य मात्र ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ भऽ सकैत छलाह । फलस्वरूप 'मैथिल' एही दू गोट जातिक लेल रूढ़ बनि गेल । आइयोधरि कतबो प्रयास कयलापर ओ नहि हटि रहल अछि । जेना बंगाल मे निवास कयनिहार सब जाति आ वर्गक लोककेँ बंगाली बुझल जाइत छैक, तेना आइयो धरि मिथिलाक माटिपर बसनिहार सभ अपनाकेँ मैथिल नहि मानैत अछि । मिथिलाक सभ लोक मैथिली बजैत अछि, आइयो मिथिलाक सभ लोक मैथिली बजैत अछि, मुदा अपनाकेँ आइयो मैथिली भाषी नहि बुझैत अछि । एहि दु:स्थितिक लाभ बिहारक मैथिली विरोधी शासक लोकनि खूब उठौलनि तथा मैथिली भाषाकेँ समाप्त करबाक लेल कोनो कसरि अपना जनैत नहि रखलनि ।

जखन बंगालकेँ बाँटिकय बिहार नामक एक प्रांत बनाओल गेल तँ ओहिमे झारखंड, मगध ओ मिथिलाकेँएक संग राखि हिन्दीक मठाधीस तथा कांग्रेसी-नेता लोकनिक संयुक्त

षड़यंत्रसँ हिन्दी ओहिपर थोपि देल गेल । जखन कि एहिमे ककरो भाषा हिन्दी नहि छलैक । तत्कालीन नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आ डॉ. साच्चिदानन्द सिंहा दुनू गोटे मैथिलीक विरोधी छलाह । हिन्दीक साम्राज्यवादी लोकनि मैथिलीकेँ हिन्दीक एक बोली (उपभाषा) सिद्ध करबाक लेल विद्यापतिकेँ हिन्दीक पाठ्यक्रम मे प्रथम स्थान दय एक हजार वर्षक साहित्यिक परम्परावला मैथिलीकेँ पाछू धकेलि, सत्तरिवर्षक खड़ी बोली हिन्दीकेँ आगू कय अपन मनसूबाकेँ बढ़ा लेलनि । मुदा विद्यापतिक परम्परा मे रचना के निहार गोविन्ददास, उमापति, मनबोध, चन्दाझा आदिकेँ ओहिसँ फराक रखबामे अपन निर्लज्जता प्रदर्शित करबासँ नहि चुकलाह । अधिकारी वर्ग मे भ्रांतिवश ई धारणा बनल छल जे एहि क्षेत्रक अपन कोनो साहित्यिक परम्परा नहि छैक । मैथिलीक समृद्ध साहित्यिक परम्पराक उपेक्षा कयल गेलैक । अंगरेज शासकक शिक्षाक उद्देश्य छलैक एहेन भाषा सबहक विकास करब जे प्रशासनिक दृष्टियेँ महत्वपूर्ण होइतैक । मैथिलीमे सुदीर्घ ओ गौरवशाली परम्पराक अछैत ओहिमे गद्यक विकास ताबत धरि नहि भेल छलैक आने मिथिलाक शिक्षित समुदाय द्वारा मैथिलीकेँ उचित स्थान दियेबाक लेल कोनो प्रभावशाली प्रयासे कयल गेलैक । फलस्वरूप मिथिलांचलक स्कूलमे हिन्दी आ उर्दूक पठन-पाठनक व्यवस्था कऽ देल गेलैक । उर्दू मिश्रित हिन्दी मिथिलाक बालक-बालिका पर लादि देल गेलैक । प्रो. जयदेव मिश्र अपन चंदा झा नामक पुस्तकमे लिखलनि अछि जे "ओ (सरकारी अधिकारी) सब उर्दू-मिश्रित हिन्दी चलयबाक काज एहिलेल कयलनि जे ओ बुझैत छलाह जे एहिठामक लोक खिन्न ओ क्षुब्ध रहितहुँ तेना असंगठित छथि जे एकर सफलतापूर्वक प्रतिरोध करबामे अक्षम छथि ।"

एहि सम्बन्ध मे लेफ्टिनेन्ट गवर्नर जी. पी. कैम्पवैल द्वारा देलगेल रिपोर्ट पर सेहो गंभीरतापूर्वक विचार नहि कयल गेलैक । ओ अपना रिपोर्टमे कहने छलाह ;—

"I was astonished on lately visiting Bihar to find this bastard language not only flourishing in its fullest course in our official proceeding but that we are perpetuating by teaching in our schools. . . I found that in our so called vernacular schools, this monstrons language, if it can be called a language, is being taught by Maulvis instead of the vernacular teacher. I am determined to put a stop to the teaching of this language in our schools.

("किछु पूर्व बिहारक भ्रमणक्रममे हमरा ई देखि आश्चर्य भेल जे ई संकर भाषा (उर्दू-हिन्दीक खिच्चड़ि) केवल हमर सरकारी कार्यवाही थे मे तीव्रतासँ विकसित नहि भय रहल अछि, अपितु हमरालोकनि अपना स्कूल सभमे एकरा थोपिकय स्थायी बना रहल छी । . . .हम देखल जे हमरालोकनिक प्रत्येक तथा कथित देशी भाषाक स्कूल मे ई विकृत भाषा, जँ एकरा भाषा कहल जाइक, भाषा-शिक्षकक बदलामे मौलवी द्वारा पढ़ाओल जाइत

अछि । हम अपना स्कूल सब मे एहि भाषाक पढ़ौनीकेँ बन्द करबाक लेल निश्चय कय लेने छी ।'')

कैम्पवेलसन उच्च अधिकारीक उक्त रिपोर्ट पर ध्यान रखैत यदि मिथिलामे हिन्दीक स्थान मे मैथिलीक माध्यमसँ पठन-पाठनक व्यवस्था भेल रहितैक तँ आइ मैथिली भाषाक स्थिति सुदृढ़ भऽ गेल रहितैक । मुदा मैथिली भाषी नेना लोकनिक शिक्षा उर्दू मिश्रित हिन्दीएक माध्यमसँ होइत रहल । एकरा बदलबाक लेल केयो माय-बाप नहि छल ।

एहि तरहेँ मैथिली हिन्दी ओ उर्दूक मिश्रित पाँक मे फँसल छल । मैथिलीक उद्धारक कार्य मधुबनी अनुमंडलक तत्कालीन अनुमंडलाधिकारी जॉर्ज ग्रियर्सन, जे एक भाषा-वैज्ञानिक अंगरेज अफसर छलाह, से कयलनि । ग्रियर्सन साहेब मैथिलीक प्रथम व्याकरणक रचना कयलनि आ ई सिद्ध कयलनि जे मैथिली सम्पूर्ण मिथिलांचलक भाषाथिक । मैथिलीक प्राचीन साहित्यसँ लय लोक साहित्य धरि विभिन्न क्षेत्रमें अपन अनुसंधान द्वारा जॉर्ज ग्रियर्सन ने केवल मैथिलीकेँ पुनर्जीवित कयलनि, प्रत्युत उदासीन मैथिली भाषीक हृदय मे अपन भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति उत्साह-भावनाकेँ जगौलनि ।

ई स्पष्ट अछि जे यदि दरभंगा राज आरंभसँ मैथिलीक प्रचार-प्रसार तथा तिरहुतालिपिक संरक्षण करबाक प्रयास करितैकतँ आइ मैथिली भाषा तथा ओकर अपन लिपिक विकासक कथा दोसर तरहेँ लिखल जइतैक । बादमे स्वतंत्र भारतक कांग्रेसी नेता लोकनिक तथा हिन्दीक साम्राज्यवादी मनोवृत्तिवलाक संयुक्त षड़यंत्र नहि होइतैक तँ बिहार हिन्दी भाषी राज्य कथमपि घोषित नहिं होइतैक । एही तरहेँ ब्रज, अवधी आ भोजपुरी भाषी उत्तर प्रदेश, राजस्थानी भाषी राजस्थान तथा छतीसगढ़ी एवं बुंदेलखंडी भाषी मध्य प्रदेश कैँ हिन्दी भाषी राज्य घोषित कऽ देल गेलैक । हिन्दीवलाक एही प्रकारक दुराग्रह एवं तानाशाही आचरणक फलस्परुप भारतक दक्षिण भागक चारिगोट प्रदेश मे आइधरि विरोध भऽ रहल अछि । अनकर पूंजी ओ सम्पत्तिकेँ हरण कय अपन स्वरूप ठाढ़ करयवला हिन्दीक मठाधीश लोकनि एहि सभ प्राचीन भाषाकेँ निर्लज्ज जकाँ हिन्दीक बोली घोषित कय अपन साम्राज्य स्थापित करबामे एहि लेल सफल भेलाह जे संविधान सभा मे एक मतसँ संस्कृतकेँ पछाड़ि हिन्दीकेँ राष्ट्र भाषा बना देल गेलैक, आ ओहो मत छल पं. जवाहरलाल नेहरूक, जे स्वयं कहियो ठीकसँ ने हिन्दी बाजि सकलाह आने लिख सकलह ।

मिथिलाकेँ पाछू रहबाक कारण एहूसँ अधिक ई भेलैक जे एहिठामक संस्कृतक पंडित लोकनिक कूपमंडुता तथा संकीर्ण विचारक हेबाक कारणसँ अंगरेजी शिक्षाकेँ बहुत दिन धरि दूर राखल गेलैक । जतय एक दिस बंगालमे राजा राममोहन राय कलकत्ता में संस्कृत कॉलेजक स्थापनाक विरोध कयलनि आ आधुनिक शिक्षाक प्रचार-प्रसारक लेल संघर्ष करैत रहलाह, ततय दोसर दिस मिथिलामे उनैसम शताब्दीक अंत धरि ओ बीसम शतीमे बहुतो दिन धरि संस्कृतक टोल-पाठशाला एवं संस्कृत कॉलेजक स्थापनाक प्रयत्न होइत

रहल । भारतक दोसर क्षेत्रक लोक नवीन पद्धतिक शिक्षा दिस आकर्षित छल, मुदा मिथिलाक पण्डित समाज अंगरेजी शिक्षाक घोर विरोधी छलाह तथा समुद्र पार करब पाप बुझैत छलाह । एहि स्थिति मे मिथिला ओ मैथिलक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ शैक्षणिक विकासक मार्ग सर्वथा अवरुद्ध, भऽ गेल छल तथा ई क्षेत्र ओ समाज विभिन्न प्रकारक कुरीति एवं अंधविश्वाससँ ग्रसित छल । नव सभ्यता, जीवन पद्धति, विचार ओ चिंतनक प्रकाश-किरण आ बसातसँ ई क्षेत्र वंचित छल ।

स्वतंत्रता आंदोलन मे मिथिलाक योगदान यद्यपि अप्रतिम रहलैक, जेनाकि ऊपर कहलहुँ अछि, मुदा स्वतंत्रता प्राप्त भेलापर एहि क्षेत्रक राष्ट्रीय स्तर पर कोनो प्रभावशाली नेताक अभावमे एहि भू-भागक उत्थानक कोनो कार्य नहि भऽ सकल । भाषाधार प्रांतक निर्माणक समयमे सेहो मिथिलाकेँ युग-युगसँ एक सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य हेबाक परम्परा रहितहुँ तथा एतय तीन करोड़ लोकक मैथिली भाषी होइत, मिथिलाकेँ फराक राज्य बनेबाक उचित मांगपर भारतक तत्कालीन कांग्रेसी सरकार कोनो ध्यान नहि देलक । एतबे नहि, कलकत्ताक कल्याणी कांग्रेस अधिवेशन में जानकीनन्दन सिंहक नेतृत्वमे मिथिला राज्यक मांग प्रस्तुत करबाक लेल जाइत मिथिलाक प्रतिनिधि लोकनिकेँ बाटेमे गिरफ्तार कऽ जहल पठादेल गेलनि । ओतबे नहि, बादमे मैथिली भाषी ब्राह्मण मुख्यमंत्री मैथिलीकेँ छोड़ि उर्दूकेँ बिहारक द्वितीय राज्य भाषा बना दे बामे कनेको संकोच नहि भेलनि, कारण अपन कांग्रेस पार्टीक अनुशासनक चक्कर में छलाह तथा भोटक राजनीति करैत छलाह । आइ ओ नेता बिहारक मतदाता आ कांग्रेस दल दुनूसँ तिरस्कृत भऽ सड़क पर टहलि रहल छथि । मैथिली बिहार प्रदेशक एक गोट राज्य भाषा मे परिगणित नहि भऽ सकल तकरे हथकंडा बनाय भारत सरकार एखन धरि मैथिलीसन प्राचीन ओ कोटि-कोटि लोकक मातृभाषाकेँ, जकरा हजारवर्षक गौरवशाली साहित्य प्राप्त छैक, भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूची मे स्थान नहि देलक अछि ।

भाषाक स्थिति स्वयं मैथिली भाषी विद्वान, बिहारक शासन तथा हिन्दीक साम्राज्यवादी तत्त्वक सम्मिलित क्रियाकलापक कारणसँ बहुत भयावह होइतहुँ जहाँ धरि मैथिलीक साहित्यिक सर्जनाक प्रश्न अछि, ओ अविच्छिन्न रुपसँ विकसित ओ व्यापक होइत रहल अछि । चौदहम शताब्दीसँ महाकवि विद्यापतिक गीत परम्परा चलि रहल अछि आ गद्यक क्षेत्र मे सेहो ज्योतिरीश्वर समस्त उत्तर भारतमे अपन 'वर्णरत्नाकर' रचनाक संग सभसँ प्राचीन गद्यकार मानल जाइत छथि । आधुनिक युगक प्रारम्भ कवीश्वर चन्दा झा (1831 ई.) सँ मानल जाइत अछि । 1831 ई. सँ 1890 ई. क मध्य कवीश्वर चंदा झा, कविवर जीवन झा, म.म. हर्षनाथ झा, बाबू तुलापति सिंह, महाकवि लालदास, विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, म.म. मुरलीधर झा, म.म. मुकुन्द झा बख्शी, साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास, यदुनाथ झा यदुवर, पं. जनार्दन झा 'जनसीदन', रामेश्वर मिश्र, महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झा, पं. बबुआजी मिश्र प्रभृति संस्कृत विद्वान लोकनि मातृभाषाक उन्नयनमे

सक्रिय रहलाह ।

एही प्रकारें 1890 ई. सँ 1910-11 ई. धरि कविवर सीताराम झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, पं. कुशेश्वर कुमर, कुमार गंगानन्द सिंह, म.म. डॉ. उमेश मिश्र, नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार, कवि चूड़ामणि काशीकांत मिश्र 'मधुप', डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' प्रो. हरिमोहन झा, ईशनाथ झा, बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', हरिनन्द ठाकुर 'सरोज', डॉ. सुभद्र झा, पं. जीवनाथ झा, श्री आरसी प्रसाद सिंह, श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (नागार्जुन) प्रभृति प्रतिभावान मैथिली साहित्य-कारलोकनिक प्रादुर्भाव भेलनि । मैथिली पत्रिकारिताक क्षेत्रमे सेहो अरुणोदय भेलैक तथा दू-दू गोट रामायण सेहो मैथिलीमे लिखल गेल ।

उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे एही परिवेशमे बाबू भोलालाल दासक जन्म दरभंगा जिलाक एक सुदूर गाम कसरौर मे 1897 ई. मे भेल छलनि । भोला बाबूक व्यक्तित्वक निर्माणक जे समय छल ओकरा भारतवर्षक नव जागरण काल कहल जासकैत अछि । उनैसम शताब्दी बीतैत-बीतैत सम्पूर्ण देशमे जनजागरण जे एक लहरि उठल छल तकर मुख्य केन्द्र बंगाले छल । मिथिलामे सामन्तवादी व्यवस्था रहबाक चलते ओकर प्रभावसँ ई क्षेत्र वंचित रहि गेल ।

संदर्भ-संकेत

1. डॉ. सुरेश्वर झा : स्वतंत्रता आन्दोलन मे मिथिलाक योगदान
2. मूर : इण्डियन पिपुल्स (फूटनोट); वोल्यूम; पृ. 178-79
3. महात्मा गांधी : आत्म कथा; पृ. 494
4. 31 वीं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की रिपोर्ट; पृ. 68

जीवन वृत्त ओ व्यक्तित्व

आश्चर्य अछि जे भोला बाबूक जन्मतिथिक सम्बन्धमे एतेक भ्रम अछि, जखन कि हुनक जीवन कालहिमे हुनका पर लिखल गेल तथा ओ स्वयं अपन 'संस्मरण' लिखने छथि । ई पोथी 1980 ई. मे चित्रगुप्त सभा, पटना द्वारा प्रकाशित भेल अछि । 'संस्मरण' मे भोलाबाबू अपन जन्म तिथि किंवा वंशक विषयमे किछु नहि लिखलनि अछि, मुदा एहि पोथीक प्रारम्भमे एक गोट हुनक चित्र छपल छनि, जाहि पर हुनक जन्म 1897 ई. अंकित छनि । भोलाबाबूक जन्म तिथिक विषयमे इएह तिथि अधिक ठाम भेटैत अछि । मैथिली साहित्यक इतिहास मे हुनक जन्म 1897 ई. लिखल अछि । 'व्यक्तित्व ओ कृतित्व' मे डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' 1897 ई. पं. नागेश्वर मिश्र तथा कमल नारायण झा 'कमलेश' 1896 ई. तथा दिनेश्वरलाल आनन्द 1893 ई. अंकित कयने छथि । अन्यान्य कतोक विद्वान लोकनि अपन छिट-फुट निबन्धमे 1897 ई. लिखने छथि । डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' कतोक प्रमाण प्रस्तुत करैत हिनक जन्म तिथि 1894 ई. निश्चित कयलनि अछि । जे हो, मुदा अधिक ठाम भोलाबाबूक जन्मतिथि 1997 ई. भेटैत अछि, आ तेँ हम ओकरे स्वीकार कयल अछि ।

कर्णकायस्थक पञ्जीमे अंकित विवरणक अनुसार बीअर मूलक बीजी पुरुष रत्नादेवक वंशधर, दरभंगा जिलाक कसरौर गामक निवासी चोआलालक एकमात्र पुत्र भोला लालदास छलाह । पञ्जीक अनुसारेँ हिनक नाम राम कृष्ण प्रसाद भोलादास छलनि, मुदा प्राथमिक स्कूल मे नामांकन भोलालाल दास नामसँ भेल छलनि आ वैह नाम सभदिनक लेल स्थायी रहि गेलनि । हिनक मायक नाम सकलवती छलनि । हिनक पिता कर्ण-कायस्थक परम्परानुसार सामान्य शिक्षा प्राप्त कय कोनो छोट जमींदारक ओहिटाम पटबारीक कार्य करैत छलाह । हुनक आर्थिक स्थिति नीक नहि रहबाक कारणे हिनक माय अधिक काल सहरसा जिलाक मंडनमिश्रक जन्मभूमि रहबाक लेल विख्यात महिषी गाम अपन नैहरमे रहैत छलीह । तेँ भोलाबाबूक जन्म महिषी अपन मात्रिकमे भेलनि ।

शिक्षा

परिवारक आर्थिक विपन्नताक कारणसँ भोला बाबूक प्रारम्भिक शिक्षा मातृकहिमे भेलनि । महिषी गाम मिथिलेटामे नहि सम्पूर्ण भारतमे मंडनमिश्रक गाम रहबाक कारणे विद्या ओ संस्कृतिक क्षेत्रमे इतिहास प्रसिद्ध रहल अछि, जतय शुक-सारिका धरि संस्कृतेमे

बजैत छल । एक विशिष्ट ओ परिष्कृत सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक परिवेश मे पालित-पोषित होयबाक कारणसँ बालक भोलालालपर एक उच्च कोटिक प्रभाव पड़लनि आसे जीवन पर्यन्त स्थायी बनल रहलनि ।

भोलाबाबूक मातामह निढ्ढाह गृहस्थ छलाह, तथा हुनका भू-सम्पति ततबा रहनि जे परिवारक भरण-पोषण नीक जकाँ भऽ जाइत छलनि । अतएव ओ अपन कन्या तथा दौहित्रकेँ अधिक समय अपने ओहिठाम रखैत छलाह । ओहि समयमे प्राथमिको शिक्षाक स्थिति नीक नहि छलैक । भोला बाबू स्वयं लिखैत छथि;—

"दस-पाँच गाम पर सरकारक दिससँ हिन्दीक अपर लोअर प्राइमरी स्कूल खुलल छल, मुदा हिन्दीकेँ काहू कूहे कहल जाइत छल आ सरकारी स्कूलमे छात्रक संख्या बढ़ौ तदर्थ गुरुजी लोकनिकेँ लोअर तथा अपर परीक्षामे उतीर्ण छात्रक संख्या पर प्रतिवर्ष सरकारक दिससँ पारितोषिक देल जाइत छलैन्हि । कोनो हाकिम हुक्काम यदि स्कूल पर आबि गेलाह तँ किछु टाका विद्यार्थियो लोकनिकेँ मिठाइ खैबाक हेतु भेटैत छलैन्हि । पुस्तकादिक पुरस्कार एहिसँ अतिरिक्त छल ।

"देहातमे एखनहुँ सरकारी पाठशालाक अपेक्षा खानगीए पाठशाला अधिक छल । संस्कृत टोल सेहो यत्रतत्र सर्वत्र छल । कैथीक आनामासी कमेठाम चलै छल । पुस्तक पाठसँ अधिक देशी हिसाबक शिक्षा छल । कुल शिक्षाक माध्यम अनिवार्य रुपेँ मैथिलिये छल ।

"एही प्रकारक परिस्थितिमे हमर अक्षरारंभ तिरहुतेमे भेल । हमरा मातृकमे बंगालक कृत्तिवासी रामायण, काशीदासक महाभारत आदि एवं हिन्दीक रामायण, सुखसागर तथा मैथिलीक सुन्दर-संयोग नाटक एवं चन्दा झाक मिथिला रामायण आदि छल । सभक यत्किंचित परिचय भेटि चुकल छल ।"[1]

मिथिलाक्षरक "ॐ नमः सिद्धम आँजी सिद्धिरस्तु" सँभोला बाबूक शिक्षारंभ भेल रहनि । हिनका हृदयमे अपन मातृभाषाक प्रति सहज अनुराग ताही दिनसँ दृढ़ भऽ गेल रहनि । हिनक मातामह हिनका आधुनिक शिक्षा दियेबाक विचार कयने छलथिन । लगमा एक छोटछिन इस्टेट छलैक, जे 'कोर्ट्स ऑफ वार्ड्स'क अधीन छलैक । ओहि इस्टेटमे भोलाबाबूक एक माम अनुपलाल दास तहसीलदारक काज करैत छलथिन । भोलाबाबूकेँ हुनके अभिभावकत्व मे लगमा मे राखल गेलनि ।

एक उपयुक्त परिवेश आ प्रतिभाक कारणे भोलाबाबूकेँ अपर प्राइमरीसँ प्रवेशिका परीक्षा धरि प्रत्येक परीक्षामे प्रथम श्रेणी प्राप्त होइत गेलनि । फलस्वरूप अपर प्राइमरीसँ जे छात्रवृत्ति प्राप्त होमय लगलनि से इण्टर परीक्षा धरि हिनका अध्ययनक बाट प्रशस्त कऽ देलकनि । सरकारी छात्रवृत्ति हिनका उच्चशिक्षा प्राप्त करबामे सहायक तँ भेवे कयलनि जे संगहि प्रेरणाप्रद सेहो भेलनि । अपर प्राइमरी पास कयलाक बाद 1911 ई. मे कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध मधेपुराक (आजुक मधेपुरा जिलाक मुख्यालय) सिरीज इन्स्टीच्यूशन सँ प्रवेशिका परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह । प्रवेशिका परीक्षामे प्रथम श्रेणी भेटलापर

अध्ययन दिस हिनक उत्साह बहुत बढ़ि गेलनि ।तदुपरान्त ई पटनाविश्वविद्यालयक अन्तर्गत भागलपुरक टी. एन. बी. जुबली महाविद्यालयमे नामांकन करौलनि । 1913 ई. मे आइ. ए. परीक्षामे उत्तीर्ण भेलाह, मुदा प्रथम श्रेणी प्राप्त नहि भऽ सकलनि ।फलस्वरूप छात्रवृत्ति भेटब बन्द भऽ गेलनि । ओहिकारण सँ ओ बी. ए. कक्षामे नामांकन नहि करा सकलाह । पिताक तँ कथे नहि, मात्रिकोसँ भोलाबाबूकेँ उच्च शिक्षाक लेल आर्थिक सहायता नहि भेटैत छलनि । परञ्च उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक प्रबल अभिलाषी भोला बाबूक लेल एक गोट रास्ता स्वयं प्रशस्त भऽ गेलनि । मुंगेरजिलाक नयागाँव सिराजपुरक मध्य विद्यालयमे प्रधानाध्यापक पद रिक्त रहबाक समाचार कतहुँ सँ भेटलनि । ओहि पदक लेल प्रत्याशी भेलाह आ हिनक नियुक्ति भऽ गेलनि । मात्र दू वर्ष 1913 ई. सँ 1915 ई. धरि ओहि पद पर कार्यरत रहि आगाँक पढ़बाक खर्च जुटा पुन: टी. एन. बी. जुबली कॉलेज मे नामांकन करौलनि आ 1917 ई. मे ओतहिसँ स्नातक परीक्षामे उत्तीर्ण भेलाह ।

ओ एहेन समय छल जखन महात्मा गांधीक भारतीय राजनीतिक आकाश मे ध्रुवतारा जकाँ उदय भऽ गेल छलनि । चम्पारणमे हुनक सत्याग्रहक प्रथम प्रयोग आरंभ भऽ गेल छल । स्वतंत्रता आन्दोलन मे एक नवीन मोड़ आबि गेल छलैक । आन्दोलनक नेतृत्व आधिकांशत: विधिवेत्ता लोकनिक हाथमे छल। भोलाबाबू राष्ट्रीय आन्दोलनसँ प्रभावित भऽ विधि शास्त्र पढ़ि ओकालतिक स्वतंत्र पेशा अपनाकय अपन योग क्षेमक व्यवस्था करैत राष्ट्र सेवा करबादिस प्रेरित भऽ चुकल छलाह । ओहि उद्देश्यक पूर्तिक लेल कलकत्ताक रीपन लॉ कॉलेजमे नाम लिखौलनि । मुदा पुन: अर्थाभावक कारणेँ कलकत्तामे अधिक दिन नहि रहि सकलाह । ओही समयमे बेतिया राज स्कूलमे एक सहायक अध्यापकक स्थान रिक्त भेलैक ।ओतय हिनक योग्यता देखि प्रबन्ध-समिति द्वारा हिनक नियुक्ति भऽ गेलनि । मुदा एक दिस कानून पढ़बाक लालसा आ दोसर दिस राष्ट्रीय आन्दोलनक आकर्षणसँ हिनक चित्त स्थिर नहि रहलनि । परञ्च अध्यापन मे भोला बाबूक दक्षता ओ कर्मठतासँ प्रभावित भऽ 1921 ई. मे प्रबन्ध समिति हिनका प्रधानाध्यापक बनेबाक निर्णय लेलक ।मुदा ओही समय मे महात्मा गांधीक असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ भऽ गेल छलैक । भोलाबाबू प्रधानाध्यापक बनबाक लोभकेँ त्यागि ओहि राष्ट्रीय आन्दोलनमे कूदि पड़लाह तथा ओहिमे जहल सेहो चल गेलाह ।जहलसँ मुक्त भेलाक बाद गांधीजीक नेतृत्वमे स्थापित विभिन्न राष्ट्रीय विद्यालय सभमे कार्य कयलनि । अतएब 1923 ई. मे जाकइ इलाहाबाद मे लॉ कॉलेज मे नाम लिखाय ओतयसँ एल.एल. बी. पास कय मिथिलांचलक केन्द्र लहेरियासराय (दरभंगा) कोर्ट मे ओकालति आरम्भ कयलनि ।एहि तरहेँ भोला बाबू अपन मनोवांछित कर्मक्षेत्रमे प्रवेश कऽ सकलाह ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे अध्ययन कालमे ओतुका राजनैतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमे, जकर ओ ओहि समय मे भारतक केन्द्र स्थान छल, भोलाबाबूक सम्पर्क बढ़लनि तथा ओकर प्रभाव हिनक विचारधारा पर नीक जकाँ पड़लनि । ओही समयमे ओ हिन्दीक प्रसिद्ध पत्रिका 'चांद' सँ जुड़ि गेलाह । हिन्दी जगतमे हिनक ख्याति बढ़य

लगलनि । 'चांद' प्रेसक मालिक श्री रामरख सिंहसँ हिनक घनिष्टता बढ़लनि आ' ओ भोलाबाबूकेँ 'चान्द'क स्थायी सम्पादक बनबाक अनुरोध कयलथिन । पाठक बढ़लासन्ताँ आयमे बृद्धि सेहो होइतनि । मुदा पूर्वहिसँ हिनकामे अपन मातृभूमि मिथिला ओ मातृभाषा मैथिलीसँ अनुराग भऽ गेल छलनि, से इलाहाबादसँ दरभंगा अयबाक लेल बाध्य कऽ देलकनि ।

विवाह ओ परिवार

भोला बाबू जखन भागलपुर मे आइ. ए. मे पढ़ैत छलाह, ताही समयमे हिनक पिता 1912 ई. मे हिनक विवाह पँचगछियाक समीप पटोरी (सहरसा) मे करा देलथिन, मुदा किछुए दिनक बाद ओहि पत्नीक देहान्त भऽ गेलनि । हुनक नाम मुन चुनबती छलनि तथा शिक्षित सेहो छलथिन । पत्नीक मृत्युसँ ई बहुत शोकित भऽ गेलाह । पिता लगले हिनक दोसर विवाह करयबाक विचार कयलथिन, मुदा विद्याध्यंयनमे ओकरा बाधक तत्त्व मानि स्नातक परीक्षा पास कयलाक बाद विवाह करबाक वचन पिताकेँ देलथिन । दैव संयोग जे परीक्षाक बाद पिताक निधन भऽ गेलनि आ मायकेँ असगर घरमे रहब सह्य नहि छलनि, तेँ पिताक प्रथम वार्षिक श्राद्ध कयलाक बाद भोला बाबू दोसर विवाह मधेपुर थानाक (मधुबनी जिला) नवादा गामक निवासी शिव कुमार लाल दासक दशवर्षक कन्या योगमायासँ 1918 ई. मे कयलनि । श्रीमती योगमायादेवी कैँ अक्षरक ज्ञान छलनि आ संगहि मौखिक रुपसँ तुलसीकृत रामचरित मानस, मनबोधक 'कृष्णजन्म' आदिक किछु-किछु परिचय प्राप्त छलनि । तथापि योगमाया विवाहक समयमे ततेक अबोध छलथिन जे जखन बरियाती दरबज्जा पर पहुँचल तँ घघरी पहिरने ओकरा देखबाक लेल दौड़ि गेलीह । स्त्री-शिक्षाक प्रबल पक्षधर भोला बाबू अपना पत्नीकेँ शिक्षित कयलनि आ ओ नीक विदुषी बनि गेलथिन । योगमायाजीकेँ अध्ययन एवं अध्यापनसँ बहुत प्रेम छलनि । अतएब ओ वैवाहिक जीवन कालमे अनेक उच्च विद्यालय मे शिक्षिकाक रूपमे कार्यरत रहलीह ।

योगमायाजी सरस्वतीक साधिका तँ छलीहे, अपन पति भोला बाबूक चरण-चिन्ह पर चलैत अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रेमी सेहो बनि गेलीह । इएह कारण अछि जे ओ समस्त श्री मद्भागवतक मैथिलीमे पद्यानुवाद कयलनि । अर्थाभाव मे ओ प्रकाशित नहि भऽ सकल । किछु वर्ष पूर्व हुनक निधन भऽ गेलनि आ एखनहुँ ओ ग्रंथ प्रकाशन बाट जोहि रहल अछि । योगमाया जी भोलाबाबूक अर्द्धाङ्गिणीक रूपमे हुनक अध्ययन, साहित्य-सृजन, समाजसेवा तथा मैथिलीक लेल संघर्ष मे कन्हा सँ कनहा मिलाकय सहयोग दैत रहलथिन ।

भोला बाबूकेँ पहिल पत्नीसँ कोनो सन्तान नहि रहनि । विवाहक किछुए दिनक बाद हुनकर निधन भऽ गेल रहनि । भोला बाबूक दोसर विवाह हुनक चौबीसम वर्षक अवस्था मे भेलनि । योगमायादेवीक अवस्था विवाहक समयमे मात्र दश वर्षक रहनि । छः वर्षक उपरान्त सोलहम वर्षमे हुनका एक कन्या भेलनि । मुदा ई पहिल सन्तान मासाभ्यंतरेमे मरि

गेलथिन । ई घटना 1924 ई. मे भेलैक, जखन भोलाबाबू कानूनक परीक्षामे इलाहाबाद मे व्यस्त छलाह । पहिल सन्तानक एतेक छोट अवस्था मे मृत्युसँ समस्त परिवार शोक-सागर मे डुबि गेल छल । परञ्च दृढ़ प्रतिज्ञ भोलाबाबू अपन कर्त्तव्य पथसँ विचलित नहि भेलाह । तकर बाद पाँचवर्ष धरि कोनो सन्तान नहि भेलनि । 1929 ई. मे एक बालक जन्म लेलथिन जे एकमात्र संतानक रूपमे वंशक टेक रखने छथिन श्री जगदीश प्रसाद कर्ण । ई अंगरेजीमे एम. ए. कयलनि आओर लहेरिया सराय (दरभंगा)क प्रतिष्ठित उच्चविद्यालय एम. एल. एकेडमीमे सहायक शिक्षक पदपर कार्य करैत सेवानिवृत भेलाह । हिनक आकृति, प्रकृति तथा साहित्य साधनाक प्रति अनुराग अपना पिताक समाने छनि । मैथिली, हिन्दी आ अंगरेजी मे खासकय पद्यमे लिखैत छथि तथा सुयोग्य समीक्षक सेहो छथि । अंगरेजीसँ मैथिली अथवा हिन्दीमे अनुवाद करबामे ई बहुत दक्ष छथि । हिनका तीन गोट पुत्र आ तीन गोट कन्या छथिन । हिनक विवाह अपना युगक सुपरिचित मैथिली सेवक हरेकृष्णलालदास मुख्तारक कन्यासँ भेल छनि ।

आजीविका

पूर्व मे लिख चुकल छी जे भोला बाबू अपन अभिलाषित उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक लेल अर्थ जुटेबाक क्रम मे अध्ययन कालमे बीच-बीचमे मध्य विद्यालय, उच्चविद्यालय मे शिक्षकक रूपमे तथा हिन्दी मासिक 'चाँद'क स्थायी लेखक आ अस्थायी सम्पादक रूपमे कार्य कयलनि । मुदा ई विधिवेत्ता बनि आजीविकाक संगेसंग राष्ट्रीय आन्दोलन तथा समाज सुधार कार्य मे अपन जीवन समर्पित करबाक लक्ष्य बनाने ने छलाह । 1924 ई. मे तदनुसार एल. एल. बी. परीक्षा पास कय ओकालति प्रारम्भ कयलनि । प्रतिभा, लगन ओ परिश्रमक बलपर हिनका ओकालति पेशामे चमकैत अधिक देर नहि लगलनि । ओहि समय मे लहेरिया-सराय 'बार'सँ धरनीधर प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद प्रमृति प्रख्यात ओकील लोकनि गांधीजीक असहोयाग आंदोलन मे ओकालति छोड़ि देने छलाह । क्षेत्र एक प्रकारसँ खाली छलैक । ताहू कारणसँ भोलाबाबूकेँ सफल ओकील बनबामे अधिक विलम्ब नहि भेलनि ।

मुदा एहि पेशामे जमिकय कार्य करबाक अवसर भोला बाबूकेँ मात्र चारि-पाँच वर्ष भेटलनि । हिनक ध्यान अपन मातृभाषा मैथिलीक उत्थान तथा स्त्री गणक उद्धारक लेल विचार मंथनमे लागि गेलनि । ओ ''हिन्दू लॉमे स्त्रियों के अधिकार'' नामक हिन्दीमे एक बृहत् ग्रन्थक रचनामे लागि गेलाह । 1929 ई. मे पुस्तक भण्डार लहेरिया सरायसँ मिथिला नामक मासिक पत्रक प्रकाशनक निर्णय हिनका मनकेँ दू दिस बाँटि देलकनि । फलस्वरूप भोलाबाबूकेँ ओकालतिमे पूर्ण समय देब संभव नहि रहलनि । मुदा एहि अल्पे अवधिमे लहेरिया सरायक बलभद्रपुर मोहल्लामे जमीनक एक पैघ टुकड़ा कीन लेलनि आ ओहि पर रहबाक लेल घर सेहो बना लेलनि । अधिकांश नामी ओकील लोकनिक आवास ओही मोहल्लामे छल । 'मिथिला' मासिकक सम्पादक मंडलमे यद्यपि नामक लेल वरिष्ट सम्पादक पं. कु शेश्वर कुमर छलाह, परञ्च कार्य अधिक भोले बाबूकेँ करय पड़ैत छलनि । एहि-सम्बन्ध भोलाबाबू अपन संस्मरण मे लिखैत छथि;—

117115
9.12.04

"सम्पादकक भार मुख्यत: हमरे ऊपर छल, कुमरजी क्वचिते कदाचित लिखैत छलाह जे कि 'मिथिला'क सम्पादकीय लेख, टिप्पणी तथा आनो लेख इत्यादि सँ प्रत्यक्ष अछि ।"

मैथिलीक समस्या आ तकरा निदानक लेल संघर्ष दिस जहिना अधिक सक्रिय होइत गेलाह, तहिना ओकालति दिस ध्यान कम होइत गेलनि । अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क दरभंगामे हिनक प्रयाससँ स्थापना भऽ गेल छलैक । ओकर मंत्रित्वक भार भोलाबाबू पर आबि गेलनि आतकर बादतँ मैथिलीकेँ विभिन्न स्तरपर स्वीकृतिक हेतु आन्दोलनमे ताहि रूपेँ बाझि-गेलाह जे आजीविकाक सुधिये-बुधि ने रहलनि ।

1939 ई. मे मैथिलीक लेल संघर्ष मे सफलता प्राप्त भेलनि । तकर बाद 1940 ई. मे मैथिली साहित्य परिषद्क मंत्रीपदसँ हिनका स्वार्थी ओ लोभी मैथिलीक तथा कथित सेवक लोकनि हटा देलथिन । परिषद् सँ मुक्त भेलापर भोलाबाबू 'भारती' नामक मासिक पत्रक समस्त आर्थिक भार अपना माथपर लऽ लेलनि । आ ताहिमे कर्जक भार तेना पड़लनि जे ओहिसँ मुक्त होयबाक लेल अपन मकानकेँ सेहो भरना राखय पड़लनि । एक दशक धरि लेखन, प्रकाशन आ सम्पादन कार्य मे लागल रहलाक कारणेँ ओहि दिस प्रवृत्ति बढ़ि गेलनि आ भविष्यमे आजीविकाक हेतु भोलाबाबू ओकालति छोड़ि कऽ लेखन ओ प्रकाशन कार्य मे पूर्णरुपेण लागि गेलाह । आर्थिक स्थिति बहुत खराब भऽ गेलाक कारणसँ भोलाबाबू अंतमे दरभंगा छोड़ि देलनि आ हिन्दीक लेखकक रुपमे युनाइटेड प्रेस लि., पटनामे प्रकाशन विभागक प्रभारी बनि पटना आबिकय रहय लगलाह । एहिठाम भोला बाबू हिन्दीक कतोक पाठ्य पुस्तक लिखलनि तथा ओकर सम्पादन कयलनि । अही क्रममे हिनक 'हिन्दी व्याकरण के सिद्धांत, 'व्याकरण कलाधर' आदि पुस्तक खूब लोकप्रिय भेलनि ।

युनाइटेड प्रेस मे जखन भोलाबाबू लेखन कार्यमे लागल छला, ताहि समयमे अर्थ संचित करबाक हिनका एक अवसर प्राप्त भेलनि । ताहि प्रसंगमे आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कथन सँ ओहिपर स्पष्ट प्रकाश पड़ैत अछि । सुमन जी लिखने छथि;—

"संयोगवश ओही क्रम मे बिहार सरकार द्वारा आहूत प्रारम्भिक शिक्षाक एतिहासिक पाठशालामे अपन किछु पुस्तक स्वतंत्र रूपेँ पठौलनि । किछु दिन पूर्व जकर हस्तलिपि सय सैकड़ामे कोनो प्रकाशक लेबालेल नहि प्रस्तुत छल से स्वीकृतिक पाबि हजार-हजार देबालेल आग्रही भऽ गेल । एक श्रमिक लेखकक चित्त डगमगायल, प्रकाशनक झंझट सँ कापीराइट देबाक विचार मन मे आयल । किन्तु दोसरे क्षण साहसी हृदय भोलाबाबू स्वयं प्रकाशन मे जुटि गेलाह । 'इण्डियन नेशनक मैनेजर उपेन्द्र आचार्य जी कागजक सुविधा देलथिन, प्रेसो प्रस्तुत भेल । अन्तत: पुस्तक छपिकऽ प्रस्तुत भऽ गेल । स्थितिमे तेना त्वरित वेगसँ परिवर्तन आयल जे भोलाबाबू दैन्यक 'दास'सँ सम्पन्नताक लाल बनि गेलाह ! जमीन, भवन, प्रेस सब सहजहि किनलनि । भोलाबाबूक मुँहसँ सुनल अछि जे पुस्तकक विक्रेताक नोट गनबाक मौका नहि होनि । नोटक गड्डीटा गनि सकथि । पटना-भागलपुर-बनारस एक संग संस्करण पर संस्करण छपय लागल ।"[२]

एहि क्रममे भोलाबाबू 'सिद्धार्थ प्रेस'क नामसँ एक गोट प्रेस आ 'अभिनव ग्रंथागार' नामसँ प्रकाशन संस्था स्थापित कयलनि आ स्वयं प्रकाशक बनि गेलाह । मुदा व्यापारी बुद्धिक अभावक कारणे लक्ष्मीक कृपा भोला बाबूपर अधिक दिन नहि रहि सकलनि । यद्यपि कतोक नीको पोथीक प्रकाशन कयलनि, परञ्च व्यवसायमे घाटा लागि गेलनि । जेहो पाइ छलनि से लोक ठकि लेलकनि तथा मुकदमा एवं घाटा मे नष्ट भऽ गेलनि । कोनोटा स्थायी काज नहि कऽ सकलाह । ने पटनेमे मकान बना सकलाह आने लहेरिया सरायवला मकानक पुनर्निर्माणे कय सकलाह ।[3]

भोलाबाबूक आर्थिक स्थितिकेँ पुनः बिगड़बाक बादक समयक चर्चा करैत 'सुमन'जी लिखैत छथि;— ''पुनः भोलाबाबू लक्ष्मीक पर्यंकसँ सरस्वतीक कुश शय्यापर फिरि अयलाह । पुनः वैह संघर्ष, वैह साधना, वैह भाव--अभाव, वैह श्रम-अराधना ।''

श्री शम्भूनाथ मिश्र अपन प्रकाशित शोध प्रबन्धमे लिखैत छथि जे— ''अंतमे बिहार सरकार वैह साहित्यकार-कलाकार-कल्याण कोषसँ प्राप्त तीन सय टाका मासिक वृत्ति तथा ''मैथिली व्याकरण प्रबोध' नामक लिखल मैथिली व्याकरण पुस्तकसँ यदाकदा चटकल ताबापर पड़ल बुन्द जकाँ किछु प्राप्त भऽ जाइत छलनि जाहिसँ नोन रोटीक जोगार होइत जाइत छलनि । एहि अंतरालमे जेना तेना लहेरिया सरायक मकान जे भरना पड़ल छलनि सेहो संघर्षक बाद कहुना पुनः हस्तगत भऽ सकलनि एवं जीवनक शेष भाग ओही मकानमे बितौलनि ।''[4]

एक बात एतय स्पष्ट करब आवश्यक बुझैत छी जे भोलाबाबू यद्यपि हृदयसँ अपन मातृ भाषाक लेल कट्टर समर्थक छलाह, मुदा एक राष्ट्रवादी होयबाक कारणे ओ हिन्दीकेँ राष्ट्रभाषा होयबाक योग्यताकेँ मानैत छलाह आ तेँ हिन्दीक विरोध नहि करैत छलाह । मुदा दोसर दिस हिन्दीक समर्थक लोकनि मैथिलीकेँ समाप्त करबाकलेल फाँढ़ बन्हने छलाह । हमरा लोकनि मानैत छीजे मैथिलीकेँ अपन उचित अधिकार प्राप्त होइक आ ओकर विकासक मार्ग केँ प्रशस्त कयल जाइत तँ ओहिसँ राष्ट्रभाषा हिन्दी ओ भारत राष्ट्र दुनूक विकास होयतैक । भाषाक सम्बन्धमे संकीर्ण विचार कखनहुँ लाभदायक नहि भऽ सकैत छैक ।

भोला बाबूक जीवन संघर्ष मे बितलनि आ ओ सर्वदा अस्तव्यस्त रहलाह । मुदा हुनक विचार आ चिंतनक स्तर बहुत व्यापक एवं उदार छलनि । ओ एक दिस प्रगतिशील छलाह, समाज सुधारक छलाह, राष्ट्रीय आन्दोलनसँ जुड़ल छलाह, तँ दोसर दिस आध्यात्मिक भावनासँ परिपूर्ण छलाह । पूजा-पाठ, खान-पान, आत्मसंजम सभमे समयबद्धताक निर्वाह करैत छलाह । व्यसनमे केवल हुक्का पीबैत छलाह । महात्मा गांधी सँ प्रभावित रहबाक कारणे रहन-सहन बहुत साधारण छलनि । जीवन भरि खद्धर पहिरैत रहलाह । संयमित ओ सादा जीवनक कारणसँ स्वस्थ रहैत छलाह आ दुखीत प्रायः नहि पड़ैत छलाह । मुदा जीवनक अंतिम दू-तीन वर्षमे एपन्डिसाइटिसक दौरा पड़लाक बादसँ हुनक स्वास्थ्य कमजोर भऽ गेलनि ।82-83 वर्षक अवस्थामे एपेण्डिसाइटिसक ऑपरेशन सफल भेलनि

आ ओ अपन प्रबल इच्चाशक्तिक कारणेँ स्वास्थ्य लाभ कऽ लेलनि । ककरो ओ कहियो अपन सेवा करबाक बहुत अवसर नहि देलथिन ।

मुदा मृत्युकेँ के टारि सकैत अछि । भोला बाबूकेँ गंगाक प्रति असीम श्रद्धा रहनि । अंतिम समयमे गंगालाभक आकांक्षा रहनि, से संभव नहि भऽ सकलनि । परञ्च अन्तिम समयमे गंगा गंगा करैत 28 मई, 1977 ई. तदनुसार सन् 1384 साल जेष्ठ शुक्ल दशमी शनि गंगा दशहराक रातिमे ज्ञान पुरससर परलोकवासी भऽ गेलाह । एहि तरहेँ माँ मैथिलीक ई वरद पुत्र चिरनिद्रामे विलीन भऽ गेलाह । मृत्युक उपरान्त दरभंगा नगरमे रहनिहार मैथिली भाषी ओ प्रेमी हिनक अंतिम दर्शन कऽ अश्रुपूरित नयनसँ हिनका विदा कयलकनि । बिहार प्रदेशक दैनिक ओ साप्ताहिक पत्र-पत्रिकामे शोक समाचार, संस्मरण एवं वक्तव्य कतोक मास धरि प्रकाशित होइत रहल ।

मैथिलीक सर्वोच्च कवि ओ साहित्यकार आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' श्रद्धांजलि अर्पित करैत भोला बाबूक जीवनकेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास कहलनि । प्रयाग, कानपुर, दिल्ली, जयपुर, बोकारो, राँची, जमशेदपुर, धनवाद, गौहाटी, कलकत्ता, जनकपुर, काठमांडू आदि विभिन्न स्थानमे दू-तीन मास धरि भोला बाबूक निधनपर शोक सभा आयोजित होइत रहल तथा एहि इतिहास पुरुष पर श्रद्धा सुमन अर्पित कयल जाइत रहल ।

संघर्ष ओ समर्पण

बाबू भोलालाल दास मैथिली भाषाक प्रसार प्रचारक हेतु अपन जीवनकेँ उत्सर्ग कयने छलाह । हुनक मान्यता रहनि जे मैथिली बिहार राज्यक राजभाषाक स्थान प्राप्त करबाक हेतु पूर्णतः अधिकारिणी अछि । मुदा दुर्भाग्य रहलैक जे बिहार मे मैथिली भाषा-भाषीक संख्या अन्य सभ भाषासँ बहुतो अधिक रहैत, ओ सरकारी स्तर पर उपेक्षित रहल । मैथिली भाषी बिहारक मुख्य मंत्री बिहार मे उर्दूकेँ द्वितीय राजभाषा घोषित कय मैथिलीकेँ उचित अधिकारसँ वंचित कऽ देबामे कनियों संकोच नहि कयलनि । अपना राज्यमे मान्यता नहि होयबाक कारणे मैथिलीकेँ अद्यावधि संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल नहि कयल गेलैक अछि, यद्यपि केन्द्रीय साहित्य अकादेमीमे 1965 ई. मे एकरा सतरहमे भाषाक रूपमे मान्यता प्राप्त भेलैक । कहल जाइत अछि जे भोला बाबू केँ ओकालति करबाक समयमे जे आमदनी होइत छलनि तथा हिन्दीक लेखनसँ जे अर्थक अर्जन करैत छलाह से सभटा मैथिलीक सेवामे खर्च कऽ दैत छलाह । मैथिली पत्रिकाकेँ चलेबाक लेल समय-समय पर कर्ज लय काज आगू बढ़बैत छलाह । भोलाबाबूक समक्ष केहनो संकट उपस्थित होइत छलनि तथापि हुनक मनोबल बढ़ले रहनि । जीवनमे ओ कहियो अपना हेतु कोनो पद आ प्रतिष्ठाक कामना नहि कयलनि ।

मैथिलीक प्रचार-प्रसार तथा ओकर विकासक लेल भोला बाबूसँ पूर्वहुँ किछु गोटे कार्य करैत छलाह । मुदा भोलाबाबू एहि कार्य केँ एक गोट जन आन्दोलनक रूप प्रदान कयलनि आ जीवन पर्यन्त पूर्ण समर्पण भावनासँ एहि आन्दोलन मे लागल रहलाह । हुनका

अपन समाज ओ मातृभाषाक निस्वार्थ सेवामे, धन संचयसँ अधिक आनन्द होइत छलनि । ओ मिथिलाक प्राचीन पण्डित लोकनिक 'सर्वेगुणा: काञ्चनम् आश्रयंति' सूत्रकेँ नहि मानैत छलाह । जीवन एतेक साधारण ओ सरल छलनि जे वरिष्ठ विद्वान, ओकील, लेखक एवं चिंतक होइतहुँ टूटल खाटपर सूतै छलाह, घरक टाट टूटल रहनि आ चार चुबैत रहनि । कष्टपूर्ण जीवन बितबैत रहथि, मुदा अपन आदर्श तथा उद्देश्यक पूर्तिक लेल क्रांतिक मशाल हाथमे लेने ठाढ़ रहैत छलाह । वस्तुत: हुनका देखला पर स्वत: गांधी-दर्शनक चेतना जागृत भऽ उठैत छल । भोला बाबूक सम्बन्धमे मैथिलीक कवियित्री आ लेखिका श्रीमती शेफालिका वर्माक, जिनका मैथिलीक महादेवी कहल जाइत अछि, कथन ठीक अछि जे देशक राजनीतिक चेतना जगेबाक लेल जे कार्य गांधीजी, राजेन्द्र बाबू आ पण्डित नेहरू कयलनि वैह कार्य मिथिला-मैथिलीक उत्थानक लेल भोलाबाबू कयलनि । हुनक वाणी, विचार ओ समस्त जीवन तपोनिष्ठक छलनि तथा मूलरूपसँ मातृभाषाक सेवाक लेल समर्पित रहनि । भोलाबाबू मैथिली साहित्यकेँ राष्ट्रवादी विचार-धारासँ जोड़बाक सदिखन प्रयास करैत रहलाह ।

भोला बाबूक विचार-धाराक ओजिस्वता हुनक रचल एहि चारि गोट पाँती सँ स्पष्ट होइछ;—

"भूमिकम्प छी प्रबल विश्व विप्लवकारी हम
छी अति प्रखर तरङ्ग रूढ़ि-गिरि-रजकारी हम
दावानल प्रज्वलित दासता छयकारी हम
झंझानिल सम छी स्वतंत्रता रवकारी हम ।"

सम्मान ओ अर्चना

भोलाबाबू जे अपन समाज आ भाषाक उत्थानक लेल जीवन पर्यन्त समर्पित भावनासँ कार्यकरैत रहलाह, तकर मान्यता हिनका अपन जीवन कालहिमे पर्याप्त भेट लनि । हुनका जीवन कालमे अनेक संस्थासँ विभिन्न स्थानपर सम्मान ओ अर्चना कयल गेलनि । ओहि सबहक चर्चा करबतँ एतय संभव नहि अछि, मुदा ओहिमेसँ किछुक उल्लेख करब आवश्यक बुझैत छी :

(1) 1968 इ. क 29 अक्टूबरकेँ मिथिला साहित्य संस्कृति संस्थान, दरभंगा, भोलाबाबूकेँ सम्मानित करबाक लेल पं. गिरीन्द्रमोहन मिश्रक अध्यक्षता मे एक समारोह आयोजित कय हुनक बहुमूल्य सेवाक चर्चा करैत हुनका 'विद्यारत्न'क उपाधिसँ अलंकृत कयलकनि । ओहि अवसर पर उक्त संस्थानक उपाध्यक्ष तथा दरभंगाक सुप्रसिद्ध गौसेवक धर्मपाल सिंह सेहो उपस्थित छलाह ।

(2) 1941 ई. मे पटनाक प्रमुख सांस्कृतिक संस्था 'चित्र गुप्त सभा' द्वारा भोला बाबूकेँ 'मिथिला सरोज' उपाधिसँ अलंकृत कयल गेल छल ।

(3) 1971 ई. मे प्रयागक मैथिली अकादेमी भोला बाबूक अर्चना ओ अभिनन्दन कयलक ।

(4) 1972 ई. मे पटनाक मैथिलीक सर्वोच्च तथा देशभरिमे विख्यात साहित्यिक संस्था 'चेतना समिति' बाबू भोलालाल दासकेँ हुनक मैथिलीक लेल कयलगेल सेवाक लेल अभिनन्दित कयलक, जाहिमे हुनका ताम्रपत्र एवं चद्दरि श्री सिद्धार्थ शंकर रायक हाथसँ समर्पित कयल गेलनि । तामक मानपत्रमे भोला बाबूक यशोगान सुललित भाषामे अंकित कयल गेल छल । ज्ञातव्य अछि जे 'चेतना समिति'क स्थापना 1954 इ. मे बाबा श्री नागार्जुन तथा डॉ. सुरेश्वर झाक संयुक्त प्रयाससँ भेल छल । 'चेतना समिति'क स्थापना अध्यक्ष बाब नागार्जुन छलाह आ सचिव डॉ. सुरेश्वर झा । आइ ई संस्था मिथिलांचल तथा बिहारक कोन कथा जे सम्पूर्ण देशमे अपन प्रतिष्ठा स्थापित कऽ चुकल अछि ।

(5) बिहार सरकार द्वारा स्थापित पटनाक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् भोलाबाबूकेँ मैथिली तथा हिन्दीक अमूल्य सेवाक लेल 1976 ई. मे हुनका ताम्रपत्रसँ सम्मानित कय साहित्यकार—कल्याण-कोषसँ आजीवन तीन सए टाका मासिक वृत्ति देबाक स्वीकृति प्रदान कयलक ।

(6) 1977 ई. मे भोला बाबूकेँ लहेरिया सराय (दरभंगा)क 'संकल्पलोक' द्वारा मिथिला विभूति'क उपाधिसँ विभूषित कयल गेलनि ।

(7) 1978 मे भोलाबाबूकेँ मरणोपरान्त अखिल भारतीय मिथिलासंघ हुनक स्मृतिमे हुनक व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक पोथी प्रकाशित कयलक तथा हुनका ''मैथिलीक दधीचि'क उपाधिसँ अलंकृत कयलकनि । भोला बाबूक नामक संग ई अलंकरण बहुत लोकप्रिय भऽ गेल अछि ।

(8) 1996 ई. मे इलाहाबाद 'मिथिला सांस्कृतिक संगम' बाबू भोलालाल दासक स्मृतिमे एक वृहद समारोह आयोजित कय हुनकापर अपन पत्रिका 'प्रवासी'क विशेषांक प्रकाशित कयलक तथा हुनक व्यक्तित्व आ' कृतित्व पर एक राष्ट्रीय संगोष्टीक आयोजन सेहो कयलक । ओहि अवसर पर इलाहाबाद विकास प्राधिकारक तत्कालीन उपाध्यक्ष एवं 'मिथिला सांस्कृतिक संगम'क कार्यकारी अध्यक्ष श्री मनोज कुमार, आइ. ए. एस. भोलाबाबूक नामपर एक ट्रस्टक स्थापनाक घोषणा कयलनि तथा हुनका स्मृति मे एक भवन निर्माण करबाक निश्चय कयलनि । ट्रस्टक अध्यक्ष भोलाबाबूक सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद कर्णकेँ बनाओल गेलनि आ ट्रस्ट अपन कार्य आरम्भ कऽ देने अछि ।

संदर्भ-संकेत

1. संकल्पलोक, लहेरिया सराय द्वारा प्रकाशित स्मारिका, वर्ष 1977 ई. पृ. 11
2. स्मृति, पृ. 12, प्रकाशक-सांस्कृतिक समिति, मधेपुर (मधुबनी)
3. दिनेश्वरलाल आनन्द; व्यक्तित्व ओ कृतित्व; प्रकाशक-ऑल इंडिया मैथिल संघ, कलकत्ता; पृ. 12
4. मैथिलीक दधीचि : बाबू भोलालाल दास; प्रकाशक-कर्ण गोष्ठी, कलकत्ता; पृ. 52

स्वतंत्रता आन्दोलन एवं समाज सुधार

1917 ई. मे भोलाबाबू भागलपुरक तेजनारायण बनैली कॉलेजसँ स्नातक परीक्षा पास कयलनि । ओहि समय मे देश मे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन क्रमशः प्रखर भेल जारहल छलैक । भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनमे गांधीजीक प्रवेश भऽ चुकल छल आ ओहि वर्ष ओ लखनउ कांग्रेसक बाद चम्पारण सत्याग्रह प्रारम्भ कयने छलाह । चम्पारण सत्याग्रह सफल भेल । गांधीजीक चम्पारण यात्रा आ एतय हुनक कार्य बिहारमे नहि सम्पूर्ण भारतक इतिहासमे महत्व रखैत अछि । चम्पारणक गांधीजीक कार्य मूलतः मानवतावादी छल, आ संगहि राष्ट्रीयताक जागरण लेल अनुप्रेरक । एहिसँ पीड़ित आ सतायल किसानक मनमे जागरणक चेतना उदित भेलैक, जे कोनो राष्ट्रीय आन्दोलनक लेल एक आवश्यक शर्त होइछ । गांधीजीक शब्दमे;— "चम्पारण संघर्ष एहि बातक प्रमाण थिक जे कोनो क्षेत्र मे जनताक निःस्वार्थ सेवा देशक राजनीतिक दृष्टिसँ सहायता प्रदान करैत अछि ।"[1] तकर बाद 1920-21 ई. मे गांधीजीक नेतृत्वमे असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ भेल । देश भरिमे ओकील लोकनि अपन ओकालति छोड़लनि तथा छात्र समुदाय स्कूल, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयक बहिष्कार कयलनि । बाद मे छात्रलोकनिकेँ शिक्षा देबाक लेल देश भरिमे कतोक राष्ट्रीय विद्यालय, महाविद्यालय तथा विद्यापीठक स्थापना गांधीजीक नेतृत्व मे कराओल गेल । गांधीजी निश्चित रूपसँ बिहार मे एक गोट राष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करबाक पक्षमे छलाह ।

1921 ई. मे क 6 फरबरीकेँ गांधीजी पटनामे राष्ट्रीय महाविद्यालय तथा बिहार विद्यापीठक औपचारिक रूपसँ उद्घाटन कयलनि । विद्यापीठकेँ विश्वविद्यालयक दर्जा प्राप्त छलैक । बिहार विद्यापीठक कुलपति एवं उपकुलपति क्रमशः श्री मजहरुलहक एवं श्री ब्रजकिशोर प्रसाद बनाओल गेलाह । राष्ट्रीय महाविद्यालयक प्रधानाचार्यक पद पर श्री राजेन्द्र प्रसाद आसीन भेलाह । प्रध्यापक छलाह सर्वश्री बदरीनाथ वर्मा, जगन्नाथ प्रसाद, प्रेम सुन्दर बोस, राम चरित्र सिंह, अब्दुल बारी एवं जगत नारायण लाल ।

दरभंगाक सरस्वती एकेडमी तथा मुजफ्फरपुरक जी.वी.वी. कॉलेजिएट स्कूलकेँ राष्ट्रीय विद्यालयमे परिणत कऽ देल गेलैक । देशक प्रख्यात ओकील पं. मोतीलाल नेहरू, देश बन्धु चित्तरंजन दास, बल्लभ भाई पटेल, राजगोपालाचारी, आओर राजेन्द्र प्रसाद जी ओकालति पेशा छोड़ि देने छलाह । हुनका लोकनिक प्रेरणासँ दरभंगाक ओकील

ब्रजकिशोर प्रसाद अपन पेशासँ अलग भऽ गेलाह । पचीस वर्षक युवक सुभाषचन्द्र बोस इण्डियन सिविल सर्विससँ त्यागपत्र दऽ देलनि । राष्ट्रीय आन्दोलनक नेतावर्गमे अधिकांश व्यक्ति विधिवेत्ता छलाह ।

एहि पृष्ठभूमिमे युवक भोलालालदास अंत:करणसँ चाहैत छलाह जे ओकील बनि राष्ट्रीय आंदोलनसँ जुड़ि जाइ । भोलाबाबू सन ओजस्वी ओ प्रतिभावान युवककेँ गांधीजीक विचारधारासँ प्रभावित आ अनुप्राणित होयब स्वाभाविके छल । तेँ ओ विधिवेत्ता बनबाक तैयारी करय लगलाह । ओ कलकत्ताक रीपन लॉ कॉलेज मे नामांकन तँ करौलनि, मुदा आर्थिक समस्याक कारणे ओतय अधिक समय रहि नहि सकलाह, जेनाकि पूर्वमे कहि चुकल छी । बेतिया आबि ओतय राजहाइ स्कूल मे सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत भऽ गेलाह । मुदा कलकत्तामे जतबे दिन रहलाह ओही मे ओतय किछु विशिष्ट व्यक्तित्वसँ सम्पर्क आ परिचय भेलनि ।ओतय कुमार गंगानन्द सिंह तथा पं. बबुआजी मिश्र द्वारा कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति लेल चलाओल जारहल आन्दोलनसँ बहुत प्रभावित भेल छलाह । बेतिया राजस्कूल मे हिनका प्रधानाध्यापक बनेबाक निर्णय प्रबन्ध समिति लेने छल आ दोसर दिस गांधीजीक नेतृत्वमे असहयोग आन्दोलनक घोषणा भऽ गेलैक । भोलाबाबू स्कूलक नौकरी छोड़ि आन्दोलनमे सम्मिलित भऽ गेलाह तथा जहल चल गेलाह । जहलसँ मुक्त भेलाक बाद विभिन्न राष्ट्रीय विद्यालय सभमे अध्यापन कयलनि । ओहि समय इहो कार्य स्वतंत्रता आन्दोलनक एक प्रमुख अंग छल । मुदा भोलाबाबूकेँ ओकील बनबाक आकांक्षा बनले रहलनि । अवसर भटिते ओ 1923 ई.मे इलाहा4बाद विश्वविद्यालयक लॉ कॉलजमे नाम लिखा लेलनि । दू वर्षक बाद लॉ परीक्षामे पास भऽ फिरि अयलाह । ओतय डॉ. गंगानाथ झासँ परिचय भेलनि । 1924 ई. मे लहेरिया सराय (दरभंगा) मे ओकालति प्रारम्भ कयलनि ।

देश पुर्नजागरण (रेनासाँ) कालसँ गुजरि रहल छल । समस्त राष्ट्र में ओकील वर्ग जागृत भऽ रहल छलाह ओहि युग केँ ओकिल युग सेहो कहल जा सकैछ । महात्मा गांधी, सी. आर. दास, मोतीलाल नेहरू, इमाम बन्धु, डॉ. सच्चिदानन्द सिंहा, ब्रज किशोर प्रसाद, धरणीधर प्रसाद आ कतोक अन्य विख्यात ओकील लोकनि भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर प्रकाशमान भऽ चुकल छलाह । ओही समयमे मिथिलांचलक केन्द्र लहेरिया सरायक कोर्ट मे भोलाबाबूक एक ओकीलक रूपमे पदार्पण भेलनि ।

इलाहाबाद मे छात्रावस्थे मे भोलाबाबूकेँ दू गोट उपलब्धि भेलनि । एक तँ सामाजिक रूढ़िवादक खंडनार्थ प्रकाशित 'चान्द' नामक हिन्दी मासिक पत्रक अध्यक्ष एवं सम्पादक रामरख सिंह सहगलसँ धनिष्टता तथा दोसर मैथिली साहित्य ओ भाषा दिस विशेषरूपसँ आकर्षित होयब । भोलाबाबूक आगूक जीवनमे राष्ट्रीय आन्दोलनक अतिरिक्त जे दू गोट धारा प्रमुख रहलनि आ जाहि लेल ओ जीवन पर्यन्त समर्पित रहलाह ओ छल समाज सुधारक लेल संघर्ष तथा मैथिली भाषाक उन्नयनक लेल प्रयास । ओहि गांधी युग मे समाज

सुधारक कार्य तथा रचनात्मक कार्य स्वतन्त्रता संग्रामक अभिन्न अंगक रूपमे मानल जाइत छल । सामाजिक क्रांति तथा स्वावलम्बन कैं गांधीजी स्वतंत्रताक लेल अत्यन्त आवश्यक मैनैत छलाह । समाज मे पसरल कुरीति, रूढ़िवादिता, विषमता, अस्पृश्यता तथा अनेक प्रकारक अंधविश्वासकैं बिना जड़ि मूलसँ नष्ट कयने राजनीतिक स्वतंत्रतासँ कोनो लाभ नहि भऽ सकैछ से युग पुरुष गांधी जी मानैत छलाह ।

भोला बाबू एक दिस स्वातन्त्रय-आन्दोलन मे आकण्ठ डूबल रहलाह आ दोसर दिस सामाजिक सुधारक कार्य सेहो प्रारम्भ कयलनि । प्रारम्भ मे किछु दिन धरि लहेरिया सरायमे 'कायस्थ महासभा' मे सक्रिय भेलाह तथा संभावित जमींदारी प्रथाक समाप्त होयबाक कारणसँ कायस्थ समाजक भविष्य अंधकारपूर्ण होयबा आशंका छलैक । तकर निराकरणक लेल राज दरभंगाक दरबार मे दौड़ धूप कयलनि । राजदरभंगामे छोटसँ पैघ पद पर असंख्य कायस्थ लोकनि कार्यरत छलाह । जमींदारी उन्मूलन कांग्रेसक कार्यक्रमक प्रधान अंग छल । ओ भेलासँ कायस्थ लोकनिक समक्ष भुखमरी समस्या साकार रूपसँ ठाढ़ छल । भोलाबाबू एहि सामाजिक आसन्न परिस्थितिसँ विचलित छलाह । दोसर दिस ''ओकालतिक क्रम में स्त्री समाजक दुर्गति दूर करबाक विचारैं कतोक शौहरी एवं दोखतरी मोकदमा हाथ मे लय हुनको लोकनिक स्थिति सुधारार्थ यत्न'' कयलनि । ओहि सम्बन्धमे भोलाबाबू 'हिन्दू लॉ'क गंभीर अध्ययन आरम्भ कयलनि आ हिन्दीमे 'हिन्दू लॉ' नामक एक हजार पृष्ठक एक वृहत् ग्रन्थक रचना ओकरा धारावाहीक रूपमे इलाहाबाद 'चाँद' पत्रिका मे प्रकाशन प्रारम्भ कयलनि । ई ग्रन्थ 1925 ई. सँ 1930 धरि 'चाँद' मे स्थायी स्तम्भ 'हिन्दू लॉमे स्त्रियों के अधिकार' नामसँ प्रकाशित भेल ।

भोला बाबूक मनमे ई सिद्धान्त निश्चित भऽ गेल छलनि जे एक आदर्श समाजक स्थापना स्त्री वर्गमे व्याप्त अशिक्षा, बालविवाह, वृद्ध-विवाह, बहुविवाह, विभिन्न प्रकारक कुरीति, कुसंस्कार तथा अंध विश्वासकैं जाबत धरि समाप्त नहि कयल जायत, ताबत नहि भऽ सकैत अछि । समाजमे स्त्रीगणक जे शोषण भऽ रहल छलैक तकरो समाप्त करब आवश्यक छलैक । भोलाबाबू जाहि सिद्धांत ओ विचारकैं रखैत छलाह ओहिपर स्वयं चलबाक सेहो प्रण कयने छलाह । अपन पत्नीकैं, ओहि समयमे जखन कि स्त्री शिक्षाक समाज घोर विरोधी छल, मैट्रिक पास कराय एक गोट आदर्श स्थापित कयलनि । हिनक एहि कार्यसँ ओहि समयमे बहुतोलोक हिनकर विरोधी भऽ गेलथिन, मुदा संगहि दोसर दिस कतोक व्यक्ति हिनकासँ प्रेरणा ग्रहण कय स्त्री शिक्षाक दिस उन्मुख सेहो भेलाह । नारीक उन्नति एवं उद्धारक लेल भोला बाबू कतेक चिन्तित रहैत छलाह से हुनकर रचित 'कन्योन्नति' कविताक किछु पाँती मे देखल जासकैछ;—

''बिनु रखने समभाव पुत्र-पुत्रीमे सुन्दर ।
बिनु हटने भ्रमभाव बालिका शिक्षा दुस्तर ॥
बिनु शिक्षा कन्याक बधू औती की उत्तम ।

बिनु उत्तम बधू हैत शिशुक शिक्षा की उत्तम ॥
शिशु सुधार बिन हयत की किछु समाज उपकार कहू ।
छाड़ि दुराग्रह मूर्खता कन्योन्नति सुख मूल गहू ॥''

नारी शिक्षाक बिना समाजक विकास असंभव अछि । समाज व्यक्तिसँ बनैत अछि आ व्यक्ति तखनहि आदर्श नागरिक बनि सकैछ, जखन ओकरा उचित रूपसँ शिक्षित कयल जयतैक । व्यक्तिक शिक्षाक मूलमे नारी शिक्षाक आवश्यकता छैक । तँ भोलाबाबूक ई मानब ठीक छलनि जे सामाजिक उत्थान भारतक स्वतंत्रताक लेल आवश्यक अछि आ से तखनहि होयत जखन जनसंख्याक आधा भाग सेहो शिक्षित होयत । गांधीजीक राष्ट्रीय जागरणक अभिमानमे स्त्री शिक्षा, पर्दा प्रथाक समाप्ति, स्त्री-पुरुषक बीच समानता, अछूतोद्धार अस्पृश्यता निवारण इत्यादि प्रमुख कार्यक्रम छलनि । गांधीजीक मार्ग पर चलनिहार भोलाबाबू सेहो अपन समाज सुधारक कार्यमे एहि सभ बिन्दुपर अधिक सक्रिय भऽ गेल छलाह ।

भोलाबाबू मात्र नारी-शिक्षेक नहि, नारी-स्वतंत्रताक सेहो महान पक्षधर छलाह । नारी-स्वातंत्र्यक सम्बन्धमे भोलाबाबूक क्रिया कलापक चर्चा स्वयं हुनक पत्नीक शब्दमे द्रष्टव्य अछि;—

''आइ स्वतंत्रता सेनानीक रूपमे हम पेंशन प्राप्त कऽ रहल छी इहो तऽ हुनके देन थिकनि । हमर क्रान्ति प्रवृत्ति एवं स्वतंत्रता आन्दोलनमे भाग लेबाक आकांक्षाकेँ प्रोत्साहित कय हमरा एते धरि अवसर प्रदान कयलन्हि जे हम स्व. राजेन्द्र प्रसादक प्रत्यक्ष संगतिमे रहि मगन आश्रम मझौलिया (लहेरिया सराय निकट) सँ स्वतंत्रता संग्राम मे खुलि कऽ भागे टा नहि लेलहुँ, गोली, बन्दूक आ जेल पर्यन्तक सामना कयलहुँ । कतेको सभा-सम्मेलनमे मिथिला नारी आ ललना लोकनिक अग्रणी आसभानेत्री बनलहुँ ।''[२]

ओहि समय मे बहु विवाह, बाल विवाह, विवाह मे टाका गनायब, बेटी-बेचव आदि कुरीति मिथिलांचल मे पसरल छल । एहि कुरीति सबहक एक गोट प्रमुख केन्द्र सौराठ-सभा (मधुबनी लगमे) बनि गेल छल । भोला बाबू एहिसभ कुरीतिक विरोधमे शंख फुकलनि । स्वयं हुनकहि शब्द मे;—

''ई स्वर्ण-संयोग सौराठ-सभाक नहि भेटत । स्मरण राखी, यदि अहाँक उद्योगसँ एकटा निरपराध मैथिल कन्याक वध कोनो बूढ़क परिणय तमाशासँ निवृत्त भेलैक तँ ओछ गोहत्याक निवारणक फल भेल । यदि एको गोटाकेँ अहाँ व्यर्थ बहु विवाहसँ बचा सकलहुँ तँ देशक कतोक परिवारकेँ सुख-शान्ति देलौं । यदि अंगरेजी पाँजिक क्रमे नव-शिक्षित वर्गकेँ टाका लेबासँ रोकि सकलहुँ तँ अहाँ कतेक स्नेह लताकेँ बचाओल ।''[३]

ओनातँ सम्पूर्ण देशमे ई समस्या सुरसाक मुँह जकाँ बढ़ल जारहल अछि, मुदा मिथिलामे काटर आ दहेज लेबाक प्रथा अत्यंत दुरुह भऽ गेल छैक तथआ ओकरा समाप्त करब आजुक परिस्थितिमे असंभव जकाँ भऽ गेलैक अछि । मैथिल समाज मे विधवाक

स्थिति अत्यंत दारुण छैक ।.जँ ई स्थिति एखनहुँ भयावह छैक तखन भोलबाबूक समय मे ओकर स्थितिक अनुमान स्वत: लगाओल जा सकैछ । मिथिलाक रूढ़िवादी समाजकेँ विधवाक समस्याक प्रति संवेदनशील बनायब असंभव छल । बाबू भोलालाल दास विधवाक उद्धारक लेल वृद्ध विवाह तथ बाल-विवाहकेँ समाप्त करबाक लेल फाँढ़ बान्हि तत्पर भऽ गेलाह । एकरा समाप्तिसँ कम सँ कम विधवाक संख्यामे कमीतँ आनले जासकैत छलैक ।

नारी शिक्षाक संग-संग भोलाबाबू शिशु-शिक्षाक प्रति सेहो सचेष्ट छलाह । ओहि समयमे बालक-बालिकाकेँ प्रारम्भिक शिक्षा पारम्परिक रूपमे देलजाइत छलैक । मुदा भोला बाबू आधुनिक शिक्षाक पक्षधर छलाह । आधुनिक संसार मे पारम्परिक शिक्षाक कोनो लाभ नहि छलैक । एहि सभ बातकेँ ध्यानमे राखि शिशु-वर्गक हेतु भोलाबाबू अनेको पाठय-पुस्तकक रचना स्वयं कयलनि । ओहिमे सँ किछु पोथी शिशु-शिक्षाक हेतु सरकार द्वारा सेहो स्वीकृति कयल गेल ।

अपना देशमे समाज सुधारक लेल कतोक क्रांतिदर्शीक प्रादुर्भाव भेल अछि । मुदा ओहिमे सभक लेल अपन-अपन कर्म क्षेत्र निश्चित रहलनि । ईश्वर चन्द्र विद्यासागर विधवा विवाहक लेल कार्य कयलनि तँ महामना मालवीय जी आधुनिक शिक्षाक प्रसार ओ विकासक लेल बादमे अपन जीवनक समस्त क्रिया कलापकेँ केन्द्रित कऽ देलनि । डॉ. अम्बेदकर अछूतोद्धारक हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करैत रहलाह । यद्यपि बंगालक राजा राममोहन राय केँ समस्त भारतक रिनासाँक अग्रणी मानल जाइत अछि, मुदा ओ सतीप्रथाकेँ समाप्त करेबाक लेल आ ताहिमे सफलता प्राप्त करबाक हेतु सर्वाधिक चर्चित आ अर्चित भेलाह । परञ्च भोलाबाबूक कर्म क्षेत्र बहुआयामी छलनि । प्रत्येक समस्या पर अपन स्पष्ट एवं ठोस विचारक प्रचार कयलनि तथा निर्भीकतापूर्वक ओकर समाधानक हेतु संघर्ष करैत रहलाह । कोनो दोसर समाज सुधारकसँ हुनक तुलना करब हुनक बहुआयामी व्यक्तितवक उचित मूल्यांकन नहि होयत । वास्तवमे भोलालाल दास मिथिलांचल मे एकमात्र समाज सुधारक छलाह तथा सामाजिक कल्याणक हेतु हुनक अवदान अनन्त कालधरि अविस्मरणीय एवं प्रेरणाप्रद रहत ।

भोलाबाबू जीवन भरि अपन समाजकेँ ऊपर उठेबाक लेल चिंतनशील रहलाह । कुरीति, कुसंस्कार आदिकेँ समाप्त करबाक हेतु अपन तन मन धन सँ लागल रहलाह । अर्थाभावक कारणसँ अपन पारिवारिक जीवन कष्ट ओ अभाव मे बितैत छलनि । मुदा एहि क्रांतिद्रष्टाक मुखाकृति कहियो मलिन नहि भेलनि । हुनका सम्बन्धमे एतय आचार्य 'सुमन' जी द्वारा लिखलगेल भोलाबाबूक परिचयकेँ उद्धृत करबाक लोभक संवरण नहि कऽ पाबि रहल छी । 'सुमन'जीक शब्द छनि;—

''रंग श्याम, कदनाम, आकृति दूवर रहितहुँ, अभिराम दृष्टि, तेजस्वी स्वभाव, ओजस्वी स्वर ओलेखनी प्रखर रहितहुँ व्यवहारसँ मिलनसार, अंग दुर्बल ओ मनोबल

दबंग''— अल्पशब्दें भोला बाबूक ई अत्यन्त समीचीन परिचय अछि ।

महात्मागांधीक स्वदेशी आंदोलन स्वदेशी-वस्तुएक नहि, स्वदेशी भाषा-साहित्योक प्रति प्रीति आ अनुराग लोकमे जगौलक । भोला बाबू एही क्रममे स्वदेशी आंदोलनक एक अंगी रूपमे मैथ़िली भाषाक संरक्षण, पोषण आ सम्बर्धन करबाक अपन लक्ष्य स्थिर कयने छलाह आ ओकर प्राप्तिक हेतु जीवनक अन्तिम क्षण धरि संघर्षशील रहलाह । ओ मैथिलीकेँ अन्यान्य भारती-भाषाक समकक्ष ठाढ़ करबाक हेतु आजीवन यत्न करैत रहलाह तथा अपन रचनाक संग अन्यान्य कवि एवं लेखककेँ साहित्य रचना करबाक प्रेरणा ओ प्रोत्साहन दैत रहलाह ।

ऑल इण्डिया मैथिल संघ, कलकत्तासँ 1978 ई. मे प्रकाशित 'व्यक्तित्व ओ कृतित्व' मे रामलोचन ठाकुरक आलेख ''तोहर सरिस एक तोहेँ माधव . . . .'' सँ किछु वाक्यक उद्धरणसँ हम एहि अध्यायकेँ समाप्त करैत छी;—

''लाल ओ छलाह मिथिलाक । रत्नगर्माक गर्भसँ एकसँ एक अनेको लाल प्रसवित भेलए । भोलालाल ताइमे एक छलाह । नेनामे नानीक मुँहें परीकथा सुनबाक क्रममे कतेको खेप लालक चर्चा सुनने रही जे लाल अनमोल होइ छइ, बिड़ले पाओल जाइ छइ । परञ्च जिज्ञासा बनले छल । पैघ भेला सन्ताँ, बोध भेल जे सरिपहुँ लाल की होइत छइ । सरिपहुँ लालतँ अनमोल होइछइ—ओकर मोल के आंकि सकत ? भोलालाल जेँ हेतु लाल छलाह, हिनक मूल्यांकन असंभव । . . . . जखन मिथिलाक अकाशमे अज्ञानता, अवचेतना, कुसंस्कारक गहनतम अन्हार पसरल छल, 'भारती'क आरती सजा मां मैथिलीक अर्चना करैत ई ओहि अन्हारक देवारकेँ ढ़ाहि नव आलोक पसारने छलाह । नव चेतनाक स्वर झंकारसँ दिग-दिगन्त झंकृत केने छलाह । नवगीतक टाहि उठौने छलाह— आलस्यमे पड़ल मैथिलकेँ झिकझोरिकेँ जगओने छलाह । प्रातः कालीन प्राण वायु जकाँ लोकमे नव स्फूर्तिक संचार केने छलाह ।''

संदर्भ-संकेत

1. आत्मकथा; पृ. 508
2. कोशी कमला; कृष्णदेव झा;''क्रांतिद्रष्टा : भोलालाल दास''; उद्धत; पृ. 14
3. तत्रैव; पृ. 14-15
4. संकल्प, 1977, पृ. 14
5. तत्रैव

मैथिली भाषाक उत्थानक लेल संघर्ष

कोनो भाषाकेँ स्वतन्त्र सत्ताक लेल ओकर अपन लिपि होयब यदि अनिवार्य-नहि छैक तँ अत्यन्त आवश्यक तँ मानले जाइत छैक । ओना भारतक राष्ट्र भाषाक पद पर आसीन खड़ी बोली हिन्दीकेँ सेहो अपन लिपि नहि छैक । ओ भारतक प्राचीनतम भाषा संस्कृतक नागर लिपिकेँ अपना लेलक । परञ्च मैथिलीक संगंतँ दोसरे प्रकारक अन्याय भेल अछि । एकर तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर नागर लिपि छोड़ि भारतक अन्य कोनो लिपिसँ अधिक प्राचीन, वैज्ञानिक, लिखबा एवं सिखबामे सुलभ अछि । एहि लिपिमे मिथिलाक असंख्य पण्डित आ विद्वान लोकनिक द्वारा संस्कृत वाङ्मयक रचना भेल अछि । मिथिलाक विद्वानक प्रायः कोनो एहेन परिवार नहि होयत जतय मिथिलाक्षर मे हस्तलिखित संस्कृत शास्त्रक पाण्डुलिपि नहि होयत ! इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, फ्रांस आ भारतक सभ पैघ आ महत्वपूर्ण पुस्तकालय मे पाण्डुलिपिक शाखा विद्यमान अछि आ ओहिमे अधिकांश पाण्डुलिपि मिथलाक्षर मे पाओल जाइत अछि । हर प्रसाद शास्त्री मिथिलामे घरे-घरे घूमिकय मिथिलाक्षरमे लिखित पाण्डुलिपि एकत्रित कयने रहथि । काठमांडूक राज्य पुस्तकालयमे नेपाल ओ मिथिलामे लिखित प्राचीन मैथिली साहित्यक अपार निधि मिथिलाक्षरमे लिखल सुरक्षित अछि । एखनो मिथिलांचल मे विद्वान परिवारक नेनालोकनिक अक्षरारम्भ तिरहुता मे होइत अछि तथा शुभ-अशुभ अवसर पर निमन्त्रण-पत्र जकरा 'पाता' कहल जाइछ तिरहुते मे लिखल जाइत अछि । वैवाहिक संबंधक अवसर पर आइयो पञ्जीकार लोकनि 'सिद्धांत' मिथिलाक्षरेमे लिखैत छथि । ओतबे नहि विभिन्न विश्वविद्यालयक मैथिलीक कतोक स्नातकोत्तर छात्र एखनहुँ अपना परीक्षामे उत्तर पुस्तिका मिथिलाक्षर मे लिखैत छथि । मुदा दुर्भाग्य अछि जे आरम्भसँ एहि दिस प्रयास नहि कयल जयबाक कारणेँ आ उच्च स्तर पर सरंक्षणक अभावमे मैथिली पुस्तक नागरी लिपिमे छपैत अछि ।

बाबू भोलालाल दासक अक्षरारम्भ-सेहो मिथिलाक्षरमे भेल छलनि, मुदा प्राथमिक पाठशालामे जखन पढ़बा लेल गेलाह तँ ओहिठाम अपन मातृभाषाक चर्चमात्रो देखबामे नहि अयलनि । जाहि प्रकारख भाषाक माध्यम सँ पढ़ाओल जाय लगलनि से सब प्रकारेँ अनचिन्हार तथा सिखबामे दुरुह प्रतीत भेलनि । ओहि समय मे दरभंगा महाराजक द्वारा स्थापित जातीय संस्था मैथिल महासभाक एक अधिवेशन सुपौल मे भेलैक । ओहिमे भोलाबाबू मधेपुरा हाई स्कूलसँ एक स्वयं सेवकक रूपमे सम्मिलित भेल छलाह । ओहू

अधिवेशनमे मिथिलाक्षरक कतहु दर्शन नहि भेलनि, यद्यपि ओकर समस्त कार्यवाही मैथिली भाषामे भेलैक । जखन स्वयं मिथिलाक महाराजोमैथिली भाषाक उत्थानक लेल संघर्ष / ३४ मिथिलाक्षरक रक्षा नहि कयलनि तखन साधारण लोकक कथे कोन ! ई तथ्यतँ निर्विवाद अछि जे मिथिलाक्षरक उपेक्षा आ ताहिजन्य ओकर ह्रासँ मैथिली भाषाक बहुत पैघ हानि भेलैक ।

एकरो सबूत भेटैत अछि जे बीसम शताब्दीक प्रारम्भकालहिसँ मैथिली भाषाक उत्थानक लेल किछु गेटे प्रयत्नशील भऽ गेल छलाह । मुदा भाषाकेँ संरक्षित करबाक चेतना किछुये वर्गमे आयल छल । दुखक विषय ई जे जाहि तरहें भाषाक विकासक लेल किछुओ गोटे चिन्तनशील भेल छलाह, ओतबे गोटे यदि भाषाक संग-संग अपन लिपिक संरक्षण ओ प्रचार-प्रसार पर ध्यान देने रहितथितँ मिथिलाक्षर जीवंत लिपि आइरहिते तथा ककरो ई कहबाक साहस नहि होइतैक जे मैथिली कोनो दोसर भाषाक बोली (उपभाषा) थिक । यद्यपि ई बात हस्यापद अछि जे बिना स्वतंत्र लिपि रहने कोनो भाषा पूर्ण भाषा नहि भऽ सकैछ । पूर्वमे कहनै छी जे स्वयं खड़ी बोली हिन्दीकेँ अपन कोनो स्वतंत्र लिपि नहि छैक ।

एहि पृष्ठभूमिमे भोला बाबू मिथिलाक्षरक उद्धार तथा संरक्षण करबाक लेल छटपटा रहल छलाह । 'श्री मैथिली' मासिक पत्रिकाक पाँचम अंकमे प्रकाशित एक समाचारक अनुसार 6 जून 1925 ई. कैं मिथिलाक्षरक पुनरुद्धारक लेल एक समितिक संघटन भेल-छल । ओहि समितिमे पं. जीवनाथराय संयोजक छलाह तथा पण्डित बलदेव मिश्र, आचार्य रामलोचन शरण, ओकील पं. गंगाधर मिश्र. मधुबनीक मुख्तार हरिवंश झा, रायबहादुर सिद्धिनाथ मिश्र तथा 'श्री मैथिली'क सम्पादक उदित नारायण दास सदस्य मनोनीत भेलाह । भोला बाबूकेँ ओहि समितिक सदस्य नहि बनाओल गेलनि । हुनका ओकालति पेशामे दरभंगा अयना थोड़बे दिन भेल रहनि आ दोसर, ओ मैथिलीक सेवामे सक्रिय छलाह ताहि सम्बन्धमे चर्चित नहि भेल छलाह । अपना समाज मे इहो एक प्राचीन परम्परा अछि जे कोनो समिति मे सदस्य अथवा पदाधिकारी कार्य केनिहारकेँ नहि, अपितु गहना पहिरनहार व्यक्तिकेँ बनाओल जाइत छैक । फलस्वरूप ओहेन समिति अथवा संस्थाक कार्य आगू नहि बढ़ि पबैत छैक । परञ्च उक्त समितिक गठनसँ भोला बाबूकेँ अत्यन्त प्रसन्नता भेलनि । ओहि समिति मे आचार्य रामलोचन शरण तत्काल एक हजार टाका देलथिन तथा मिथिलाक्षरक संरक्षणार्थ कार्यक लेल समस्त खर्च वहन करबाक वचन सेहो देलथिन । जेना-तेना मिथिलाक्षरक 'टाइप' बनबाओल गेलैक । सभसँ पहिने भोलाबाबू मैथिली पत्रिका 'मिथिला'क एगारहम अंकसँ अपन सम्पादकीय मिथिलाक्षरमे प्रकाशित करय लगलाह । ओहि अंकसँ रचना, स्तंभ आदिक शीर्षक मिथिलाक्षर मे देल जाय लगलैक । ओना आइयो मैथिली पत्र-पत्रिकाक मुख पृष्ठक नाम आदि मिथिलाक्षरमे छपबाक परम्परा चलि रहल अछि । परञ्च एहिसभसँ 'ऊँटक मुँह मे जीरक फोरन' जकाँ मिथिलाक्षरक स्तित्वक रक्षाक ओरिआओन नहि भऽ सकैच्छ ।

मैथिली भाषा

ई ज्ञातव्य थिक जे भोलाबाबूकेँ छात्रावस्थेसँ हिन्दी भाषाक प्रति अपार रूचि रहनि । ओहि समय मे ओ राष्ट्र भाषा एवं मातृभाषाक महत्व पृथक-पृथक की छैक ताहि विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार नहि कयने छलाह । उत्साही लेखकक रूपमे ओ हिन्दी मे प्रवेश कयने रहथि । ओहि समयमे हिन्दीक प्रति हिनक एकांगी प्रेम छलनि । जाहि अवधिमे भोलाबाबू नया गाँव, सिरजापुर मे अध्यापन करैत छलाह, ताही समयमे 1914 ई. मे बड़गाम मे सरस्वती पुस्तकालयक वार्षिकोत्सव बड़ धूम-धामसँ मनाओल गेलैक । प्रथम शिक्षकक पदपर कार्यरत रहबाक कारणे हिनको ओहिमे भागलेबाक लेल नियंत्रण-पत्र पठाओल गेल छलनि । भोलाबाबू कोनो दोसर कार्य मे व्यस्त रहबाक कारणसँ स्वयं तँ उपस्थित नहि भऽ सकलाह, मुदा अपन एक लेख पठा देने छलथिन । ककरो द्वारा ओ लेख पढ़ाओल गेलैक । ओहि निबन्धमे भोला बाबू हिन्दीक प्रबल समर्थन आ मैथिलीक प्रति अनादर भाव प्रदर्शित कयने छलाह । भाव छलैक जे हिन्दीक समक्ष मैथिलीक उत्थानक प्रयास आब ओहने हास्यास्पद लगैछ जेना काछुक चालिसँ चलनिहार रेलगाड़ीकेँ पछुअयबाक प्रयास करे । ओहि समारोहक अध्यक्ष छलाह भागलपुरक विख्यात ओकील आ नेता जगधर प्रसाद, जे स्वयं हिन्दीक कट्टर समर्थक । हुनका ई लेख बहुत रुचिगर लगलनि । मैथिलीक प्रति अनादर सूचक निबन्ध यदि कोनो मैथिली भाषीक कलमसँ लिखत गेल हो तँ हिन्दीक समर्थकक छाती किएक ने फुलतनि ।

संयोगसँ मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा साहित्य-रत्नाकरक उपाधिसँ अलंकृत मुंशी रगुनन्दनदास ओहि समारोहमे उपस्थित छलाह । ओ उक्त निबन्धक लेखकक नाम जानि विस्मित भेलाह । भोला बाबूक ठेकानापता लय हुनका विस्तारपूर्वक एक पत्र लिखलथिन । ओहिमे मैथिलीक प्रति हुनक भ्रांतिक निराकरण करैत अन्त मे व्यंग करैत लिखलथिन जे बाड़ीक पटुआ तीत होइत छैक । कहल जाइछ जे मुंशीजीक ई पत्र बड़ लाभदायक सिद्ध भेल । भोलाबाबू पर ओहि पत्रक अत्यन्त अधिक प्रभाव पड़लनि आ ओहि समयसँ ओ मैथिलीक पैघ संरक्षक, संपोषक तथा सम्बर्द्धक भऽ गेलाह । बादमे मात्र मैथिली भाषाक उत्थानक लेल संघर्षशील बनि गेलाह । एहि सम्बन्ध मे भोला बाबू स्वयं लिखैत छथि;—

"ओ पत्र वस्तुत: मृत शरीर मे जेना नवजीवनक संचार कऽ देलक ओ उत्तर मे अपन अपराधकेँ स्वीकार करैत भविष्य मे योग्यतानुसार राष्ट्रभाषा हिन्दीक संग मातृभाषा मैथिलीहुक सेवाक प्रतिज्ञा कैलियन्हि ।" [1]

एहिपत्रक भोलाबाबू पर तेहेन प्रभाव पड़लनि जे ओहि दिनसँ मुंशी रघुनन्दनदासकेँ एहि विषयमे अपन दीक्षागुरु मानैत रहलथिन । आगाँ आबि कऽ भोलाबाबू जे अपनाकेँ मैथिली भाषाक सेवामे समर्पित कऽ देलनि ताहिमे ई पत्रहुनक प्रथम आ मुख्य प्रेरक तत्त्व कहल जासकैत अछि । भोला बाबू पुन: कहैत छथि;—

"हुनका प्रति एहि प्रकारक निष्ठा कोनो भावुकताक परिणाम नहि छल, अपितु एक

ठोस आधारशिला पर प्रतिष्ठित भेल जकरा प्रसादेँ कोनहु संघर्ष वा विवाद मे केहनो प्रतिपक्षीकेँ अपनासँ अधिक मानबाक विवशता नहि आयल ।'[२]

भोलाबाबू मैथिलीक उद्धार करबाक लेल जीवनमे जे संकल्पित भेलाह, ताहिमे उपर्युक्त प्रेरक तत्त्वक अतिरिक्त अन्यान्यो प्रेरक तत्त्व सभ सहयोगी भेलनि । संयोग एहेन भेलैक जे 1917 ई. मे जखन भोलाबाबू कलकत्ताक रीपन कॉलेजमे किछु मासधरि लॉ पढ़ैत छलाह, ताही समयमे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ मान्यता प्रदान करबाक मार्ग प्रशस्त भेल रहैक । ओहि समयमे कलकत्ता विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति सर आशुतोष मुखर्जी छलाह । मुखर्जी साहेब कलकत्ता विश्वविद्यालयक गरिमाकेँ बढ़ेबाक लेल देशक विभिन्न क्षेत्रीय भाषा सबकेँ एम. ए. कक्षाधरि पढ़ेबाक प्रस्ताव रखलनि । तदनुसार हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयालम, उर्दू, पोश्तु, मराठी, उड़िया आदि चौदह गोट भाषाक पाठ्यक्रम उपस्थित कयल गेल । बंगालक तत्कालीन गवर्नर जे विश्वविद्यालयक कुलधिपति छलाह से एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार कऽ लेलनि तथा विभिन्न भाषाक हेतु अपेक्षित राशिक आवंटन सेहो कऽ देल गेलैक । दुर्भाग्यवश ओहि भाषा-सूचीमे मैथिली सम्मिलित नहि भऽ सकलैक ।

ओहि समयमे कलकत्तामे मिथिलाक दू गोट वरद् पुत्र श्री ब्रजमोहन ठाकुर एवं कोइलख (मधुबनी) ग्रामवासी पण्डित बबुआजी मिश्र रहैत छलाह । पं. मिश्रजी कलकत्ता विश्वविद्यालय मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृत विभागक(ज्योतिष) व्याख्याता छलाह । ई दुनू महापुरुष एके संग एके कोठरी मे रहैत छलाह । ई दुनू गोटे श्री आशुतोष मुखर्जीक भेट कय मैथिली भाषाक सम्बन्धमे तर्क उपस्थित कऽ चौदह गोट भाषाक सूची मे मैथिलीकेँ सेहो सम्मिलित करबाक प्रार्थना कयलथिन । हुनका कहल गेलनि जे मैथिली आ बंगला भाषा तथा लिपि मे ततेक सानिध्य अछि जे बहुत दिन धरि महाकवि विद्यापतिकेँ बंगलाक कवि मानल जाइत छलनि । विद्वान लोकनि स्वयं शोधक आधार पर निर्णय देलनि जे विद्यापति मैथिलीक कवि छलाह । सर आशुतोष मुखर्जी तत्क्षण श्री ठाकुर एवं पं. मिश्रक समक्ष एहि त्रुटिक लेल खेद प्रकट करय लगलाह । ओकहलथिन जे विश्वविद्यालयमे एम.ए. डिग्री धरि मैथिली भाषाकेँ मान्यता भेटबामे कोनो आपत्ति नहि होयबाक चाही, मुदा तत्काल एक कठिनाइ अछि जे विश्वविद्यालयमे भाषा सभक विस्तार करबाक मदमे जे राशिक आवंटन बजेटमे छलैक तकर बँटबारा विभिन्न भाषाक मदमे भऽ चुकल छैक । आब मैथिलीकेँ स्वीकृति प्रदान करबाक बाद ओहिलेल वित्तीय व्यवस्था नहि भऽ सक तैक । एहि बाधाकेँ जनबैत सर आशुतोष कहलथिन जे यदि अढ़ाइ हजार टाकाक कोनो व्यवस्था भऽ जाइक तँ शिक्षा काउंसिलक अग्रिम बैसार मे मैथिली भाषाक समावेश करबामे ओ समर्थ होयताह ।

श्री ब्रजमोहन ठाकुर एवं पं. बबुआजी मिश्रक परिश्रमसँ पुर्निया़ँक श्रीनगर इस्टेटक तत्कालीन राजा श्री कालिकानन्द सिंह अढ़ाइ हजार कोन कथा जे साढ़े सात हजार टाका

देब स्वीकार कऽ ओकर नाम बनैली चेयर रखबाक प्रस्ताव रखलनि । एहि तरहेँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे 1918 ई. मे मैथिलीकेँ विधिवत् मान्यता विश्वविद्यालय स्तर भेटि गेलैक । एहि यज्ञमे भोलाबाबूक सहयोगितातँ नहि भऽ सकलनि, मुदा कलकत्ताक छोट प्रवास मे हुनका पं. बबुआजी मिश्र सँ परिचय भऽ गेल रहनि तथा हुनका लोकनिक प्रयास आ सफलतासँ प्रेरणा ग्रहण कय ओ मैथिलांकेँ पटना विश्वविद्यालयमे स्वीकृति दियेबाक लेल प्रयास करबाक हेतु कृत संकल्प भऽ गेलाह । बादमे मैथिलीक उत्थान मे लागल किछु अन्य महापुरुषक प्रयाससँ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे सेहो मैथिलीकेँ मान्यता भेटि गेलैक ।

कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ स्वीकृति भेलाक बादे कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ पटना विश्वविद्यालय फराक भेलैक । तेँ उचित तँ ई छलैक जे एतहु मैथिलीकेँ आनायासे स्वीकृति भाषावर्ग मे राखल जइतैक । से भेलासंतोँ पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक लेल कोनो आंदोलन अथवा संघर्ष नहि करय पड़ितैक । दुर्भाग्यपूर्ण स्थितितँ ई छल जे जखन पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक मान्यताक प्रश्न उपस्थित भेलैक तँ ओहिमे विरोध तथा कतोक संकट उपस्थित भेलैक । अपनहि घरमे अपन भाषाक विरोध सर्वथा एक असामान्य घटना छल ।

भोला बाबू पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक सम्बन्धमे अपन जे संस्मरण लिखने छथि, तकर अध्ययनसँ स्पष्ट बोध होइत अछि जे एहि कार्य मे हुनका बहुत संघर्ष करय पड़लनि । 1925 ई. मे पटना विश्वविद्यालयमे जखन एक बंगाली सदस्य मैथिलीक स्वीकृतिक लेल प्रस्ताव रखलनि तँ एक मैथिली भाषी डॉ. जनार्दन मिश्र ओकर विरोध कयलथिन आ तखन ओ प्रस्ताव स्थगित भऽ गेल । समाचार पत्र आदि मे ओहि समय मे मैथिलीक स्थिति एहेन छलैक जे बिहारक कोनो अडरेजी अथवा हिन्दीक पत्र मैथिलीक पक्षमे कोनो लेख अथवा समाचार छपबाक साहस नहि करैत छल । 1924 ई. मे इलाहाबादसँ एल. एल. बी. क परीक्षा पास कय दरभंगा कोर्ट मे भोलाबाबू ओकालति प्रारम्भ कयने छलाह । ओहि समय मे संयोगसँ लहेरिया सरायसँ ''श्री मैथिली'' मासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारम्भ भऽ गेल छलैक । ओकर सम्पादक तथा सहायक सम्पादन दुनू गोटे भोलाबाबूक अपन लोक छलथिन । ''श्री मैथिली''क प्रकाशनसँ भोलाबाबूकेँ अपन हृदय मे उठल विचारकेँ व्यक्त करबाक एक माध्यम भेटि गेल छलनि । मुदा दुर्योगसँ प्रधान सम्पादक उदित नारायण लाल दासकेँ अस्वस्थ भऽ गेलाक कारणे ''श्री मैथिली''क प्रकाशन अधिक दिन नहि चलि सकल । ''श्री मैथिली''क सम्पर्क मे अयलासँ भोलाबाबूकेँ आचार्य रामलोचन शरणसँ परिचय भऽ गेल छलनि । ओहि समयमे काशीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद' सेहो बन्द भऽ गेल छलैक । तेँ रामलोचन शरणक विचार रहनि जे हुनक प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था 'पुस्तक भण्डार' सँ कोनो मैथिली मासिक पत्र प्रकाशित हुए । पं. कुशेश्वर कुमर सम्पादन मे निःशुल्क सहयोग देबाक वचन देलथिन । एहि तरहेँ

'मिथिला' नामक पत्रक प्रकाशन प्रारम्भ भेल । वस्तुत: एहीठामसँ भोला बाबूक मैथिलीक लेल आंदोलनक अभियान प्रारम्भ होइत अछि । भोला बाबू स्वयं लिखैत छथि जे ''हमर यदि अधिकार रहैत तँ 'मिथिला' मे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न छोड़ि आन किछु लिखले नहि जाइत ।'' 1929 ई.सँ रामलोचन शरणक संरक्षकत्वमे 'मिथिला'क प्रकाशन आरम्भ भेल छल । पं. कुशेश्वर कुमर ओ बाबूभोलालाल दास ओकर संयुक्त सम्पादक बनलाह ।

पं. कुशेश्वर कुमर एहि पत्रक नीतिकेँ स्पष्ट करैत निम्नलिखित आदर्श वाक्या लिखने छलाह;—

''वादी प्रतिवादी दुनुक हम खण्डन मण्डन छापब
उचित दोष-गुण जे क्यो लिखताह नहि तकराहम झाँपब ।
कुमर पुरातन नीति निरत छथि, दास नवीन समाजी
अछि आशा दुनू दुनूकेँ सब विधि रखता राजी ।''

एहि आदर्शवाक्यक व्याख्या प्रस्तुत करैत आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' लिखैत छथि;—

''पुरातन छलाह ज्योतिर्विद वरिष्ट सम्पादक पं. कुशेश्वर कुमर जनिक नीति-निलयक रचना सनातनी विचार-धारा प्रवाहित करैत छल । समाजी अर्थात् तत्कालीन सुधारवादी तथाकथित आर्यसमाजी विचार निर्झरकेँ प्रवहमान रखनिहार कनिष्ठ रहितहुँ गरिष्ठ अपर संम्पादक बाबू भोलालाल दास जे समाजक जड़ताकेँ नव चेतनासँ चूर-चूर करबाक तरस्विता नेने आयल छला ।''

भोलाबाबूक चरम लक्ष्य छलनि पटना विश्वविद्यालय तथा बिहारक शिक्षा विभाग द्वारा मैथिलीकेँ स्वीकृति प्रदान करायब । ताहिलेल तत्काल कोनो साहित्यिक संघर्षशील मंचक आवश्यकता छलनि । अतएब मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापनाक दिशामे ओ सचेष्ट भऽ गेलाह । संयोगवश 1913 ई. क मैथिल महासभाक अधिवेशन दरभंगामे आयोजित भेलैक । आयोजक छलाह पं. नागेश्वर मिश्र एडवोकेट । एक नवीन सहित्यिक संस्थाक स्थापना करबाक इच्छा हुनको छलनि । पं. शशि नाथ चौधरी तथा राजदरभंगाक प्रभावशाली सर्कल मैनेजर पं. काशी मिश्र सेहो एहि प्रयासमे लागल छलाह । फलस्वरूप 5 अप्रैल 1931 ई. कैं दरभंगामे मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापना भेलैक तथा ओहिमे मैथिली-स्वीकृतिक प्रस्ताव सर्वसम्मतिसँ पारित कय पटना विश्वविद्यालय तथा शिक्षा विभाग मे पठेबाक निश्चय भेलैक । पं. शशिनाथ चौधरी प्रधान मंत्री तथा भोलालाल दास संयुक्त मंत्री नियुक्त भेलाह ।

एहि तरहेँ भोलाबाबूकेँ मैथिली आन्दोलन लेल एक स्वतंत्र मंच प्राप्त भऽ गेलनि । हिनक लगनशीलता एवं कर्मठताक फलस्वरूप मैथिली साहित्य परिषदक अग्रिम अधिवेशनमे 1932 ई. मे भोलाबाबू ओकर प्रधान मंत्री नियुक्त भऽ गेलाह । भोलाबाबू जखन प्रधान मंत्री निर्वाचित भऽ गेलाह तखनसँ आन सभ कार्यकेँ छोड़ि एकमात्र मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्नकेँ लक्ष्यमे राखि जूझय लगलाह । 1932 ई. मे तिरहुत प्रमंडलक तत्कालीन शिक्षा उपनिदेशक आ पछाति शिक्षा निदेशक (डी.पी. आइ.) गोरखनाथ सिंह, जे स्वयं भोजपुरी

भाषी छलाह, तथा पटना विश्वविद्यालयक भाइस चांसलर फोकस साहेब (G.E. Focus) दरभंगा आबयवला रहथि । दरभंगा जिलाक इंस्पेक्टर एक मुसलमान रहथि । ओहो संग छलथिन । हुनका सभसँ परिषद् दिससँ एक शिष्ट मंडलकेँ भेट करबाक विषयमे समय ओ स्थानक निश्चय भऽ गेल छलैक । ताहि अनुसारेँ पं. गंगाधार मिश्र, एटवोकेट, नागेश्वर मिश्र, एटवोकेट आदि तीन-चारि व्यक्तिक संग भोलाबाबू हुनकालोकनिसँ लहेरिया सरायक 'सर्किट हाउस' मे भेट कयलथिन । ओहि शिष्टमंडलमे तय रहैक जे मैथिलीक सम्बन्धमे तर्क-वितर्क प्रस्तुत करबाक कार्य भोलाबाबूकेँ करय पड़तनि ।

भोला बाबू द्वारा उपस्थित सभ तर्क कैँ भोजपुरी भाषी गोरखनाथ सरकारी आँकड़ाक प्रतिकूल खण्डन करैत रहलाह । फोकस साहेब चुपचाप खण्डन-मण्डनकेँ सुनैत रहलाह। जखन इंस्पेक्टरसँ पुछलथिन जे ई भाषा सर्वसाधारण द्वारा बाजल जाइत अछि अथवा ई खास जातिक भाषाथिक । तँ मुसलमान रहितहुँ इंस्पेक्टर निष्पक्ष भावसँ कहलथिन जे एहि क्षेत्रक मुसलमान पर्यन्त इएह बजैत अछि । मुदा तैयो गोरखनाथ सिंह एहि विषयमे पाछू उत्तर देबाक बहाना बनाय ओकरा टारि देलनि । बादमे एक शर्त लगौलनि जे जाधरि विश्वविद्यालयमे मैथिलीकेँ वर्नाकुलर रूपमे उच्चकक्षाक हेतु स्वीकृति नहि होयत, ताधरि बिहारक शिक्षा विभाग मैथिलीकेँ मान्यता नहि दऽ सकैत अछि । तखनसँ भोला बाबू मैथिलीकेँ पहिने पटना विश्वविद्यालयमे स्वीकृति करयबाक प्रयासमे लागि गेलाह ।

1933 ई. मे तत्कालीन वाइस चान्सलर फोकस साहेब एक गोट उपसमिति गठित कयलनि, जाहिमे अन्य सदस्यक अतिरिक्त एक गोट मैथिली भाषी सदस्य डॉ. जर्नादन मिश्र सेहो छलाह । एहि उपसमितिक सम्बन्धमे भोला बाबू अपन संस्मरण मे लिखैत छथि;—

"हम आ श्री नरेन्द्र नाथ दास एहि समितिक केवल एक सदस्य पूर्वोक्त डॉ. जर्नादन मिश्रकेँ छोड़ि आन सभ सदस्य कैँ कहुना अनुनय विनय द्वारा अपना पक्षमे अनबो कयलहुँ एवं स्वीकृतिकेँ निश्चिते जकाँ बुझै लगलहुँ मुदा अन्तमे ओही एक व्यक्तिक षड़यंत्र वा प्रेरणासँ जेहो सभ पक्षमे भेल छलाह, सेहो सब विपक्षी भए स्वीकृतिक पक्षकेँ अस्वीकृत कय देलन्हि । तैँ ई कमिटी अपन अन्याय एवं पक्षपातपूर्ण रिपोर्ट वा निर्णय दए देलक जाहि पर स्वीकृतिक प्रश्नकेँ 1933क सिनेट अस्वीकृत कए देलक ।"

भोलाबाबू तथा 'विद्यापति काव्यालोक'क प्रख्यात लेखक एवं बादमे बिहार विधान सभाक सदस्य नरेन्द्र नाथ दास एहि कमिटीक आन सभ सदस्यकेँ अपना पक्षमे कऽ लेने छलाह आ बुझैत छलैह जे असगर डॉ. जर्नादन मिश्र किछु नहि बिगाड़िसकताह मुदा जर्नादन मिश्र बी. एन. कॉलेजसँ हटि पटना कॉलेजक दरभंगा महाराज द्वारा स्थापित मैथिली चेयरक संचालक बनि आओर अधिक प्रभावकसंग मैथिलीकेँ पटना विश्वविद्यालयमे प्रवेश नहि करय देबामे सफल भऽ गेलाह । मैथिलीक घोर विरोधी मैथिलीक चेयर पर आबि कय बैसि गेलाह ! आतवे नहि, बादमे 1974 ई.मे चेतना समिति विद्यापति पर्वसमारोहक आयोजन एही डॉ. जर्नादन मिश्रक अध्यक्षतामे सम्पन्न कयलक । भोलाबाबू एकर प्रतिक्रिया

स्वरूप लिखलनि;— ''की इनारमे तँने भांग खसिपड़लैक !''

ओहि समयमे मैथिलीक कोनो पत्र-पत्रिका नहि रहने स्थिति आओरो भयावह छल। एक मात्र 'मिथिला मिहिर' छल ताहूमे हिन्दी एक प्रधानता छलैक । जनसाधारणक कोन कथा जे बुद्धिजीवी वर्गोधरि मैथिलीक समस्या आ ओकर समाधानक विषयमे सूचना एवं विचार पहुँचायब असंभव छल । भोला बाबू लिखैत छथि;—

''परिषद अपन 16-12-34 स्थायी समितिक अधिवेशन मे एकर घोर प्रतिवाद करैत एक 'अपील' नामक पुस्तिका अंगरेजी मे छपाय सर्वत्र वितरित कैलक । ताहिसँ पूर्वहु एक पुस्तिका अडरेजिये मे 'केस ऑफ मैथिली बिफोर पटना युनिवर्सीटी ' नामे छपौने छल जकरा ऊपर कमिटी वा सिनेट दृष्टिपातो नहि कैलक ।'[२]

मैथिली साहित्य परिषद् विश्वविद्यालयक एहि प्रकारक स्वेच्छाचारितासँ मर्माहत भेल आ ताहू मे सभसँ अधिक क्षोभ भेलनि ओकर प्रधानमंत्री भोलाबाबूकेँ । ओ अपन संकल्पकेँ आओरो अधिक दृढ़ कयलनि । ओ निश्चय कयलनि जे संघर्ष कतबो दिन चलओ, परिषद् बिना स्वीकृति प्राप्त कयने विराम नहि लेत । एही लक्ष्यकेँ समक्ष राखि भोलाबाबू भविष्यक अपन योजना बनौलनि । परिषद्क तेसर अधिवेशन 1933 ई. मे घोघरडीहासँ संघर्षकेँ अधिक तीव्र कयल गेल । घोघरडीहा धरि मैथिली साहित्य परिषद्क अधिवेशन मैथिल महासभाक संगहि होइत छल । घोघरडीहा अधिवेशनक लेल म.म. डॉ. उमेशमिश्र अध्यक्ष मनोनीत छलाह । मैथिलीक विरोधी तत्त्व एकरा स्वतंत्र भाषाक रूपमे मान्यता नहि देबाक लेल जीजानसँ लागल छल । तँ भोलाबाबू मनोनीत विद्वान अध्यक्षकेँ अपन अध्यक्षीय भाषणमे विरोधीक तर्ककेँ खण्डित करबाक लेल विशेष रूपसँ अनुरोध कयने छलथिन । पटना विश्वविद्यालय सिनेट मे उप-समिति द्वारा जे रिपोर्ट देल गेल छलैक, ताहिमे मैथिलीक सम्बन्धमे कहल गेल छलैक जे इहो मगही आ भोजपुरी जकाँ हिन्दीक एक बोली थिक । तँ मैथिलीकेँ मान्यता देला सन्ताँ एक दिस प्रान्तीय एकतामे बाधा उपस्थित होयत तँ दोसर दिस विश्वविद्यालयक व्ययभार अनावश्यक रूपसँ बढ़ि जायत । मैथिली पर चारू कात सँ जे अन्यायपूर्ण तथा बिना बुझने-सुझने आक्रमण होइत छल, तकरा निरस्त करबाक लेल म.म. डॉ. उमेश मिश्रक अध्यक्षीय भाषणमे जे छपल अछि, ताहिमे आधुनिक भारतीय भाषा सबहिक विकासमे मैथिलीक स्थान, मैथिली भाषाक सीमा, बजनिहारक संख्या, मैथिली साहित्यक गौरवशाली प्राचीन परम्परा, मैथिलीमे विद्यमान अपार साहित्य, मैथिलीक स्वतंत्र लिपि आदिक विस्तारसँ व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि । ई तँ अवश्ये जे डॉ. मिश्र उक्त भाषण केँ बहुत परिश्रम एवं गहन अध्ययनसँ तैयार कयने होयताह, मुदा ओकर पाछू प्रेरक भोलाबाबू छलाह, से स्पष्ट बूझि पड़ैत अछि ।

घोघरडीहा अधिवेशनक बाद मैथिली साहित्य परिषद्केँ संकुचित सिद्धांत पर संगठित जातीय संस्था मैथिल महासभासँ अलग स्वतंत्र रूप आ पहचान देबाक लेल ओकर अधिवेशनकेँ फराक कऽ देल गेलैक । एहि क्रममे भोला बाबू मैथिली साहित्य परिषद्क

अग्रिम अधिवेशन लहेरिया सरायक एम. एल. एकेडमीक प्रांगणमे आयोजित कयलनि । ओकर अध्यक्षता करबाक लेल राजस्थानक अलवर स्टेटक मुख्य न्यायाधीश आ मैथिलीक प्रथम पत्र 'मैथिल-हित-साधन'क संस्थापक पं. रामभद्र जा सँ अनुरोध कयलथिन । सुदूर प्रवासमे रहैत पं. रामभद्र झाक हृदयमे मातृभाषाक प्रति एहेन अनुराग रहनि जे अपना भाषामे पत्र-पत्रिका प्रकाशित हो ताहि लेल चिंतन कयलनि । ओ अपन मुद्रित अध्यक्षीय भाषणमे हिन्दी ओ मैथिलीक भिन्नता, मैथिलीक स्वतंत्र स्तित्व ओ आत्मनिर्भरता, आदि विषय पर गंभीर रूपेँ विचार कयने छथि । ओ अपन भाषण मे अनेकानेक एहेन मैथिली शब्दक सूची प्रस्तुत कयलनि अछि जकर अभिव्यक्ति हिन्दी मे भैये नहि सकैत छैक । मैथिलीक स्वतंत्र व्याकरण, रचना, लोकोक्ति आदिक कतोक उदाहरण दऽ मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताकेँ प्रमाणित कयने छलाह । मुदा तेँ कि, हिन्दीक ओकालति केनिहार मैथिली भाषी डॉ. जनार्दन मिश्र तकर बाद अपन कोनो अंगरेजी लेखमे मातृभाषाक परिभाषेकेँ बदलबाक हस्यापद प्रयास करैत लिखलनि,—"जे भाषालोक अपन माय-बहिन आदिक मुहेँ सिखैछ एवं जन्म-भरि बजैछ से नहि, वरन वार्द्धक्य अवस्थामे जाहिसँ ओकर जातीय संस्कार वा व्यक्तित्व बनैछ से थिक असल मातृभाषा, से बिहारक हिन्दीये अछि ।"

ओहि समयमे डॉ. सर गंगानाथ झा दरभंगा अयलाह । भोलाबाबू हुनकर भेट कऽ परिषद्क समस्या तथा डॉ. जर्नादन मिश्रक उक्त अंगरेजी लेखक चर्चा करैत मैथिली साहित्य परिषद्क अगिला अधिवेशनक अध्यक्षता करबाक लेल निवेदन कयलथिन । ओ अध्यक्षता करबाक निमंत्रणतँ स्वीकार करबे कयलथिन जे संगहि डॉ. मिश्रक भाषणकेँ कटैत उत्तर भोलाबाबूकेँ लिखा देलथिन, जे हुनक अध्यक्षीय भाषण भेलनि । सम्पूर्ण भाषणसँ परिषद्क अर्थाभावक कारणसँ प्रकाशित नहि भऽ सकलैक, मुदा ओकर किछु अंश 'मिथिला-मिहिर' मे छपलैक ।

ओहि समयमे मैथिल महासभाक संगठनक स्वरूप, क्रियाकलाप तथा मैथिली साहित्य परिषद्केँ ओकर एक अभिन्न अंग जकाँ बनल रहबाक कारणसँ लोक मैथिलीकेँ मात्र ब्राह्मण आ' कर्णकायस्थ भाषा मानैत छलैक । भोलाबाबू एहू भ्रमकेँ दूर करबाक लेल चिंतित छलाह । मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन तँ मैथिल महासभा'सँ फराक होयब आरम्भ भैये गेल छलैक, जे ओहिमे आमंत्रित व्यक्तिक सूची सेहो दोसर तरहेँ बनेवाक प्रयास भोलाबाबू कयलनि । परिषद्क छठम अधिवेशन जे मुजफ्फरपुरमे आयोजित भेल छल, तकर अध्यक्ष राय बहादुर जयानन्द कुमर छलाह आ स्वागताध्यक्ष रहथि बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' । श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' परिषदक संक्षिप्त इतिहास' मे लिकैत छथि;—

"एहि अधिवेशन में उपस्थित किछु विशिष्ट व्यक्तिक नामावलीसँ ज्ञात होइत अछि जे भाषाक उत्थानक हेतु जाहि प्रकारक मंचक आवश्यकता अनुभव कयल जाइत छल तकर पूर्ति एहि अधिवेशनमे आबिकऽ भेल । नामावली निम्नलिखित अछि;—

"बाबू उमाशंकर प्रसाद, रायबहादुर श्याम नन्दन सहाय, बाबू राजेश्वर प्रसाद सिंह

(नरहन), सर चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह रायबहादुर श्री नारायण महथा, श्री महेश्वर नारायणसिंह, पं. धर्नराज ओझा, पं. यमुना प्रसाद त्रिपाठी, पं. परमेश्वर त्रिपाठी, सर्वश्री केदारनाथ महथा, गौरीदत्त जालान, रामदेव ओझा, लक्ष्मीनारायण गुप्त, गया प्रसाद, एल. एन. गोस्वामी, लक्ष्मीनारायण सिंह, तारकेश्वर प्रसाद, आरसी प्रसाद सिंह, रेवती रमण श्री वास्तव, श्रीमती भवानी मेहरोत्रा, पं. रामनन्दन मिश्र, श्री सूरजनारायण सिंह, श्री योगेशचन्द्र मुखर्जी आदि ।''

एहि अधिवेशनसँ मैथिली साहित्य परिषद् मे एक नव स्फूर्ति,एक नव उत्साह तथा आगाँ संघर्षक लेल एक नव संकल्पक संग मार्ग प्रशस्त भेल छल । सरकारी पदाधिकारियो लोकनिक ध्यान मैथिलीक बढ़ैत डेग दिस आकृष्ट भेलनि । आगाँक सातम अधिवेशन पटना मे आयोजित करबाक निश्चय भेल आ अध्यक्षताक लेल डॉ. अमरनाथ झा मनोनीत छलाह । एहि बीचमे परिषद्क दू गोट विशेष अधिवेशन मैथिल महासभाक संग आयोजित कयल गेल । प्रथम पं. गिरीन्द्र मोहन मिश्रक अध्यतामे सरिसव मे आ दोसर दरभंगा राज पण्डित बलदेव मिश्रक अध्यक्षामे भेल । एहि दुनू मिश्रजीकेँ दरभंगा महाराजसँ अधिक निकटता छलनि । मैथिलीक आगूक कार्यमे महाराजक अनुकूलता एवं सहायताक आवश्यकता छलैक, तेँ भोलाबाबू दूरदर्शिता देखबैत एहि दुनू राजदरभंगाक सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्तिकेँ परिषद्क विशेष अधिवेशनक अध्यक्ष बनाय हुनका सम्मानित कयलनि ।

परिषद्क पटनाक अधिवेशनक मनोनीत अध्यक्ष डॉ. अमरनाथ झाक समयाभावक कारणेँ अधिवेशनक तिथि कतोक बेर परिवर्तित भेलैक । अन्ततः हुनका समय नहिये भेटि सकलनि । तखन 9 अप्रैल 1938 ई. मे पछिले अध्यक्ष पं. जयानन्द कुमरक अध्यक्षतामे सातमो अधिवेशन सम्पादित भेल । मैथिली साहित्य परिषद्क इतिहासमे पटनाक ई अधिवेशन बहुत महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि । ओहि अधिवेशन मे दू गोट शिष्ट मंडल तथा एक गोट उपसमिति गठित कयल गेल छल ।

पहिल शिष्टमंडल बिहार सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा समितिक अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसादसँ वर्धा स्कीमक अनुसार मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा देबाक तथा मिथिलांचलमे मातृभाषा मैथिली रहबाक कारणे मैथिली लागू करयबाक आग्रह करबाक हेतु तथा दोसर शिष्टमंडल पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति डॉ. सच्चिदानन्द सिंहासँ भेट कऽ पाठ्य विषय मे मैथिलीकेँ स्वीकृति प्रदान करबाक औचित्य सिद्ध करबाक लेल गठित कयल गेल छल ।

पहिल शिष्टमंडलक सदस्य छलाह,—पं. जयानन्द कुमर, श्री सूर्यनन्दन ठाकुर, श्री चतुराननदास, डॉ. सुधाकर झा, तथा स्वयं भोला बाबू । दोसर शिष्ट मंडल मे बाबू भोलालाल दास, पं. जयानन्द कुमर, अवध बिहारी झा, पं. लक्ष्मी कान्त झा, पं. राम अनुग्रह झा, तथा कुमार गंगा नन्द सिंह सदस्य छलाह । उपसमिति ग्राम्यगीत सभक संकलन तैयार करबाक लेल बनाओल गेल छल । ओहिमे बाबू गंगापति सिंह, श्री नरेन्द्रनाथ दास

विद्यालंकार, पं. शिवनन्दन ठाकुर, श्री पुलकित लाल 'मधुर', श्री काञ्चीनाथ झा 'किरण', बाबू लक्ष्मीपति सिंह, श्री हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', बाबू धनुषधारी लाल दास, पं. श्री बल्लभ झा, पं. जयगोबिन्द मिश्र, तथा पटना अधिवेशनक मनोनीत अध्यक्ष डॉ. अमरनाथ झा सदस्य छलाह ।

ओहि समयमे मानू मैथिली साहित्य परिषद् तथा भोलाबाबूक नाम पर्यायवाची बनि गेल छल । परिषद् अथवा कहीतँ भोलाबाबूक मुख्य उद्देश्य पटना विद्यालय द्वारा मैथिलीक स्वीकृति छल । एही लेल शिष्ट मंडलक गठन भेल छल । शिष्ट-मंडलक आगूक क्रियाकलापक सम्बन्धमे स्वयं भोलाबाबू द्वारा लिखत 'संस्मरण' विशेष रूपसँ प्रामाणिक होयत । ओ लिखै छथि;—

"शिष्टमंडल लए जयबाक प्रस्ताव मुजफ्फरपुरमे भेल छल । बीचहु मे कतेक बेर एकर आश्वासन एवं आयोजन सम्बन्धी समाचार 'भारती' मे छपल देखि पड़ैछ । ('भारती'क अंक 1 पृ. 35; अंक 3, पृ. 10; अंक 5-6, पृ. 204; अंक 6, पृ. 245 द्रष्टव्य) कतबो प्रयास कय आबी डॉ. अमरनाथ झा एवं कुमार गंगानन्द सिंहकेँ जुटायब असंभव भए गेल । सोतिपुरेक कोनो विश्वासी लोकसँ पता लागलजे डॉ. झाक ओहिठाम उपनंयन थिकैन्ह । ओ अमुक तिथिकेँ पटने होयत गाम आबि रहल छथि तेँ ने आओ (पानि) बुझलहुँ ने ताओ (आगि) पटनहिमे हुनका पकड़बाक हेतु दौड़ि गेलहुँ । ओतय ई सुनि आसमानसँ खसि पड़लहुँ जे ओ रातियेखन सीधे गामचल गेलाह, पटनामे एको घंटा नहि अटकलाह । मनक साध मनहि रहल जे भाइस चान्सलरकेँ भाइस चान्सलरसँ भेट भेल कि स्वीकृति अनायासे हैत ।. . . . डॉ. अमरनाथ झाक एहि प्रकारक उपेक्षापर हमरा मर्माहत देखि राय बहादुर जयानन्द कुमरजी आश्वासन देलन्हि जे आइ आब समय नहि अछि, काल्हि चलब । अपनहि डेरा पर बड़ आदरपूर्वक रखलन्हि एवं प्रातःकाल कहलन्हि जे हमरा फोन पर सिंहा साहेबसँ गपभय गेल अछि, अहाँक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि, अहाँ भेट कय अबियौन्ह । हम हुनको संग चलबाक आग्रह केलियैन्ह मुदा ई कहि अपने नहि गेलाह जे हम हुनकासँ पश्चात् गप कयलेब, अहाँ आऊ ।"[3]

रायबहादुर जयानन्द कुमर जखन भोलाबाबूकेँ एकसरे भाइचांसलर सिंहा साहेबसँ भेट करय कहलथिन ओहि कालक भोला बाबूक मनःस्थितिपर कोयो स्वतः विचार कऽ सकैत अछि । कोनो शिष्टमंडल अथवा प्रतिनिधि मंडलक गठनकरबाक अवसर पर नामी ओ प्रभावशाली व्यक्तिक नाम राखल जाइत छैक । मुदा कार्य करबाक समयमे साधारणतया ओ व्यक्तिसभ केहेने स्थिति उत्पन्न करैत छथि तकरा ई उदाहरण स्पष्ट रूपसँ उजागर करैत अछि । प्रस्ताव करैत काल ई ध्यान नहि राखल जाइत छैक जे जाहि व्यक्तिकेँ कार्यक हेतु मनोनीत करैत छियनि, तिनका समय भेटतनि वा नहि । सिंहा साहेबक स्वयं आग्रह रहनिजे शिष्टमंडलक सभ सदस्य लोकनिसँ गपकरी । ओ खासकय डॉ. अमरनाथक मुँहसँ मैथिलीक सम्बन्धमे तर्क सुनयचाहैत छलाह । भोलाबाबू कतोक बेर पटनाक यात्रा कयलनि,

मुदा कुमार गंगानन्द सिंहकेँ समय नहि भेटि सकलनि ।

सिंहा साहेबसँ असगरे भेट करबाक विषयमे भोलाबाबू लिखैत छथि;—

"हमरा अपना विषयमे कोनो न्यूनता आदिक भावना नहि छल । यद्यपि सिन्हा साहेबक समक्ष हम एक मामूली जुनियर ओकिल, ओ लब्ध प्रतिष्ठ बैरिस्टर, अवस्थामे तेहने छोट पैघ । व्यक्तित्व, विद्वता आदितँ कर्थ नहि हो । मैथिली विषयमे हम अपनाकेँ केहनो पैघ व्यक्तित्वकेँ सब प्रकारेँ परास्त करबाक हेतु सक्षम बुझैत छलहुँ ।"[14]

भोलाबाबूक दृढ़ आत्मविश्वासक परिचय हुनक एहि कथनसँ होइत अछि । हुनकामे एतेक आत्मबल छलनितेँ ओहि समयमे एतबो अधिकार मैथिलीकेँ प्राप्त भऽ सकलैक । डॉ. साच्चिदानन्द सिन्हासँ भोलाबाबूकेँ असगरे जे वार्त्तालाप भेलनि से ऐतिहासिक अछि । एहिठाम ओहि सम्बन्धमे स्वयं भोलाबाबू द्वारा लिखल संस्मरणकेँ उद्धत करबाक लोभ हम संवरण नहि कऽ पबैत छी । भोला बाबू लिखैत छथि;—

"वस्तुत: सिन्हा साहेब प्रतीक्षा कए रहल छलाह । हिन्दीमे वार्त्तालाप भेल । स्वागत करैत पुछलनि जे अमरनाथ बाबू कहाँ छथि ? हम एतेक दिनसँ हुनके प्रतीक्षा कऽ रहल छलहुँ । अस्तु अही. बुझाउ । संक्षेपहिमे हम अपन पक्ष स्थापित कैल । एक डेढ़ घंटाधरि हुनकासँ वार्त्तालाप होइत रहल । कोना बंगालसँ अति प्रयत्ने बिहार प्रान्तक ओलोकनि निर्माण कैलन्हि, एवं किछु मैथिली सब बंगालक गवर्नरसँ पृथक भेट कए बाधक भेलथिन, पहिने तकरे बड़का खिस्सा चलल । सबटा सुनि अन्त मे नम्रतापूर्वक हम विरोधक प्रतिरोधमे ई कहलियन्हि जे मैथिल सब अनुचिते की कैलन्हि जखन कलकत्ता विश्वविद्यालय मैथिलीकेँ मैट्रिक्सँ एम. ए. पर्यन्त भाषा रूपेँ स्वीकृत क एलक मुदा अपना प्रान्तक विश्वविद्यालय आइ 15-20 वर्षसँ एकर विरोधपूर्ण उपेक्षा कए रहल अछि ।"

"मुदा हम एतेक दिनसँ प्रैक्टिस कए रहल छी तथा जतेक दूर पूर्णियाँसँ बलियाधरि घूमल छी, अहाँ ने प्रैक्टिश कैने छी ने घुमले हैब, मैथिली बजैत ककरो मुहेँ नहि सुनलहुँ, सबठाम लोक हिन्दीये बजैत अछि ।" अपना सेवक कैँ हमरा हेतु भोजपुरी मे चाय अनबाक आज्ञा दैत सिन्हा साहेब बजलाह ।

"भोजपुरीतँ सरकारक मुँहेँ सुनबेकैल आपटनामे मगहियो सुनतहि छी, मैथिलीक व्यवहारतँ जनसाधारणे नहि करैछ, एकर लोकगीते नहि चलैछ, लोकनृत्येनहि अछि, साहित्य सेवो हाइतहि आयल अछि ।" किछु एहि प्रकारक हमर नम्र उत्तर भेल ।

"सिन्हा साहेब मैथिली साहित्यक अल्पता एवं पत्रपत्रिकादिक नगण्यताक शिकायत करैत कहलन्हि जे अहाँ मैथिलीक स्वीकृति करबए चाहैत छी तँ की भोजपुरी और मगहियो से नहि चाहत ? और सोचू तऽ तखन ई प्रान्त की छिन्न-भिन्न नहि भए जायत ? व्यर्थ अहाँ बिहार के (Tower of Babel) टावर ऑफ बैबेल बनाबए चाहैत छी । आ हमरा लोकनिक नव प्रान्तक निर्माणक सबटा कैल-घैल ध्वस्त करय चाहैत छी । चाहो चलैत रहल एवं गप्पो किछुकाल एहिना चलैत रहल । हुनक विचार यैह बुझि पड़ल जे प्राचीन

तथा प्राञ्जल साहित्य यदि मैथिलीक छैको तँ ओहो अवधी, ब्रजभाषा आदि जकाँ हिन्दीक भेंट चढ़ाओल जाय । किन्तु बंगला, मराठी, आदि जकाँ ने ओकर स्वीकृति हो ने भाषा रूपेँ पठन-पाठन आदि ।

''हम जखन क्रमसँ एहि सब विचारक औचित्य एवं न्याय बतौलियन्हि तँ सिन्हा साहेब किचु रूष्टता एवं आवेगपूर्वक कहलन्हि जे देखू हम आब बूढ़ भेलहुँ । अहाँक महाराजधिराज नवयुवक छथि । हम भगवानसँ मनबैत छी जे हमरा बाद वैह भाइसचांसलर होथि मुदा हम कहि दैत छी, बाबू भोलालाल, यदि ई प्रश्न हुनको समक्ष उपस्थित हैत तँ ई तेहन जटिल एवं अनुपयुक्त अछि जे हुनको एकरा स्वीकृत करबाक साहस नहि हेतैन्ह । तथापि अहाँक संतोषार्थ हम आइसँ मैथिलीक एक स्वतंत्र फाइल रखबाक व्यवस्था कए दैत छी और देखय चाहैत छी जे एकर माङ कतेक अनिवार्य एवं सार्वजनिक अछि । विश्वविद्यालयक एक किरानी जे ओहिठाम बैसल छलाह, तनिका एहि प्रकारक आदेश प्रदान कए देलथिन्ह ।

''अधिक वाद-विवाद व्यर्थ जानितहुँ नम्रतापूर्वक ई कहि उठि गेलहुँ जे मैथिली कोनो व्यक्तिक कृपापर नहि अपनाकोटिहुँसँ ऊपरेँ मैथिली भाषी जनताक माङक औचित्य एवं न्यायहि पर निर्भर अछि आ आइने कातिह एकर स्वीकृति भइएकए रहत ।''[15]

पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति नहि होइत छलैक तकर दुख विदेशी विद्वानकेँ पर्यन्त होइत छलनि । पटना विश्वविद्यालयमे प्रो. टर्नर साहेब कार्य कयने रहथि । ओ अपन एक व्यक्तिगत पत्र दिनांक 16 सितम्बर 1935 ई. केँ डॉ. सुधाकर झाकेँ लंदनसँ लिखल थिन तकर एक अंश एहिठाम द्रष्टव्य अछि;—

''ई अत्यन्त दुखक विषय थिक जे पटना विश्वविद्यालय अपनहि प्रान्तक प्राचीन ओ समुज्जवल भाषा मैथिलीकेँ स्वीकृत नहि कयने अछि, जकर बजनिहार एक करोड़सँ अधिक बिहार प्रान्तक बासी छथि आ जाहि भाषाक स्वीकृति अपना पड़ोसक विश्वविद्यालयमे भऽ गेल छैक । यदि इहो विचार हो आ हम एहि विचारक समर्थन करैत छी जे हिन्दी बिहार प्रान्तक सरकारी भाषा बने, तथापि पठन-पाठन हेतु मैथिली सदृश महत्वपूर्ण एवं समृद्धशाली भाषाक अवहेलना करबाक हमरा कोनो कारण नहि देखि पड़ैछ । यद्यपि एहि द्वीपपुंज अर्थात् इंग्लैंड आदिक सरकारी भाषा अंगरेजी थिक तथापि हमरालोकनिक अंगरेजी विश्वविद्यालय सभ वेल्स, अर्थ, गेलिक आदि स्थानीय भाषा वर्गक पठन-पाठनकेँ निरुत्साहित नहि करैत छैक ।''

एक निष्पक्ष विदेशी विद्वानक विचार मैथिलीक सम्बन्धमे कतेक स्पष्ट अछि से उक्त पत्रक एक अंशक अवलोकनसँ ज्ञातव्य अछि । प्रो. टर्नर मैथिलीकेँ प्राचीन एवं समुन्नत भाषा मानैत छथि आहिन्दीक संग-संग मैथिलियोक अध्ययन-अध्यापनक ओकालति कयलनि अछि । विरोध केनिहारकेँ कोनो बहाना चाही । मगही आ भोजपुरीकेँ बहाना बनाय पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन भाइस चांसलर मैथिलीक विरोध करैत छलाह ।

मैथिलीकेँ पटना विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त करेबाक लेल दीर्घ तपस्या एवं

संघर्ष करबाक कार्यमे बाबू भोलालाल दास अग्रणी छलाह । संयोगसँ दरभंगा महाराज पटना विश्वविद्यालयमे सबालाख टाका दानस्वरूप दय एक मैथिली चेयरक स्थापना करबोलनि । एही कोषसँ शोधकार्यक लेल वृत प्राप्त कय सुधाकर झा लंदन जाकय डाक्टरेटक उपाधि लऽ 1924 ई. क मार्च मे स्वदेश आपस अयलाह । मैथिली कोषक सहायता पर विदेशसँ उपाधि अर्जित कयलोपर डॉ. सुधाकर झा सँ पटना विश्वविद्यालय मैथिलीक स्थानपर हिन्दी आ संस्कृतक अध्यापन करबा रहल छल । प्रारम्भ मे दरभंगा महाराजो एहि विचित्र व्यवस्थाक कोनो विरोध नहि कयलथिन । मुदा डॉ. सुधाकर झा मैथिलीक स्वीकृति नहि रहितहुँ — अनौपचारिक रूपसँ मैथिली पढ़ायब आरम्भ कयलनि । हुनका पटना कॉलेज मे मैथिलीक वर्ग लेबाक लेल कोनो कोठरीक आवंटन नहि कयल गेलनि । घुमि-घुमि कऽ जतय स्थान रिक्त भेटनि, डॉ. झा मैथिलीक अध्यापन करैत छलाह । ई समाचार ज्ञात कय पटना स्थित विभिन्न कॉलेजक कला, विज्ञान, डाक्टरी, इंजीनियरिंग आदिक छात्रलोकनि पर्याप्त संख्यामे पटना कॉलेज आबि मैथिलीक क्लासमे पढ़य लगलाह । विश्वविद्यालय अधिकारी लोकनिकेँ ई दृश्य देखलाक बाद मैथिलीक प्रति अपन रूखमे किछु नरमी अयलनि । एहि अनौपचारिक मैथिलीक शिक्षण व्यवस्थासँ अनेक मेधावी छात्रलोकनि लाभान्वित भेलाह । ओही महक एक छात्र अभियंत्रणा डिग्रीधारी श्री उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' बादमे मैथिलीक यशस्वी साहित्यकार भेलाह तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ विभूषित एखनहुँ अपन लेखन सँ मैथिलीक श्रीवृद्धि कऽ रहल छथि । एहि तरहेँ ओहिकालक आनो कतोक व्यक्ति जीवनमे सफलता प्राप्त कयलनि तथा मैथिली साहित्य-सेवामे लागल छथि ।

मैथिली साहित्य परिषद्क सीतामढ़ी विशेषाधिवेशन मे जे शिष्ट मंडल दरभंगाक महाराजधिराज कामेश्वरसिंहसँ भेट करबाक लेल नियुक्त भेल छल, ताहिसँ किछुए दिन पूर्व पटना विश्वविद्यालय महाराजकेँ आजीवन सदस्यता प्रदान कयने छलनि आ ताहि हेतु 'गाउन' पठौने छलनि । उक्त शिष्टमंडल महाराजसँ भेटकय हुनका सदस्यता प्राप्त करबाक हेतु साधुवाद दैत निवेदन कयलकनि जे एहि 'गाउन' क उपयोग प्रथम-प्रथम मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु सिनेट मे प्रस्ताव अनबाक समय कयल जाय। एहि कार्यमे किछु समय लागि गलैक । एहिबीचमे भोलाबाबू मैथिलीक पक्षमे अपन एक निबन्ध 'इंडियन नेशन' पत्रमे प्रकाशित करौलनि । महाराज 'इंडियन नेशन' अवश्य पढ़ैत छलाह । भोलाबाबूक एहि लेखसँ ओ बहुत प्रभावित भेलाह । ओ घोड़सवार पठाए भोलाबाबूकेँ बजबौलथिन । तकर बाद महाराज द्वारा सिनेट मे प्रस्ताव राखल गेल । ओहि समयमे भोलाबाबू किछु गोटेक संग पटनामे तत्पर छलाह । सदनमे महाराजकेँ प्रलोभन देल गेलनि जे 'कलासिकल' रूपमे मैट्रिक सँ एम. ए. कक्षाधरि मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटि सकैत अछि । मुदा यदि वर्नाकुलट रूपमे चाही तँ ताबत केवल मैट्रिक कक्षामे ऐच्छिक रूपमे मैथिलीकेँ मान्यता भेटि सकैत अछि । ओहू ठाम विरोधी छिटकी मारबाक लेल तैयार छल । महाराज बाहर आबि प्रतीक्षारत व्यक्ति सबसँ दुनू स्थिति कहि सुनौलथिन । भोलाबाबूक उत्तर छलनि जे एके

कक्षामे ताबत हो, किन्तु से वर्नाकुलर रूपमे हो । एहि तरहेँ भोलाबाबूक संघर्ष तथा तत्परतासँ मैथिलीक प्रवेश पटना विश्वविद्यालयमे 1939 ई. मे ऐच्छिक विषय रूपमे प्रवेशिका परीक्षा धरि भेलैक । 1950 ई. अबैत-अबैत एम. ए. कक्षाधरि मैथिलीक स्वीकृति पाठ्यपुस्तक निर्धारण सहित भऽ गेलैक । 1950 ई. मे प्रथम एम. ए परीक्षा भेल, जाहिमे प्रो. आनन्द मिश्र प्रथम श्रेणीमे प्रथम भेलाह । एम. ए. कक्षामे नियमित रूपसँ अध्यापन 1952 ई. सँ आरम्भ भेलैक ।

शिक्षा विभाग द्वारा मैथिलीक स्वीकृति

भोला बाबू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिसँ थोड़बो कम नीचा वर्गमे मैथिलीक मान्यताकेँ नहि मानैत छलाहा ओ कार्य शिक्षा विभागक अधीन छल । भोलाबाबू 1940 ई. मे मैथिली साहित्य परिषद्क मंत्रीत्वसँ मुक्त भऽ गेलाह किंवा मैथिलक एक गुट्ट द्वारा हुनका मुक्त करादेल गेलनि । भोलाबाबू दरभंगासँ पटना आबि गेलाह । संयोगसँ पटनाक युनाइटेड प्रेसमे ओकर प्रकाशन विभाग चालू करबाक काजमे भोलाबाबू नियुक्त भऽ गेलाह । शिक्षा विभागक द्वारा जे कार्य आब होयब आवश्यक छलैक, ताहिमे युक्ति लगेबाक सुअवसर हाथ लागि गेलनि । शिक्षा विभागक कार्यालयसँ सूचना भेटलनि जे आब शीघ्रे मैथिलीहुक पुस्तक मांगल जायत । इहो ज्ञात भेलनि जे पुस्तक भंडार सब कक्षाक लेल मैथिली साहित्यक पुस्तक तैयार कराय स्वीकृतिक हेतु दाखिल कय देने छैक । संगे शिक्षा विभागक शर्त छलैक जे जाबत-धरि चारिम-पाचम, छठ्म-सातम एवं आठम-नवम कक्षाक लेल तीन गोट व्याकरण पुस्तक प्रस्तुत नहि कयल जयतैक, ताबत साहित्योक पोथी स्वीकृत नहि होयतैक । भोला बाबू निश्चय कयलनि जे युनाइटेड प्रेसक दिसँ साहित्य आ अपना दिससँ व्याकरण लिखि एहि त्रुटिक पूर्ति करी पोथी तैयार भेलैक । प्रेसतँ अपन पोथी-खूब अधिक आकर्षक रूपसँ छपलक, मुदा भोलाबाबूकेँ व्याकरणक पोथी छपेबाक यूक्ति नहिं छलनि । ओ कहुना शीघ्रता सँ व्याकरणक तीनू पोथी लिखलनि तथा हस्तलिखिते कापी 1940 ई. मे दाखिल कऽ देलथिन । मुदा सरकारी गजेटक प्रतीक्षामे सब पोथी स्थगिते रहि गेलैक । अंतमे 8 जनवरी 1941 ई. के गजट प्रकाशित भेलैक जे एहि वर्ष केवल मैथिली एवं संथाली भाषाक पोथी लेल जयतैक ।

1941 ई.मे कहुना एहि तरहेँ केवल साहित्य विषयमे मैथिलीकेँ स्वीकृति भेटलैक । ओहिमे पुस्तक भंडारक साहित्य एवं भोला बाबूक व्याकरणक पोथी लेल गेलैक । लोक सेहो नहि अपनौलक । आइधरि जे मैथिलीक स्वीकृतिसँ जनता आकृष्ट नहि भऽ सकल तथा एतेक दिनक बादो प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मातृभाषा मैथिली नहि बनौल गेल अथवा मातृभाषाक द्वारा शिक्षा अनिवार्य एवं व्यापक नहि भऽ सकल, तकर कारण मात्र सरकारक उदासीनेता नहि अछि, मैथिली भाषी जनताक अपनो उपेक्षा रहल अछि । सिद्धान्त रूपसँ प्रारम्भहिसँ ई स्वीकृत भऽ गेल छलैक जे केवल साहित्ये नहि, गणित, स्वास्थ्य, भूगोल

इतिहास आदि सब विषयक क्रमशः पोथी लेल जायत । मुदा जनता, शिक्षक, सरकारी अफसर, निरीक्षक आदिक उदासीनता एहि योजनाकेँ सफल होयबाक मार्ग मे बाधा बनल रहलैक । ओना बिहार सरकारक शिक्षा विभाग द्वारा मैथिलीकेँ 1940 ई. सँ स्वीकृति भेटल छैक ।

एहि प्रकारेँ बाबू भोलालाल दास मैथिली भाषाकेँ राज्य सरकार तथा पटना विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृति प्रदान करेबाक संघर्ष मे अपन जीवनक महत्वपूर्ण समय लगा देलनि । कहि सकैत छी जे मातृभाषाक लेल यज्ञक होम मे अपन सर्वस्वक आहुति दऽ देलनि आ अपना उद्देश्यक पूर्ति मे सफलता प्राप्त कयलनि । अपन मातृभाषाक प्रचार-प्रसारक लेल भोला बाबू देशभरिमे ख्याति ओ प्रतिष्ठा अर्जित कयलनि । देशक आनो भाषा-भाषी अपन भाषाक उत्थानक हेतु संघर्ष करबाक लेल भोला बाबूसँ प्रेरणा ग्रहण कयलनि अछि ।

एक राजस्थानी भारतक एक प्रसिद्ध विद्वानकेँ पुछलथिन-"हम सब कोना अपन राजस्थानी भाषाकेँ मृतसँ जीवित भाषाक रूप दऽ सकैत छी ? से बुझाओल जाय ।" विद्वान सज्जन उत्तर देलथिन—"जाउ मिथिला आ ओतय भोलालाल दाससँ पुछि यौन्ह । हुनकासँ अनुभव ग्रहण करू जे कोन प्रकारेँ ओ मैथिली भाषाकेँ दलदलसँ निकालि कय राजमार्ग पर ठाढ़ कऽ देलनि । वैह अहाँक मार्ग दर्शन कऽ सकैत छथि ।" ई उद्‌गार छलनि भारतक विश्व प्रसिद्ध भाषा विद्‌एवं केन्द्रीय साहित्य अकादेमीक तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक, ओहि भोलालाल दासक विषयमे—जनिका आइ मैथिलीक दलीचि, मिथिलाक विभूति आ राष्ट्र भाषा हिन्दीक श्रृंगार सेहो ।

संदर्भ संकेत

1. संस्मरण; पृ. 37
2. तभैव; पृ. 38
3. तभैव; पृ. 95-96
4. तभैव; पृ. 96
5. तभैव; पृ. 96-98

मैथिली साहित्य साधना

भोलाबाबूक लिखल समस्त रचनाक अनुशीलनसँ ई स्पष्ट होइछ जे ओ कवि, गद्यकार, निबन्धकार, प्राचीन साहित्यक व्याख्याता, समीक्षक तथा पत्रकार छलाह । हुनक पत्रकारिता क्षेत्रमे अवदान पर फराकसँ एक अध्याय मे आगाँ विचार करबाक अछि, तँ एहिठाम ओकर अतिरिक्त अन्य विषय पर संक्षिप्त मे विवेचना करबाक प्रयास कऽ रहल छी ।

भोला बाबू स्वयं अपनाकेँ कवि नहि मानैत छलाह । 'मैथिलीक गत पचास वर्ष' शीर्षक मे अपूर्ण एवं अप्रकाशित अपना हाथेँ लिखल एक निबन्धमे ओ लिखैत छथि जे,— ''गद्य लिखबामे यदि किछु गति अछियो तँ पद्य मे एकदम पंगुए छी ।''[1] 'मिथिला' मासिक पत्रक बारहम अंकमे वर्ष भरिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करैत 'लेखकसँ निवेदन' उपशीर्षकमे ओ लिखने छथि;—

''पैघ रचनामें हमर लेखनी तेहेन शिथिल अछि जे हम तकर प्रयासो करब अनाधिकार चर्चा बुझैत छी, तथापि हम चाहैत छी जे हमर काव्य मिथिला भाषामें रहितहु केवल मैथिल, मैथिली अथवा मिथिलाक सम्बन्धमे नहि रहै, प्रत्युत सार्वदेशिक और सार्वजनिक होइत भावोन्नायक रहय ।''

तथापि सत्य ई थिक जे हिनक मैथिलीमे कयलं रचना में प्रथम आ अन्तिम समयक काव्ये उपलब्ध अछि । हिनक प्रथम प्रकाशित रचना 'श्रीमैथिली' मासिकमें उपलब्ध होइछ । ओकर शीर्षक 'गीत' थिकैक आ 'श्रीमैथिली'क प्रथमे अंकमें प्रकाशित भेल अछि । मुदा एहिसँ पूर्वहु जहिया भोलाबाबू बेतिया राज स्कूलमे छलाह, तखनहि पं. त्रिलोचन झाक सम्पर्कमे अयलाक कारणेँ मैथिलीक भविष्य चिंतनक प्रति विशेष रुचि उत्पन्न भेलनि तँ एक खण्डकाव्यक रचना कयलनि । ओ प्रकाशित तँ नहिये भऽ सकल जे ओकर पाण्डुलिपियोक कतहु अता-पता नहि अछि । ओहि प्रसंगमे अपना संस्मरणमे भोला बाबू लिखने छथि;—

मिथिलाक स्व. पं. त्रिलोचन झा जी पुरान मैथिली प्रेमी छलाह, तेँ हुनका घर बाबू छपरा जाय हुनक सम्पर्क बढ़ौलहुँ एवं बेतिया आएब एक प्रकारेँ नीके बुझलहुँ । बैसल-बैसल 15-20 पृष्ठ मे एक खण्डकाव्य मैथिलीक भविष्य पर मैथिलीमे लिखि गेलहुँ । अनेक वर्ष धरि ओ रखले छलैक, मुदा अज्ञाते रूपेँ ओ केयो नष्ट कैँ देलक वा हराय गेलैक । हँ, किछु पंक्ति ओकर एखनहुँ मोने अछि ।

"अमर यश बनैली चेयरो छापि लेलौं
मरइत निज भाषा प्राण मानू बचेलौं
अनुपम निज भाषा प्रेम देखी अहाँ मे
अमल घवल व्यापै कीर्ति चान्द्री जहाँ मे ।"[२]

कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली चेयरक स्थापनामे बनैली इस्टेट द्वारा देल गेल सहायताक लेल धन्यवादमे लिखगेल छल इपाँती ।

स्पष्ट अछि जे भोलाबाबू जखन मैथिलीमे रचनाकरबाक दिस प्रवृत्त भेलाह तँ एक कवियेक रूपमे । जीवनक अन्तिम समय जखन शरीरसँ बहुत कमजोर भऽ गेल छलाह, तखनहुँ एक महाकाव्य लिखबाक प्रयास कयलनि, मुदा ओ पूर्ण नहि कऽ सकलाह । ओहि अपूर्ण महाकाव्यक किछु अंश मधेपुरक (मधुबनी) सांस्कृतिक समितिक 'स्मृति' नामक स्मारिकामे तथा थोड़ेक अंश मैथिली साहित्य परिषद्क पत्रिकामे प्रकाशित छनि । उक्त महाकाव्यक नाम छैक 'नव निबन्ध महाकाव्यम' । एहू महाकाव्यमे भोला बाबू मैथिली विकासक लेल चिंतित देखि पड़ैत छथि;—

"मिथिला मैथिल मैथिली बहुचर्चित अछि भेल
पूर्वाञ्चल अर्चित बुझी पथ बाधा टरि गेल
पथ बाधा टरिगेल मैथिली बसति अपन घर
बंगले सन ई हैत विश्वविधानक आकर
हो आदान प्रदान औंचलहुँ सौं व्यापक पुनि
राष्ट्रो धरि ता रहौ विषय वर्णन सीमा धुनि ।"

भोला बाबू मैथिलीमे पद्य साहित्य कमे लिखने छथि, मुदा जे लिखने छथि से किछुकँ छोड़ि सभटाक विषय मैथिलीक उत्थानसँ सम्बन्धित अछि । दरभंगा महाराज कामेश्वर सिंहक अभिनन्दन मे लिखल एक पद्य-रचनाक किछु पाँती एना छनि, जे 1942 ई. क मार्चक 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित अछि ।

"मतमति मानु मातु मैथिली मर्म गुनि
चीरचिकुर चिक चाक चान चौगुन चमकत पुनि
सत्वर सजत समाज साज सत्कारक सुन्दर
पूर्व प्रतिष्ठा पैव पूर्णपद पुजत पुरन्दर
कृपाकोर कामेश्वर जे कयलक काया कलप
नेहनीर नहबाय नित से निरवाहत निरसि तप"

उक्त पदमे वृत्यानुप्रासक छटा गोविन्द तथा काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क काव्यक स्मरण करयबामे सक्षम अछि । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक लेल प्रस्ताव सिनेटक आजीवन सदस्यक रूपमे अनने छलाह आ प्रस्ताव पास भेल छल । तदर्थ हुनक अभिनन्दनमे लिखने छलाह ।

'श्री मैथिली' पत्रिकामे भोलाबाबूक प्रथम काव्य रचना प्रकाशित छनि । ओहू गीत मे मैथिलीएसँ सम्बन्धित वर्ण्य विषय अछि । गीत एना अछि;—

''धनि से मैथिलीक चरण ।
परम कोमल विपिन विचरणशील अशरण शरण ॥
सुमरि जे तियगण चढ़थि असिधार पतिव्रत गहन ।
दुखहुँ जे सुखरूप कयलन्हि लोकहित आमरण ॥
उतरि आँचहुँ साँच मिथ्या कयल अपयश हरण ।
जरिजे निज जाति अवगुण कयल सुवरण वरण ॥''

अही पत्रिकाक छठम अंकमे भोलाबाबूक एक दोसर गीत 'मंगलाचरण' नामसँ प्रकाशित भेल छलनि जकर रूप निम्नांकित अछि;—

''धन्य ई मिथिला मैथिल धाम ।
परम उर्वरा भूमिदायिनी सहज सकल मनकाम ॥''

स्वयं अपना द्वारा सम्पादित 'भारती' नामक पत्रिकामे 'बन्दना' नामक एक कविता प्रकाशित छनि;—

''दुरुगे ! दया दृग दिय फेरि ।
देखु दश दिश दशा देशक दासता दृढ़ घेरि ॥
दुरित दारिणि, दुष्ट दायिनि दीप्ति दामिनी गात ।
देवि ! दुर्गति नाशिनी अहँ दिक दिगंचत्व ख्यात ॥
दनुज दल दुरदमन दापें दबथि देव समाज ।
दुरल दान दहेज देवक दक्षिण हुसँ बाज ॥
दुलभ दाना-पानि दुर्घट दूध दधि एहिकाल ।
दहथि दम्पति देह दूबर देखि दुखित दुलाल ॥
दक्ष देहरि देह दाहल देखि दायक नास ।
देरि की देखितहुँ दिगम्बर देश दुर्वस दास ॥''

भोलाबाबू मातृभाषा आ स्त्री समाजक उद्धारक लेल संग्रहि संघर्ष आरम्भ कयने छलाह । हिनक एक कविता 'कन्योन्नति' शीर्षकसँ नारी उद्धारक विषयमे छप्पय छन्द मे रचित उपलब्ध अछि । एहि कवितामे यद्यपि मिथिलाक कोनो विदुषी महिलाक नामक उल्लेख नहि अछि, मुदा स्पष्ट रूपसँ कविक भाव गार्गी, मैत्रेयी, लाखिमा, भारती आदिक दिस इंगित करैत ओहि कविताक प्रथम आ अन्तिम पद एतय द्रष्टव्य अछि;—

प्रथम पद:''कूजित छल जे देश सरस कविता कलापसँ
पूजित छल सभठाम प्रबल विधाक दापसँ
जगमग छल जगमध्य नारि आदर्श रल सँ
घर-घर छल सुख-शांति परम राजाक यत्नसँ

से मिथिला शिथिला भेली कायर सन्तति जन्मसँ
हैत हिनक उन्नति पुनः यदि सुधार हो सद्मसँ ।''

अन्तिम पद

''बिनु रखने समभाव पुत्र पुत्रीमे सुन्दर ।
बिनु हटने भ्रमभाव बालिका शिक्षा दुस्तर ॥
बिनु शिक्षा कन्याक बधू औती की उत्तम ।
बिनु उत्तम वधू हैत शिशुक शिक्षा की हत्तम ॥
शिशु सुधार बिनु हयत की समाज उपकार कहू ।
छाड़ि दुराग्रह मूर्खता कन्योन्नति सुख मूल गहूं ।।[3]

भोला बाबू छन्दोबद्ध पद योजना करबामे सिद्धहस्त छलाह । संस्कृतक एक श्लोक, जे बहुत प्रसिद्ध अछि आ जाहिमे सम्पूर्ण रामायणक घटना संक्षिप्त रूपसँ समाविष्ट कयल गेल छैक, ओकरा भोलाबाबू 'छपदी' शीर्षक कवितामे छप्पय छन्दमे रचने छथि;—

''आदि राम शुभजन्म, बाललीला, धनु खण्डन,
सिय विवाह, वनवास, भरत भायक जग वन्दन,
मृगवध, सीताहरण, जटाई मरण-सम्मरण,
पुनि सुकंठ-मित्रता, बालिवध, उदधि संतरण
सकुल-सबल रावणहनन स्वदल अवध पुनरागमन
राम-राज-सुख-सम्पदा, इति श्री रामायण कथन ।

एहिसँ ई स्वतः सिद्ध अछि जे बाबू भोलालाल दास छिट-फुट अनेको कविता एवं गीत लिखने छथि । मुदा हुनक कवित्वक प्रस्फुटन हुनक 'युवक' शीर्षक कवितामे भेल छनि, जे 'मिथिला' नामक मासिक पत्रिकामे प्रकाशित भेल छनि । ई वीररससँ पूर्ण कविता अछि । अपन कोमलताक कारणसँ मैथिली भाषामे वीर रसक कविता नहि लिखल जा सकैछ, ई धारणा बनल रहल । मुदा भोलाबाबू अपन 'युवक' कविता द्वारा सिद्ध कऽ देलनि अछि जे वीरोरसक अभिव्यक्तिक लेल मैथिली भाषा पूर्ण रूपेण समर्थ अछि । ओहि लोकप्रिय आ विख्यात कविताक किछु अंश एहिठाम उद्धृत कऽ रहल छी;—

''भूमिकम्प छी प्रबल विश्व विप्लवकारी हम
छी अति प्रखर तरङ्ग रूढ़ि-गिरि-रजकारी हम
दावानल प्रज्वलित दासता क्षयकारी हम
झंझानिल सम छी स्वतंत्रता रवकारी हम
अन्यायी सत्ताक छी प्रलय गगन सम अति विषम
हमरि लघु हुंकार सँ महाप्रलय होइछ नियम ।
हमही रोष छी प्रबल हमहि छी ताण्डव भयंकर
असंतोष छी हमहि क्षुब्ध मानू छी विषधर

हमहि अशान्तिक मूल हमहि दानव संहारक
हमहि परम दुर्दान्त लोकमत राष्ट्र सुधारक
हमहि रक्त दन्तावली विस्फारित केहरिबली
भूकथु श्वान हजार नित महामंत्त गज सम चली ।''

पटना विश्वविद्यालय द्वारा मैथिलीकेँ स्वीकृति प्राप्त भेलाक बाद 1941 ई. मे मैथिली साहित्य परिषद् पाठ्य ग्रंथ सभक प्रकाशन कयलक । प्रो. रमानाथ झा 'मैथिली पद्य संग्रह 'क जे संकलन आ सम्पादन कयलनि, ताहिमे एहू कविताकेँ स्थान देलथिन । संकलनमे प्रत्येक कविताक संग कविक परिचय प्रो. झा देने छथि । कविक परिचय क्रम मे भोलाबाबूक सम्बन्ध मे ओ लिखैत छथि;—

''श्रीयुत भोलालालदासक नामसँ के मैथिली-हितैषी अपरिचित होयताह ? हिनकहि प्रयत्ने मैथिली साहित्य परिषद, सुदृढ़ भेल ओ एहि वर्ष-धरि इएह परिषद्क मंत्री छलाह । ई करण कायस्थ कुलोद्भाव ओकील छथि, किन्तु हिनक प्रवृत्ति साहित्य दिसि छैन्हि । मैथिलीक हेतु ई कीकी ने कयने छथि । हिनक लेख ओ कविता समय-समय पर बराबरि प्रकाशित होइत रहैत अछि । यद्यपि आब ई कविता नहि रचैत छथि आ मुख्यत: गद्यहिमे लिखैत छथि तथापि जे किछु कविता कए चुकल ओकर स्थायी महत्व छैक ।''

मैथिलीक सर्वमान्य समालोचक आचार्य रमानाथ झाक संक्षेपमे जे भोलाबाबूक साहित्यिक एवं कवित्वक प्रतिभाक सम्बन्धमे उक्ति छनि ताहिसँ ई स्पष्ट होइछ जे यदि भोलाबाबू स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार आ सबसे अधिक मैथिली भाषाक उन्नयनमे जीवनभरि संघर्षशील एवं व्यस्त नहि रहितथितँ माँ मैथिलीक प्रतिमा पर ओ रंग-विरंगक काव्यक कतोक फूल अर्पण कयने रहितथि । एक सफल कविक लेल जाहि प्रकारक प्रतिभा प्रादृष्टिक आवश्यकता होइत छैक से सभ भोलाबाबूकेँ प्राप्त छलनि ।

गद्य एवं निबन्धक क्षेत्रमे

गद्य लेखक एवं निबन्धकारक रूपमे भोला बाबू 'श्री मैथिली' पत्रक माध्यमसँ साहित्यिक क्षेत्रमे अवतीर्ण होइत दृष्टि गोचर होइत छथि । 'श्री मैथिली' दू वर्षधरि प्रकाशित होइत रहलैक । ओहिमे हिनक लिखल गद्य सात गोट प्रकाशित छनि । ओकर सबहक शीर्षक एना अछि;—(1) हमर समाज (2) मैथिली भाषामे क्रिया बोधक शब्द (3) वर्तमान स्त्री समाज ओ हमर कर्त्तव्य, (4) स्त्री कोनो वस्तु नहि थिक (5) मैथिली डाइरेक्टरी (6) राजनीति ओ समाज नीति आ (7) सौराठ सभा ।

भोलाबाबूकगद्य रचनाकेँ मोटा-मोटी पहिने दू भागमे विभाजित कयल जा सकैत अछि, जेना;— वैचारिक स्तर पर स्वतंत्र निबन्ध आ दोसर पत्र सभक सम्पादकक रूपमे सम्पादिकीय अथवा अग्रलेख । स्वतंत्र रूपसँ लिखल निबन्धकेँ सामाजिक-समस्यामूलक, संस्मरणात्मक, ऐतिहासिक, भाषा सम्बन्धी तथा समीक्षात्मक छनि ।

भोलाबाबूक प्रथम गद्य लेख छनि 'हमर समाज' जे प्रकाशित छनि । ई निबन्ध 'श्री मैथिली'क तेसर अंकमे प्रकाशित अछि । मिथिलाक प्राचीन गौरवशाली परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे वर्त्तमान कालमे ओकर सामाजिक अघःपतन, विभिन्न कुरीति आदिक चर्चा कयल गेल अछि । एहि समस्याक समाधानक विषयमे प्रेरणाप्रद विचार राखल गेल अछि । सामाजिक समस्यामूलक दोसर लेख 'श्री मैथिली' पत्रमे जे प्रकाशित छनि तकर शीर्षक अछि, वर्त्तमान स्त्री समाज ओ हमर कर्त्तव्य''। पूर्वहि कहि आयल छी जे भोलाबाबू सामाजिक सुधारक लेल जे आंदोलन कयलनि ताहिमे नारीक उत्थान पर सबसँ अधिक ध्यान देने छथि । स्त्री शिक्षापर जोर दैत बालविवाह, वृद्ध विवाह एवं बहुविवाह आदि प्रथाकेँ दूर करबाक आग्रह एहि निबन्धमे कयल गेल अछि । एही क्रममे 'सौराठ सभा' नामक एक लेख भोलाबाबूक प्रकाशित छनि । भोलाबाबू ओहि लेखमे कहैत छथि:—

''स्मरण राखी यदि अहाँक़ उद्योगसँ एके गोट निरपराध मैथिल कन्याक बध कोनो बूढ़क परिणय तमाशा सँ निवृत भेलैक तँ इछ गोहत्या निवारणक फल भेल, यदि एको गोटाकेँ अहाँ व्यर्थ बहु विवाहसँ बचा सकलहुँ तँ देशक कतोक परिवारकेँ सुख शान्ति देलहुँ । यदि अंगरेजी पाँजिक क्रमे एको नव शिक्षित वर्ग केँ टाका लेबासँ रोकि सकलहुँ तँ अहाँ कतेक स्नेह लताकेँ बचाओल ।''

हिनक एक निबन्ध 'राजनीति ओ समाजनीति' नामसँ 'श्री मैथिली' मे प्रकाशित भेल छनि तथा पटनाक मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित निबन्ध संग्रह मे संकलित अछि । ओहि निबन्धक निचोड़ ई अछि जे सामाजिक कुरीतिकेँ दूर करबाक लेल स्वराज प्राप्त करब आवश्यक अछि ।

संस्मरणात्मक

भोलाबाबू द्वारा लिखल संस्मरणात्मक लेख सेहो भेटैत अछि । पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक लेल जे ओ संघर्ष कयलनि, ताहि पर एक पोथी 'सस्मरण' नामसँ प्रकाशित छनि । पटनाक चित्रगुप्त सभा, 9 नवम्बर 1980 ई. केँ ओकरा प्रकाशित कयलक । ई ज्ञातव्य थिक जे मैथिली मे लिखल भोलाबाबूक ई एकमात्र पोथी छनि ।

अक्टूबर 1962 ई. मे दरभंगा राजक अन्तिम महाराज कामेश्वर सिंहक देहान्तक बाद 'मिथिला मिहिर'मे भोलाबाबू एक संस्मरणात्मक निबन्ध 'स्व. महाराजाधिराज' नाम सँ लिखने छलाह । तेसर हिनक संस्मरणात्मक लेख छनि '1934 क भूकम्प' शीर्षकसँ । ई लेख 1936 ई. मे मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा द्वारा प्रकाशित 'गद्य कुसुमाञ्जली' मे संकलित अछि । एहि पोथीक संकलनकर्त्ता छलाह म.म. डॉ. उमेश मिश्र तथा ओकर भूमिका स्वयं भोलाबाबू लिखने छलाह । एहि पोथीक प्रकाशन मैट्रिक कक्षामे मैथिलीक पढ़ाइकेँ दृष्टिकोण मे राखि भेल छल ।

एकर अतिरिक्त भोला बाबूक एक गोट एहिप्रकारक लेख 'मिथिला ज्योति' मे प्रकाशित छनि । 1948 ई. मे प्राच्य विद्या महासम्मेलन दरभंगामे आयोजित छल । ओहि

अवसर पर मैथिलीक एक विभाग सेहो छल । ओकर अध्यक्षता कुमार गंगानन्द सिंह कयलनि । मुदा ओहि विभागीय सभामे मैथिलीक समस्यापर जे विचार-विमर्श राखल गेल छल, ताहि पर भाषणकर्त्ता लोकनि चर्चो धरि नहि कयलनि । भाषणकर्त्ता छलाह डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ. सुभद्र झा तथा प्रो. तन्त्रनाथ झा । भोलाबाबू ओही सम्बन्धमे अपन संस्मरण मे उपसंहार करैत जनौलनि अछि;—

"आशा की विश्वासो छल जे ओरिएन्टल कांग्रेस सदृश सारभौम संस्था द्वारा मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक परिचय देल जयतैक मुदा ताहूसँ हमरा बुझने प्रतिनिधिगणकेँ केवल ब्राह्मणमात्र मिथिलावासी एवं मैथिल बूझि पड़ल हैथिन्ह ।"

ऐतिहासिक निबन्ध

भोलाबाबू द्वारा लिखल गेल तीन गोट ऐतिहासिक निबन्ध सेहो प्राप्त अछि;—

(1) आसामी सभ्यता पर मिथिलाक प्रभाव,

(2) मिथिलाक ऊपर ब्रजपात, तथा

(3) जाहे दरभंगा राज ।

प्रथम लेख 'विभूति' नामक मासिक पत्रक प्रथम वर्षक सातम अंकमे (सितम्बर 1937 ई.)मे प्रकाशित अछि । बी. ए. कक्षाक लेल जखन 'गद्य संग्रह' संकलित कयल गेलतँ ओहिमे एकरो सम्मिलित कयल गेलैक । एहिलेख मे भोलाबाबू आसाम पर मिथिलाक प्रभाव तथा पुनः आसामक मिथिलापर प्रभाव विषयकेँ प्रतिपादित कयने छथि । विद्यापतिक समकालीन मिथिलाक प्रसिद्ध राजा सिंहक मंत्री अमियकर छलथिन । अमियकरक पौत्र नरहरि कुचबिहारक राजा विश्वसिंहक मंत्री बनि गेल छलाह । मिथिलासँ पंडित लोकनि आसाम जाइते छलाह । नरहरिकेँ मंत्री बनबाक बाद आसाम मे 14 वंशक कायस्थ लोकनिकेँ बजाकय ओतय बसौलनि । मिथिले जकाँ ओतहु पञ्जी व्यवस्था भेलैक । एहि तरहेँ मिथिलाक सभ्यता ओ संस्कृतिक प्रचार-प्रसार आसाममे भेलैक । दोसर दिस आसमसँ मिथिलामे शक्ति पूजा तथा तन्त्रक प्रचार भेलैक ।

दोसर ऐतिहासिक निबन्ध 'मिथिला ऊपर ब्रजपात' 'मिथिला' मासिक पत्रक सम्पादकीय लेखमे महाराज रमेश्वर सिंहक निधनक पश्चात लिखल गेलैक । रमेश्वरसिंह मिथिलाक एक गोट इतिहास पुरुष जकाँबनिगेल छलाह । जिबैत हिनकसँ भोला बाबूकेँ कोनो परिचयनहि भऽ सकलनि । एही कारणसँ एहि निबन्धकेँ ऐतिहासिक कहल जा सकैत अछि । तेसर ऐतिहासिक निबन्धक शीर्षक अछि—'जाहे दरभंगा राज' । ई मिथिल दर्शन मासिक पत्रक 1969 क जनबरी-फरवरी अंक मे प्रकाशित अछि । एहिमे दरभंगा राज द्वारा अपन अकर्मण्यता, समाजक कोनो कार्य नहि करब, मातृभाषा आ लिपिक संरक्षण एवं उन्नयन पर कोनो ध्यान नहि देब, आधुनिक शिक्षा आ मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक विकाससँ अत्यन्त उदासीन रहब आओर मिथिलाक दोहन ओ शोषण करब पर भोला बाबू

अपन समस्त आक्रोश प्रकट करैत छथि । राजतँ आखिर चलेगेल, मुदा एहिठामक जनताकेँ ओहिसँ कोनो लाभ नहि भेलैक । भोला बाबूक एहि आलेखमे भाषाक तीक्ष्ण कटुता तथा उपालंभक स्वरक उद्घाटन भेल अछि । किछु पंक्तिक उद्धरण द्रष्टव्य अछि;—

"आखिर कहबौक हेतु तँ तोँ छलाह मिथिलाधिराज । कोना नहि मैथिल आ मैथिली तोहर भरोस करैत ? कोना नहि ताहि भरोसेँ मैथिल गण तोहर स्तुति भावकै अपन प्रखर बुद्धिकेँ कुंठित कै लैथि ? परिणामो सैह भेल । मिथिलाक बिहार बनल, हिन्दी मैथिलीकेँ हटौलक, मिथिलाक्षर भूताक्षर भेल । मैथिली सेवक ने घरक रहलाह ने घाटक । तथापि लोक 'श्रीमानक जे इच्छा' कहि अपन कोनो अधिकार नहि बनौलक, कोनो स्वतंत्र उद्योग नहि कयलक । देशक सरकार कैं नहि गोह रौलक । गोहरबैत कोना ? मिथिले छल ओकर देश आ मिथिलेशे ओकर सरकार । तोँ नहि रहितह तँ लोक कहुना अपन पैर पर ठाढ़ हैबे करैत आ अपन मातृभाषा, लिपि संस्कृतिक रक्षा आ विकास करबे करैत, मुदा तोहरा भरोसे किछु नहि कै सकल । की बिडम्बना, की दुर्योग ।"

भाषा आ लिपि सम्बन्धी

मैथिली पत्रक सम्पादक, तथा मैथिली साहित्य परिषद्क दीर्घकाल धरि मंत्रीक रूपमे भोलाबाबू मैथिलीक लिपि, भाषा एवं साहित्य विषय सब पर निरन्तर लिखैत रहलाह । 'मिथिला मिहिर'क मिथिलांकमे हिनक 'मैथिली, भाषाक रूपमे' एक निबन्ध प्राप्त अछि ।

1948 ई. मे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा सम्पादित 'स्वदेश' मासिक पत्रक प्रथमे अंक मे भोलाबाबू अपन शुभकामना प्रकट करैत एक लेख लिखने छलाह । ओकर शीर्षक छल—'स्वदेश अमर होथु' । भोलाबाबूक विश्वास छलनि जे मिथिलांचलक जे कोनो समस्या अछि तकर समाधान भाषाक विकाससँ संभव अछि । आ'भाषाक विकास बिना पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनसँ संभव नहि अछि ।ओ 'स्वदेश'क सम्पादक कैं उत्साह दैत लिखैत छथि जे,—"एकेटा आग्रह हमर ई रहत जे स्वदेश भीषण बज्रपात जकाँ तेहन जोरसँ कड़कओ तथा चमक ओ जे मैथिलीक विरोधी गणक आंखि फुटि जाइन्ह एवं कान बधिर भऽ जाइन्ह ।"

भोलाबाबू जहियासँ मैथिलीक क्षेत्रमे पर्दापण कयलनि तहियेसँ मैथिली भाषाक समक्ष उत्पन्न विभिन्न समस्या दिस हुनक ध्यान छलनि । तँ एक विधिवेत्ता रहितहुँ ओ भाषा-विज्ञान, व्याकरण, अथवा शब्दानुशासन आदि विषयक गहन अध्ययन कयलनि । मैथिली भाषाकेँ ठोस आधार देबाक हेतु ओ 'व्याकरण प्रबोध', 'सुबोध व्याकरण' आदि नामसँ विभिन्न श्रेणीक छात्रक लेल उपयोगी छोट-पैघ व्याकरण पोथी लिखलनि । हिनक लिखल 'व्याकरण प्रबोध' तेतक नीक छलनि जे ओ यद्यपि आठम-नवम वर्गक छात्र लेल लिखल गेल छल, मुदा बादमे बिहार टेक्स्टबुक कमिटी ओकरा प्रवेशिका कक्षाकहेतु तथा दोसर कोनो व्याकरणक पोथीक अभाव मे पटना विश्वविद्यालय ओकरा इंटर कक्षाक लेल स्वीकृत कऽ लेलक ।

भाषा ओ लिपिमे परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध होइत छैक । कोनो भाषाक स्वतंत्र स्तित्वक लेल ओकर लिपि यदि अनिवार्य नहितँ महत्वपूर्ण अवश्य होइत छैक । यद्यपि मैथिलीकेँ ई गौरव प्राप्त छलैक जे ओकरा अपन लिपि छलैक, मुदा षड़यंत्र आ अकर्मण्यता दुनूक कारणसँ मिथिलाक्षरक टाइप वनबाकय ओकर प्रेसक स्थापना द्वारा लिपिक संरक्षण आ प्रचार-प्रसार नहि भऽ सकल । प्रारम्भ मे जनिका लोकनिकेँ ई कार्य करबाक सामर्थ आ प्रभाव छलनि सैह सब मैथिलीक घोर विरोधी भऽ मिथिलाक्षरकेँ प्रकाशन स्तरपर प्रचलित तथा विकसित नहि होमय देलथिन । भोलाबाबू अपन शक्ति भरि एहू दिस प्रयत्नशील रहलाह । पूर्वमे कहिआयल छी जे 'मिथिला' मासिकक एगारहम अंकक हिनक लिखल सम्पूर्ण सम्पादकीय मिथिलाक्षरमे छपल छनि । ओहि सम्पादकीय मे भोला बाबू लिखने छथि;—

''एहि पत्रक प्रकाशनसँ हमरा लोकनिक अभिप्राय केवल एतबे अछि जे कोनहुना मिथिलाक्षरक उद्धार हो, किन्तु विदित होइछ मैथिल जातिके ई दुनू विषय स्वीकार नहि छैक अन्यथा मिथिला पत्र तथा मिथिलाक्षराकन समितिक ई स्थिति नहि रहितैक ।''

'मैथिली साहित्य परिषद्क आवश्यकता' शीर्षक एक अन्य निबन्धमे, जे 'मिथिला मिहिर'क 31 मार्च 1968 क अंकमे प्रकाशित छनि, 17-18 फरबरी कैं सरिसबपाही मे सम्पन्न मैथिली साहित्य परिषद्क सैंतिसम अधिवेशनक बाद लिखने छलाह । ओहि निबन्धमे मैथिलीक प्रगति, बाधा, संभावना आदि पर लेखा-जोखा करैत आगूक मार्ग निर्देशित कयने छथि । प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीकेँ लागू करब तथा एक पत्रिकाक प्रकाशन पर उक्त लेखमे जोर देल गेल छैक ।

धर्म सम्बन्धी

राष्ट्रवादी तथा सुधारवादी होयबाक कारणे भोलाबाबू प्रगतिशील छलाह । मुदा ओ धर्मक उपेक्षा करैत छलाह से नहि कहल जा सकैछ । धर्म विषय पर हुनक एक लेख 'विश्वक्रांति और धर्म' नामक शीर्षकसँ उपलब्ध अछि । ई निबन्ध मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा द्वारा प्रकाशित तथा म. म. डॉ. उमेश मिश्र द्वारा सम्पादित 'गद्यकुसुम माला' नामक गद्य संकलन मे संकलित अछि । विज्ञानक विकासँ पाश्चात्य देशसभमे भौतिक उन्नति तँ भेलैक, मुदा धर्मक क्षेत्रमे ह्रास होइत गेलैक । अनीश्वरवादक प्रचार अधिक होमय लगलैक । युरोप पर रूसक धर्मविरोधी विचारक प्रभाव बढ़य लगलैक । धर्मक रहस्यकेँ बिनु बुझने लोक नास्तिक होमय लागल । भोलाबाबूक विचारसँ धर्मपरसँ आस्था घटलासँ जनसाधारणमे कर्त्तव्य करबाक विचारमे ह्रास भेलैक । निबन्धक उपसंहार मे भोलाबाबू लिखैत छथि;—

''दुर्भाग्यवश ई निरीश्वरवादिता, अधार्मिकता हमरहु देशक आन्दोलनकेँ आक्रांत केने

जाइछ । अत: एहना स्थितिमे हमरा लोकनिक की कर्त्तव्य ई गम्भीर चिन्ताक विषय ।''

भोलाबाबू आधुनिक तथा प्रगतिशाल होहितहुँ धर्मक रक्षाक लेल चिन्तित छलाह ।

समीक्षात्मक

भोलाबाबू लिखल तीन गोट समीक्षात्मक निबन्ध उपलब्ध अछि;—

(1) स्वर्गीय मुंशी जी ओ हुनक 'सुभद्राहरण'

(2) स्वानुभव, एवं

(3) मिथिला वैभव

मैथिलीमे महाकाव्यक रचनाक इतिहास कवीश्वर चन्दा झा रचित मिथिलाभाषा रामायणसँ प्रारम्भ होइत अछि । तकर बाद मुंशी रघुनन्दन दास अपन 'सुभद्राहरण' महाकाव्यक रचना कयलनि । मैथिली साहित्य परिषद्क मुजफ्फरपुर अधिवेशन मे मुंशीजी ओकर किछु आरम्भक अंश पढ़नहुँ रहथि । ओहि अवसर पर एहिसँ प्रेरणा ग्रहण कय कविशेखर बदरीनाथ झा एक गोट महाकाव्य लिख देबाक वचन देल थिन ।

मुंशीजीक 'सुभद्राहरण' पर प्रथम समीक्षात्मक निबन्ध मे महाकाव्यक गुण-दोष पर संक्षेप मे चर्चा कयने छथि । भोलाबाबूक अनुसार ई महाकाव्य छन्द, रस, अलङ्कार, ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि काव्यगत सभ गुणसँ अलंकृत अछि तथा मैथिली भाषाकेँ गौरवान्वित कयलक अछि । एहि महाकाव्यमे जे एक गोट पैघ दोष छैक, ताहू दिस पाठकक ध्यान भोलाबाबू आकर्षित कयने छथि । एहि महाकाव्यक प्रधान घटना हरण थिकैक । मुदा तेरह सर्गक महाकाव्यमे मात्र अन्तिम तीन गोट सर्गमे ओ समाप्त भऽ गेल छैक, बाँकी दसमे भूमिके रहि गेलैक अछि ।

भोला बाबूक दोसर समीक्षाक निबन्धक शीर्षक छनि 'स्वानुभष' । ई 24 नवम्बर 1968 ई. क 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल अछि । एहि निबन्ध मे भोलाबाबूक उद्देश्य डॉ. ललितेश्वर झा लिखित 'कवीश्वर चन्दा झा' पुस्तकक समीक्षा लिखबाक छनि । हिनक तेसर समीक्षात्मक निबन्धक शीर्षक अछि ''अकादमी द्वारा पुरस्कृत मिथिला वैभव ।'' एहि ग्रंथक लेखक छलाह पं. यशोधरझा । ई प्रथम मैथिली पुस्तकक छल जाहि पर अकादेमीक पुरस्कार 1966 मे भेटल छलैक । पुस्तकक नाम आ ओकर विषयमे कोनो तालमेल नहि छैक । मिथिलामे जे अपन वैभव छैक ताहिमे न्यायशास्त्रक अन्यतम स्थान छैक । मुदा न्यायशास्त्रक एहि ग्रन्थमे कतहु चर्चो नहि देखि भोलसा बाबू लिखैत छथि;—

'न्यायक प्रति हमरा बुझने अन्याये कयने छथि ।'

भोलाबाबूक समस्त रचित साहित्यक अध्ययनसँ ई स्पष्ट होइछ जे ओ एक विशिष्ट गद्यकार छलाह । अपन गंभीर अध्ययन, चिन्तनक बलपर अपन विषयकेँ उद्घाटन करबाक कलामे सिद्धहस्त छलाह, हिनक प्रवेश जहिना काव्यशास्त्रमे छलनि तहिना भाषा शास्त्रमे

सेहो रहनि । दर्शन शास्त्रमे सेहो हिनक रूचि असामान्य बुझि पड़ैत अछि ।'भारती' नामक पत्रमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर रचित 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थक व्याख्या प्रस्तुत कयने छथि, जाहिसँ हिनक प्राचीन साहित्यक गंभीर अध्ययन स्पष्ट होइत अछि । ओना ई नहि कहल जा सकैछ जे बाबू भोलालालदास मैथिली गद्य मे कोनो नव दिशा देलनि अछि । मुदा हिनक गद्यक सभसँ प्रधान गुण छनि विषय प्रतिपादनक स्पष्टता ओ सरलता । हिनक कोनो विषयक धारणा फरिछायल ओ सोझरायल छनि आ से गद्यक लेल एक प्रधान गुण थिक । हिनक भाषा मे मुहावरा, ओज आ प्रसाद गुण सर्वत्र चक चक करैत छनि ।

भोलाबाबूक मैथिली रचना

1. व्याकरण प्रबोध
2. सुबोध व्याकरण
3. सरल व्याकरण
4. गद्य कुसुमाञ्जलि (सम्पादित)
5. 'मिथिला' (मासिक पत्रिका, सम्पादन)
6. 'भारती' (मासिक पत्रिका, सम्पादन)
7. मैथिली-साहित्य लहरी (बालपोथी, 4 भाग)
8. संस्मरण
9. मैथिली पत्र-पत्रिकामे लिखल निबन्ध ।
10. महाकाव्य (अपूर्ण, अप्रकाशित)
11. खण्डकाव्य (अप्रकाशित, अप्राप्य)

संदर्भ-संकेत

1. संस्मरण- पृ. 18-19
2. तत्रैव- पृ. 18-19
3. 'श्री मैथिली'- वर्ष 1, अंक 4, पृ. 87

पत्रकारिताक क्षेत्रमे

आधुनिक जीवनमे पत्रकारिताक अत्यन्त अधिक महत्व छैक । ई साहित्यक प्रधान तत्त्व मानल जाइत अछि । जाहि भाषामे पत्रकारिता जतेक अधिक उन्नत अवस्थामे रहत, ओहि भाषाक साहित्यिक सर्जनात्मकता ओतेक उत्कृष्ट मानल जाइछ । अपना देशमे स्वतंत्रता-आन्दोलनक प्रारम्भहिसँ अनेक त्यागी, तपस्वी एवं साधक देश प्रेमी लोकनि देश ओ समाजमे जागरण अनबाकलेल पत्रकारिताक क्षेत्रमे अपन तन-मन-धन लगा देलनि । बिना पत्रसँ देश सेवा करब संभव नहि बुझहल जाइत छल । प्राय: सब पैद्य स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक तथा भाषा एवं साहित्यक उत्थान के निहार पत्रकारिताक क्षेत्रमे कार्य कयलनि तथा पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन, वितरण ओ प्रचार-प्रसारमे अपन योगदान देलनि । केयो अपन विचार, सिद्धांत ओ दर्शनक प्रचार पत्रेक माध्यमसँ कऽ सकैत अछि । स्वयं महात्मा गांधीक दर्शन ओ विचार हुनक पत्र 'हरिजन' आ 'यंगइण्डिया'सँ प्रचारित एवं प्रसारित भेलनि ।

'पत्र और पत्रकार' नामक ग्रन्थक लेखक द्वय कमलापति शास्त्री एवं पुरुषोत्तम दास टण्डन अपन भूमिकामे लिखैत छथि जे वास्तव मे साधकक लेल साधनाक, त्यागीक लेल उत्सर्ग, तपस्वीक लेल कष्ट-सहन तथा अनासक्ति योद्धाक लेल संघर्ष आ रणक, कविकलेल अनुभूतिक अभिव्यक्ति, कलाकारक लेल संसृतिक गूढ़ ओ रहस्यमय चिमक चित्रण करबाक, आलोचकक लेल जीवनक स्थूल सूक्ष्म धाराक विवेचनक, साहित्यकक लेल लौकिक ओ अलौकिक, यथार्थ ओ भाबुक जगतकेँ प्रकाशमे अनबाक पथ एकहि संग उपस्थित कय देबामे पत्रकारिताक अतिरिक्त आओर के सफल होइत अछि ?

पत्र आ पत्रकारितासँ संसार भरिक नव-नव घटनाचक्र सँ परिचय प्राप्त होइत छैक । ओहि माध्यमसँ अन्याय, अत्याचार तथा सामाजिक विसंगतिक विरूद्ध विचार प्रटक कयल जाइछ । ओहिसँ नूतन विचारधारा तथा कल्पनाक प्रचार-प्रसार होइत अछि । पत्रकारिताक क्षेत्रमे प्रवेश करबाकलेल साहस, सामर्थ, संवेदना, क्षमता ओ नैसर्गिक गुणसँ सम्पन्न होयब आवश्यक छैक ।

जेनाकि पूर्वमे हम 'जीवनवृत्त ओ व्यक्तित्व' अध्यायमे कहि चुकल छी, बाबू भोलालाल दास सर्वप्रथम छात्रावस्थे मे हिन्दीक पत्रकारितामे प्रवेश कयने छलाह । इलाहाबादक 'चांद' नामक हिन्दी पत्रसँ हिनका सम्पर्क भेलनि । बहुत दिन धरि ओकर

स्थाई लेखक रहलाह तथा किछु दिन-लेल सम्पादक पद पर सेहो कार्य कयलनि । इलाहाबाद मे पढ़िते समयमे हिनका लेखन दिस झुकाव भऽ गेल छलनि । ओहि समयमे 'चाँद' मासिक पत्रक बहुत नाम छलैक । बहुत शानसँ ओ प्रकाशित होइत छल । हिन्दी साहित्यक इतिहासमे ओकर अपन स्थान अक्षुण्ण छैक । भोलाबाबू जे बादमे मैथिली भाषाक उन्नयनक लेल आंदोलन कयलनि आ ताहि लेल मैथिली पत्रकारितामे प्रवेश कयलनि ताहि लेल पूर्व प्रशिक्षण हुनका 'चाँद' सँ भेटि गेल छलनि ।

उक्त लेखक द्वय एकठाम पुनः अपन पोथी 'पत्र ओ पत्रकार' मे लिखैत छथि;—

"सार ओ तत्त्व बातकेँ क्षण मात्रमे पकड़ि लेब, मानसिक सतर्कता, समयानुसार अपनाकेँ तदनुकूल बनालेबाक क्षमता, सूक्ष्म विवेचनात्मक बुद्धि, सहनशीलता ओ साहस, सतर्कता ओ सावधानी, निष्पक्षता ओ मौलिकता, कल्पना ओ पारदर्शी दृष्टि, निर्लिप्तता ओ निर्भीकता तथा सबसँ बढ़ि कऽ जगत ओ जीवनक प्रति हृदय मे सम्बेदना तथा उदार भावना ओकर आवश्यक गुण थिकैक जकर विकास कयने बिना पत्रकारितामे आगाँ बढ़ब ओ सफलता प्राप्त करब सम्भव नहि अछि ।"

बाबू भोलालाल दास एही सभ प्रकारक गुणसँ सम्पन्न भऽ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्र मे प्रवेश कयने छलाह तथा हुनका द्वारा सम्पादित दू गोट मासिक पत्र 'मिथिला' तथा 'भारती' ओकर प्रमाण स्वरूप देखल जा सकैत अछि ।'मिथिला' मासिकक प्रकाशनसँ पूर्व जयपुरसँ प्रकाशित 'मैथिली-हित-साधन', वाराणसीसँ प्रकाशित 'मिथिला मोद', दरभंगासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' एवं 'श्री मैथिली', अजमेर सँ प्रकाशित 'मैथिल प्रभा' आदि मैथिली भाषा ओ साहित्यक सेवा कऽ चुकल छल। 1928-29 ई. धरि 'मिथिला मिहिर' छोड़ि आन सभ पत्रिका बन्द भऽ गेल छल । 'मिथिलामिहिर' मे सेहो मैथिलीक स्थान हिन्दीसँ कमे छल । ई पत्र मैथिली भाषा एवं साहित्यक विकासक कार्यसँ अधिक राजदरभंगाक 'गजेटियर'क रूपमे प्रकाशित होइत छल ओहि समयमे मिथिलामे सामाजिक परिवर्तन आ सुधार दिस कोनो उत्साह नहि छल । ओकर संवाहकक पूर्णतया अभाव छल । एक दिस अंगरेजक दमन नीति आ दोसर दिस ओकर सशक्त पायाक रूपमे कार्य करैत जमींदारक शोषण-दुनूक दू पाटक बीच मिथिलांचल पिसा रहल छल । एक दिस साम्राज्यवादक सबसँ पैघ प्रतीक अंगरेजी शासन तँ दोसर दिस सामंतवादक साकार रूप दरभंगा राजक जमींदारी । 'दो पाटन के बीच मे साबित बचा न कोय' । फलस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्रता संघर्षक दिशामे नवचेतना, रूढ़िवादिताक विरुद्ध नव जागरणक लहरि देशमे जे चलिरहल छल तकरा रोकबाक कार्य मिथिलाक तत्कालीन प्रबुद्धवर्गक पोंगा पण्डित लोकनि तथा जमींदार कृपापर जीवन निर्वाह के निहार 'मो साहेब' लोकनि पहाड़ जकाँ ठाड़ भऽ कऽ रहल छलाह । अस्पृश्यता निवारण, स्त्री शिक्षा, पाश्चात्य पद्धतिक नवीन शिक्षा, समुद्र पार यात्रा, स्वदेशी आन्दोलन, तथा अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति मैथिल समाज मे विपरीत धारणा छलैक ।

एही पृष्ठभूमिमे भोलाबाबू 'मिथिला' नामक एक सशक्त मासिक पत्रक मैथिली मे प्रकाशनक ओरि आओन कयलनि । हुनका मिथिलांचलमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक उन्नति, सामाजिक सुधार ओ नव चेतनाक संवाहक जे बनबाक छलनि ! बिना पत्रक प्रकाशनक ई सभ कार्य करब संभव नहि छलनि । मुदा कोनो पत्रक प्रकाशनक लेल बुद्धि, क्षमता, साहस, निर्भीकता आ अर्थक आवश्यकता होइछ । भोला बाबू मे सभटा छलनि, किन्तु अर्थ नहि छलनि । मुदा संयोग एहेन जे अर्थक समस्याक समाधानक लेल तत्कालीन राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था 'पुस्तक भण्डार'क मुख्य संचालक एवं मालिक स्वनामधन्य आचार्य राम लोचन शरण भोला बाबूक पाछाँमे ठाढ़ भऽ गेलथिन । 'मिथिला' पत्रक मुद्रण तथा प्रकाशनक व्यय वहन करबाक भार ओ सहर्ष स्वीकार कऽ लेलथिन । ओ राष्ट्रभाषा हिन्दीक सेवामे जुटल छलाह मुदा अपन मातृभूमि आ मातृभाषा मिथिला एवं मैथिलीक विकासक लेल सेहो हुनका हृदयमे आगि पजड़ैत छलनि ।

1929 ई. क अप्रैल-मई (बैसाख मास) सँ 'मिथिला'क प्रकाशन प्रारम्भ भऽ गेलैक । एक वर्ष धरि एकर प्रकाशन नियमित रूपसँ होइत रहल । कुल बारह गोट एकर अंक भऽ सकल । अन्तिम अंक चैत्रमास 1930 ई. मे प्रकाशित भऽ आर्थिक संकटक कारणे बन्द भऽ गेल । 'मिथिला'क प्रकाशनक उद्देश्य एवं नीतिक सम्बन्धमे किछु विवाद छल । सनातनी लोकनि एहि पत्रकेँ सनातन धर्म, मिथिलाक प्राचीन परम्परा तथा संस्कृतिक पोषक रूपमे देखय चाहैत छलाह । मुदा भोलाबाबू एकरा नवीन विचार धाराक संवाहक बनेबाक आकांक्षा रखैत छलाह । एहि दू धाराक बीचमे समन्वय स्थापित करबाक लेल पण्डित कुशेश्वर मिश्र तथा बाबू भोलालालदासकेँ सम्पादक बनाकय बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयास कयल गेल । पहिल छलाह सनातनी विचारक तँ दोसर नवीन चेतनाक संवाहक । एहिमे प्रथम स्थान कुमर जीकेँ तँ दोसर स्थान भोलालाल दासकेँ देल गेलनि । मिथिलाक प्रथमे अंकमे एहि समन्वय तथा सामंजस्यक व्यवस्था प्रकाशक द्वारा देल जेल छल ।

स्पष्ट अछि जे भोलाबाबूक स्वतंत्र विचारक अनुकूल सम्पादन संभव नहि रहलनि । ओहि पर आँकुश लागल छलनि । तथापि जहाँधरि संभव छलैक भोलाबाबूक सिद्धांत ओ विचारक छाप ओहि पत्रमे प्रकाशित पाठककपत्र, सम्पादकीय विचार ओ टिप्पणी सभ मे परिलक्षित होइत अछि । 'मिथिला'क नियमावली मे ई घोषणा कयल गेल छलैक जे 'एहिमे साहित्यिक, सामाजिक तथा धार्मिक लेख छापल जाएत ।' मुदा ई घोषणा कोनो फरिछायल नहि छल । भोला बाबू उक्त पत्रक प्रथमे सम्पादकीय मे ओकर स्पष्टीकरण कयलनि । सनातनी लोकनिक प्रतिकूलताक अछैतो भोलाबाबू 'मिथिला'क दिशाकेँ ओहि दिस मोड़लनि जकर हुनका आकाँक्षा छलनि । हुनक महत्वाकांक्षा छलनि मिथिलाक समाज, भाषा आ संस्कृतिक समुन्नति करब ओ ओकरा सबकेँ भारतक नवीन राष्ट्रीय धारासँ जोड़ब । प्रथम सम्पादकीय मे भोला बाबू 'मिथिला'क उद्देश्यकेँ स्पष्ट करैत लिखैत छथि;—

''एहिपत्रक मुख्य उद्देश्य मिथिला भाषाकेँ उचित स्थान प्रदान करायब थिक । अतः पत्र यथार्थमे साहित्यिके अछि, किन्तु एहिमे सामाजिक एवं धार्मिको विषयक समावेश करब तेहने आवश्यक बुझना गेल ।''

ओही सम्पादकीयमे 'मिथिला'क नीतिक निरुपण करैत लिखल गेल अछि;—

''सामाजिक लेखहुँ मे जहाँधरि हैत तीव्र भाषाक अकारण प्रयोग नहि कैल जाएत आने कोनो एहन लेख छापल जाएत जाहिसँ ई सूचित हो जे ई कोनो खास जातिक पत्रथिक । . . .

उदार विचारक सर्वदा हमरालोकनि पक्षपाती रहब तथा अपना नीतिक विरुद्धो लेखकेँ (यदि ओहिमे किछु तथ्य रहतैक तँ) पत्रमे प्रकाशित कै सकब ।'' भोलाबाबूक उग्र सम्पादकीय विचार, सामाजिक कुरुतिक कठोर शब्देँ आलोचना, शारदाविलक समर्थन, स्त्री शिक्षाक समर्थन, पर्दाप्रथाक विरोध, अस्पृश्यता निवारण आदि विषयक प्रकाशनसँ मानू मिथिलाक प्राचीन रूढ़िवादी सनातनीक बिरनीक खोता खेँचाहल जकाँ भऽ गेलैक । 'मिथिला' तथा सम्पादक भोला बाबूक कटु आलोचना आरम्भ भेल । मुदा भोला बाबू अडिग ठाढ़ रहलाह, आ हुनक उत्तर छलनि,— '''मिथिला' चलौ अथवा बन्द भै जाओ हम एहि सत्यक अवहेलना नहि कै सकब ।'' (मिथिला अंक 8; पृ. 316)

'मिथिला'क कुल बारहो अंककेँ देखलासँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे ओकर सम्पादन अत्यंत व्यवस्थित छल । ओहिमे विशुद्ध साहित्यिक, विचारोत्तेजक विषय तथा विशिष्ट स्थायी स्तंभ पर निबन्धकेँ समुचित समावेश कयल जाइत छलैक । 'मिथिला'क बारहो अंक मिलाकय तैंतीस गोट कविता प्रकाशित अछि । एक दिस जँ राष्ट्रीय भावनाक समावेश तँ दोसर दिस रोमांस ओ सौन्दर्यक अभिव्यक्ति कविता सबहिमे दृष्टगोचर होइत अछि । ई सब जे हुए, भोलाबाबू असलमे मैथिली कविताकेँ सर्वथा एक नवीन दिशा प्रदान करबाक आकांक्षा रखैत छलाह । ओ मैथिली कविताकेँ वीर रस ओ ओजसँ सेहो सराबोर करय चाहैत छलाह । ओ अपन एहि मनोभावनाकेँ प्रकट करैत एक सम्पादकीय टिप्पणीमे कविलोकनिकेँ कहैत छथि;—

''कविता चाहेतँ प्राचीन आदर्शानुसार अलंकार शास्त्रसँ मंडित कवित्वपूर्ण हो अथवा समसामायिकतासँ पूर्ण क्रांतिकारी, वीर रसपूर्ण, तीव्र आलोचनात्मक, नवीन एवं मौलिक हो ।'' (मिथिला, अंक 2; पृ. 82) ।

एहिविचारक सम्पुष्टिक लेल ओ स्वयं एक कविता 'युवक' नामसँ रचनाकय प्रकाशित करौने छलाह । हुनक ई नवीन प्रयोग कतोक कविलोकनिक लेल पथ-प्रदर्शन करैत अछि । 'मिथिला'क अन्तिम अंकमे प्रकाशित कविताक प्रसंग हुनक विचार द्रष्टव्य अछि;—

''जहिना भारतवर्षक श्रृंगार प्रधान भक्ति काव्यक समय मे विद्यापति, गोविन्द दास आदि उत्कृष्ट काव्य रचना कय अपना समयक उच्च कवि भेलाह तहिना वर्तमान समयक

वायुमंडल देखि यदि हमर कवि समाज अग्रसर होथितँ बड़ा उपकार हो । एक प्रकारक पद्य हमहुँ अहि अंकमे 'युवक' शीर्षक देने छी । पद्य रचना मे हमर लेखनी तेहन शिथिल जे हम तकर प्रयासो करब अनधिकार चर्चा बुझैत छी, तथापि हम चाहै छी जे हमर काव्य मिथिलाभाषामे रहितहुँ केवल मैथिल, मैथिली अथवा मिथिलाक सम्बन्धमे नहि रहै प्रत्युत सार्वदेशिक और सार्वजनिक होइत भावोन्नायक रहय ।'' ('मिथिला', अंक -12; पृ. 215)

'मिथिला' पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ कतोक कवि मैथिली साहित्याकाशमे उदित भेलाह, जनिक आभासँ मिथिला ओ मैथिली चमत्कृत भेल । पुरान एवं प्रसिद्ध अनेक कविक अतिरिक्त नवीन प्रतिमा सभक प्रथम दर्शन 'मिथिला'क पृष्ठ सबहिपर होइत अछि, जाहिमे हरिमोहन झा', भुवन', जयनारायण मल्लिक, बदरीनाथ झा (पाछु कवि शेखर नामे विख्याद), वैद्यनाथ मिश्र (पाछू नागार्जुन ओ यात्री) इत्यादि नाम विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि । अनेक नवीन कवियित्री लोकनिक कविता सेहो 'मिथिला'क पृष्ठ पर आयल ।

ओहि समयक प्रतिष्ठित एवं प्रौढ़ कविलोकनिमे पुलकित लालदास 'मधुर', मुंशी रघुनन्दनदास, कविवर सीताराम झा, नन्द किशोर लालदास, काली कुमार दास, यदुनाथ झा 'यदुवर', दामोदर लाल दास, छेदी झा 'मधुप', जगदीश मिश्र 'मैथिल' इत्यादिक कविता 'मिथिला' मे निरन्तर प्रकाशित होइत छलनि ।

गद्यमे ओहिकालक प्रसिद्ध विद्वान, चिन्तक ओ प्रतिष्ठित लेखक लोकनिक रचना 'मिथिला' मे प्रकाशित अछि । संगहि नवीन लेखककेँ सेहो प्रोत्साहन भेटैत छलनि । भोलाबाबूक ध्यान प्रतिभाशाली युवक एवं छात्रलोकनिकेँ आगाँ बढ़ेबाक दिस अधिक छलनि । परवर्ती कालक कतोक प्रतिभाशाली मैथिलीक गद्यकार छात्रक रूपमे 'मिथिला'क पृष्ठ पर देखल जाइत छथि । प्रो. हरिमोहन झा ओ प्रो. रमानाथ झा भोलाबाबूक पत्रकार जीवनक अनमोल सृष्टि थिकाह ।

'मिथिला'क प्रत्येक अंक मे मिथिलासँ सम्बन्धित अधिक तथा किछु अंशमे राष्ट्रक सेहो सामाजिक, धार्मिक ओ सांस्कृतिक परिवर्तन तथा ओकर विकास सम्बन्धी लेख सब प्रकाशित होइत छल। एहि सभ विषयपर लिखनिहार ओहि कालक प्रमुख चिंतक तथा विद्वान छलाह ।

भारती

'मिथिला'क बन्द भेलाक बाद भोलाबाबू पुनः कोनोदोसर पत्र प्रकाशित करबाक लेल छटपटाय लगलाह । एकर प्रधान कारण इहो छल जे एहि कालमे भोलाबाबूक कार्यक्षेत्र मैथिलीक विकासक लेल संघटनात्मक तथा आंदोलनात्मक भऽ गेल छलनि । ओहि दुनू प्रकारक कार्यक लेल पत्रक आवश्यकता अनिवार्य होइत छैक । 'मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापना भोला बाबूक प्रयाससँ दरभंगामे भऽ गेल छलैक । स्थापनाक दोसरे वर्ष मे ओ परिषद्क प्रधान मंत्री चुनल गेलाह, जाहि पद पर दस वर्ष धरि रहलाह । 1937 ई. मे

परिषद्क संरक्षकत्वमे 'भारती' नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन भोलाबाबू लहेरिया सरायसँ आरम्भ कयलनि ।

कोन दुर्योग भेलैक जे 'भारती'क जीवनकाल सेहो 'मिथिले' जकाँ एके वर्षक रहलैक । ओ 1937 ई. क फरबरीसँ आरम्भ भेल तथा 1938 ई. क जनवरीक पश्चात बन्द भऽ गेलैक । ओहमे पाँचम-छठम तथा अन्तिम एगारहम-बारहम अंक संयुक्तांक रूपमे प्रकाशित भेल । ओकर अंतिम अंक विशेषांक रूपमे 'वसंतांक' नामसँ प्रकाशित भेल छल । अतएब 'भारती'क नबे गोट अंक सालभरिमे बहराय सकल । 'मिथिला' तथा 'भारती'क प्रकाशनक बीचमे सातवर्षक अन्तराल छल, जाहि बीच बागमती नदीमे बहुत रास जल बहि गेल छल आ मिथिला आ राष्ट्रक परिस्थितिमे कतोक परिवर्तन भऽ गेल छलैक ।

भोलाबाबूक नेतृत्वमे मैथिली साहित्य परिषद् बुद्धिजीवी लोकनिक बीच प्रतिष्ठित भऽ गेल छल । 1933 ई. क घोघरडीहा अधिवेशन तथा 1936 क मुजफ्फरपुर अधिवेशन मैथिली साहित्य परिषद्क इतिहासमे मीलक पाथर साबित भेल आ ओकर लोक प्रियता तथा कार्यक्षमता पर सभक आस्थ बनि गेल छलैक । ओहि स्थितिमे परिषद्केँ अपन एक पत्रक आवश्यकता सभ केयो अनुभव करैत छल । परिषद्क मुखपत्रक माध्यमसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक प्रचार-प्रसार संभव छलैक । भोलाबाबूक प्रयाससँ एक मित्रमंडल नामक संस्थाक स्थापना भेलैक जे मैथिली साहित्य परिषद्क संरक्षण मे भारती नामक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारम्भ कयलक । 'भारती'क सर्वे सर्वा स्वयं भोला बाबू छलाह आ 'मिथिला' जकाँ हिनकापर अनुदार ओ रूढ़िवादी सनातनी लोकनिक आंकुश नहि छलनि । पटना विश्वविद्यालय मे मैथिली प्रवेशक मांग बहुत जोर पकड़ने छल । 1936 ई.मे संथाली सन साहित्य रहित जनजातीय बोलीकेँ पटना विश्वविद्यालय मे पाठ्यक्रमक विषय मानि लेल गेल छलैक । ताहिसँ ई आशा स्वाभाविके छल जे आब मैथिलीकेँ पटना विश्वविद्यालय मान्यता बहुत दिन धरि नहि रोकि सकैत छल । तेँ 'भारती'क नीति ओ सिद्धांत मे भोला बाबूक समक्ष मैथिली मे साहित्य निर्माण तथा ओकरा अन्यान्य क्षेत्रमे आधुनिक भारतीय भाषाक समकक्षमे मान्यता प्रदान करायब छल ।

भोलाबाबू जे 'भारती'क प्रवेशांक मे 'आत्मनिवेदन' शीर्षक सँ अपन सम्पादकीय वसंत ऋतुक आगमनक संग मैथिलीक स्थितिक तुलनात्मक विवेचन करैत छथि से द्रष्टव्य अछि;—

''उदासीनताक शैत्य, विरोधक पाला, दुराग्रहक वायु-वेग आदि बाधा पराकाष्ठा पर पहुँचि, तापमान कैं ताहि बिन्दु पर लए अनलक जतयसँ की तों ओकरे परिवर्तित भेने बाट छलैक अथवा मैथिलीये साहित्यक अस्तित्व मिटने बाट छलैक । सौभाग्यवश प्रथमे पक्ष सत्य भेल । आइ पचीस तीस वर्षसँ मैथिलीक क्षेत्रमे क्षीण आलोक देखना जाइछ, तकरा हम परिस्थितिक प्रतिकूल लड़ाइ करब बुझै छी । सौभाग्यवश ओकर परिणामो नीके देखि पड़ैछ । जाहि मैथिली मनीषी गणक अदम्य उत्साहे इ आलोक कोनो रीतिये अधावधि

स्थिर से अवश्य धन्यवादहि छथि । आइ हुनके तपस्या बले हम एहि युगांतकेँ वसंत-पंचमी कहबाक साहस करै छी, अन्यथा एखनहुँ मैथिलीक प्रगति मे हमरा अनेक सन्देह अछि । विघ्नबाधाक पहाड़ ठाढ़े अछि ।

''बिहार मे मैथिलीक प्रश्न जेहन महत्वपूर्ण भए रहल अछि ताहिसँ आब केयो मिथिलावासी तटस्थ नहि रहि सकै छथि । मैथिली साहित्य परिषद्क निरन्तर उद्योग सँ विरोधक वातावरण आब किछु परिमार्जित भेल अछि ।''

मैथिलीकेँ पटना विश्वविद्यालयमे प्रवेश करायबतँ 'भारती'क उद्देश्य छलैके, मुदा ओकर व्यापक उद्देश्य छलैक मैथिलीमे विभिन्न विधामे सशक्त साहित्यक निर्माण, जाहिसँ—अन्य आधुनिक उन्नत भाषाक पंक्तिमे ओठाढ़ होयबाक योग्यता प्राप्त कऽ सके । संगहि मैथिली साहित्यकेँ राष्ट्रीय विचार धारा सँ जोड़ब सेहो एक गोट प्रमुख उद्देश्य छलैक । भोला बाबू ई बात मानैत छलाह जे मैथिलीक माध्यमसँ सेहो राष्ट्रीय चेतनाकेँ जगेबाक कार्य कयल जा सकैत अछि ।

भोलाबाबू एहि विचार पर दृढ़ रहैत उक्त सम्पादकीय मे जनौलनि जे;—''आइ हमरा आगाँ भूत-भविष्य किछु नहि अछि । हम केवल वर्तमानक किंकर छी । और यदि राष्ट्र निर्माण मे किछु मूल्य साहित्य सेवाहुक छैक तँ हम 'भारती'क उपासनामे लीन होइ छी ।''

घोषित सिद्धांत कँ समक्ष रखैत 'भारती'क पूर्णत: एक साहित्यिक पत्रक रूपमे प्रकाशन प्रारम्भ भेलैक । साहित्यक विभिन्न अंगक समृद्धिक प्रयास एकर प्रत्येक अंकमे देखल जासकैत अछि । भाषाकेँ परिष्कृत करबाक क्षेत्रमे सेहो प्रयत्न कयल गेलैक आ एहि क्षेत्रमे 'भारती'क प्रयास महत्वपूर्ण अछि ।

जहाँ धरि सम्पादन योजनाक प्रश्न अछि साधारणत: 'भारती' मिथिलाक रास्ता पर चलल । एहूमे (1) सामान्य सामग्री तथा (2) स्थायी स्तम्भ कँ समाविष्ट कयल गेलैक ।

सामान्य सामग्रीक सम्बन्धमे ई कहब अधिक उपयुक्त होयत जे भारतक तत्कालीन राष्ट्रीय मुख्य विचार धारासँ अनुप्राणित मैथिलीक प्रथम साहित्यिक पत्रिका 'भारती' छल । एकर सामग्री पूर्णत: साहित्यिक रहैत छल, पद्य एवं गद्य दुहू मे । पद्यक क्षेत्रमे 'मिथिला'क अधिकांश कवि एहू पत्रमे देखल जाइत छथि । पुरान परिपाटीक कविता तथा नवीन काव्यधारा दुहूक दर्शन 'भारती' मे होइछ । संस्कृत काव्य शास्त्रक नियमानुकूल मैथिली महाकाव्यक रचनाक प्रथम बेर 'भारती'क पृष्ठ पर दृष्टगोचर होइत अछि । मुंशी रघुनन्दन दासक 'सुभद्राहरण' महाकाव्यक प्रथमबेर प्रारम्भिक अंश 'भारती'क प्रवेशांकमे प्रकाशित भेल छल तथा ई क्रम आगाँक कतोक अंकमे चलैत रहल । चंदा झाक रामायणक बाद मैथिली मे ई प्रथमे महाकाव्य थिक । 'सुभद्राहरण'क सम्बन्धमे भोलाबाबू 'भारती'क प्रथम अंकक टिप्पणीमे लिखैत छथि;—

'' श्रद्धेय मुंशी जी ई महाकाव्य विशेषत: श्रीयुत भुवनेश्वर सिंह साहेब भुवन ओ हमरा

आग्रहें लिख रहलाह अछि । मैथिली मे एखन धरि महाकाव्य नहि छल तकरपूर्ति एहिमे अवश्य हैत और सुन्दर रीतिये हैत । मुजफ्फरपुर संस्कृत कॉलेजक सुविख्यात प्रो. श्रीयुत बदरीनाथ झा सेहो एक महाकाव्य मैथिलीमे लिखबाक प्रतिज्ञा कयने छथि । की उत्तम होइत यदि तकरो पूर्ति शीघ्र होइत ?''

जहाँधरि गद्य साहितयक प्रश्न अछि, 'भारती'क गद्य सामग्री प्रौढ़ताकेँ प्राप्त कयने रहैत छल । गल्प, साहित्यिक समालोचना, यात्रावृतान्त, नाटक इत्यादिक क्षेत्रमे 'भारती'क महत्वपूर्ण योगदान मानल जाइत अछि । गल्प सभक मुख्य स्वर सामाजिक सुधार एवं उत्थान सम्बन्धित रहैत छल । काव्य शास्त्रसँ सम्बन्धित कतोक महत्वपूर्ण निबन्ध तथा काव्य शास्त्र विषयक ग्रन्थक अंशकेँ 'भारती' मे स्थान देल गेल छल वर्ण रत्नाकरक प्रकाशन सँ पूर्वहिं ओकर किछु अंश सँ साक्षात परिचय, 'भारती' क माध्यम से भोलाबाबू करनि छलाह । ई ज्ञातव्यत्रे 'भारती'क प्रकाशनक बाद 1940 ई.मे वर्णरत्नाकरक प्रकाशनक बंगाल एसिआटिक सोसाइटिक द्वारा डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी तथा पं. बौआजी मिश्रक संयुक्त सम्पादकत्व मे भेलैक।। एही क्रम मे शिवनन्दन ठाकुर द्वारा शोधक आधार पर सम्पादित रामभद्रपुर विद्यापति पदावलीक मूल पाठ ओ टीका सर्वप्रथम 'भारती' मे प्रकाशित भेल, जकराबाद मे ग्रन्थक रूपमे प्रकाशित कयल गेलैक । साहित्यिक समालोचना तथा पुस्तक समीक्षाक इतिहासमे सेहो 'भारती'क स्थान अग्रणी अछि । साहित्यिक रचनाक अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक विषयसँ सम्बन्धित सेहो अनेको निबन्ध 'भारती'क पृष्ठ पर प्राप्त होइत अछि ।

सामान्य आलेखक अतिरिक्त 'भारती' मे निम्नलिखित स्थायी स्तंभक योजना छल;—

(1)समाचार, (2) देश-विदेश, (3) साहित्य समीक्षा, (4) झाजीक पत्रिका, (5) परिषद् समाचार, (6) सम्पादकीय टिप्पणी एवं अभिमत ।

साज-सज्जाक दृष्टिसँ 'भारती'क मुख पृष्ठ सरस्वतीक बहुरंगी चित्रसँ सज्जित रहैत छल । समग्र रूपसँ देखलापर इ स्पष्ट होइछ जे 'भारती' मैथिली भाषाक साहित्यक समृद्धिमे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक ।

'मिथिला'क मात्र बारह गोट अंक प्रकाशित भऽ सकल आ 'भारती'क संयुक्तांक लगाकय मात्र नौ गोट अंक बहरा सकल । परञ्च केवल एकैसे गोट प्रकाशित एहि दुनू पत्रिकाक सम्पादनसँ भोला बाबूक पत्रकारिता क्षेत्रक अवदान ऐतिहासिक अछि । कोनो वस्तुक संख्या तथा अवधिक आधार पर महत्व नहि होइत छैक अपितु ओकर गुणवत्ता ओ प्रभाव पर महत्व होइत छैक । एहि दुनू पत्रक मैथिली भाषाक पत्रकारिताक क्षेत्रमे ऐतिहासिक एवं युगान्तरकारी स्थान छैक, ई तँ निर्विवाद रूपसँ कहल जा सकैत अछि ।

हिन्दी साहित्य मे योगदान

भोलाबाबू गांधीजीक आन्दोलन सँ असहयोगेक समय सँ जुड़ल छलाह आ कट्टर राष्ट्रवादी बनि गेल छलाह । स्वभावत: ओ प्रारम्भ मे हिन्दीक प्रचार-प्रसार मे लागल छलाह तथा हिन्दीकेँ राष्ट्रभाषा बनेबाक लेल जे कोनो कार्य होइत छलैक ताहिसँ सम्बद्ध छलाह । ओहि समयमे हिनका हृदयमे अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति कोनो अनुराग नहि छलनि । ओ अनेकानेक हिन्दी पत्र-पत्रिकामे अपन विद्वतापूर्ण निबन्ध प्रकाशित करबैत छलाह ।

भोला बाबूकेँ छात्रावस्थेसँ हिन्दी भाषाक प्रति अपार प्रेम छलनि । ओहि समय मे ओ राष्ट्र भाषा आ मातृभाषाक भेदकेँ फरिछाकय नहि बुझैत छलाह । एहि सम्बन्धमे एक घटनासँ, जकर उल्लेख पूर्वमे कऽ चुकलछी, हिनक मस्तिष्कमे हिन्दी आ मैथिलीक फर्कक विषयमे स्पष्ट धारणा बनल छलनि । इलाहाबाद मे लॉ पढबाक समयमे हिनका हिन्दीक लेखन दिस झुकाव भऽ गेल छलनि । ओतयक 'चाँद' नामक हिन्दीक मासिक पत्रक लेखक बहुत दिन धरि बनल रहलाह तथा किछु दिन ओकर सम्पादक सेहो रहलाह ।

लहेरिया सराय (दरभंगा) मे ओकालात प्रारम्भ जखन कयलनि तँ ओहि क्रममे स्त्री समाजक दुर्गति दूर करबाक लेल कतेक 'शौहरी एवं दोख्तर' मोकदमा हाथमे लय हुनकालोकनिक कानूनी स्थिति सुधारबाक प्रयास कयलनि' ओहि लेल हिन्दूलॉक अध्ययन करय पड़लनि । 'लॉ-बुक्स'क अखनहुँ हिन्दीमे अभाव छैक । भोला बाबूक ध्यान 1924 ई. मे एहि दिस गेलनि । ओ एहि अभावक पूर्ति करबाक लेल हिन्दीमे एक वृहत् पुस्तक 'हिन्दूलॉ मे स्त्रियोंके अधिकार' नामक प्राय: एक हजार पृष्ठ मे लिख ओकर प्रकाशन धारावाही रूपें 'चाँद' मे प्रारम्भ करौलनि । ई ग्रन्थ 'चाँद' मे 1925 ई. सँ 1930 ई. धरि स्थायी स्तंभ 'हिन्दू लॉ मे स्त्रियों के अधिकार' नामसँ प्रकाशित भेलैक । अनेक कारणसँ ई ग्रन्थ पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित नहि भऽ सकल । एहू सम्बन्धमे पूर्वमे लिख चुकल छी ।

दरभंगामे हिनक सम्पर्क 'पुस्तक भण्डार', लहेरिया सराय सँ भेलनि । ओहिटाम हिन्दीक अनेक महारथी लोकनिसँ हिनक मित्रता बढ़लनि जाहिमे आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, अच्युता नन्द दत्त आदि छलाह । हिनक साहित्यिक गुरु मुंशी रघुनन्दन दास छलथिन । हुनक पुत्र नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार, जे हिन्दीमे विख्यात ग्रन्थ 'विद्यापति काव्यालोक' लिखने छलाह, से हिनक मित्र एवं सहयोगी छलथिन । 'पुस्तक भंडार' सँ

हिनक हिन्दीमे 'भारतवर्ष का इतिहास' नामक प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशित भेलनि जे कोर्स बुकमे छल तथा ओकर बहुत प्रचार भेलैक । ओहि समयमे पढयवला बिहारक प्रत्येक छात्र ओहि पुस्तककेँ पढ़ने होयत ।

ओही समयमे हिन्दीमे 'अक्षरों की लड़ाई' नामक एक पोथी भोला बाबू लिखलनि, जे अपना ढंगक अनुपम छल । ई पुस्तक हिन्दी संसार मे खूब चर्चित भेल छल । जुलाई 1944 ई. मे 'सेन्ट्रल प्रोविंस एण्ड बेरार'क डी. पी. आइ. पुस्तकालय एवं विश्वविद्यालय हेतु एकरा स्वीकृति प्रदान कयलक आ तकर बाद बिहारक शिक्षा विभाग सेहो एहि पुस्तक केँ स्वीकृत कयलक । ई पुस्तक आब दुर्लभ भऽ गेल अछि, तेँ एहि सम्बन्धमे किछु बुझबाक लेल एकर भूमिकाक किछु अंशक उद्धरण आवश्यक बुझैत छी । भोलाबाबू भूमिकामे लिखैत छथि;—

''पुस्तक की दूसरी विशेषता है, इसका पद्यभाग । प्राय: प्रत्येक अक्षर पर बहुधा लड़ाइयों के अन्त मे ऐसे पद्य उद्धृत हैं, जिसके सारे शब्द या कमसे प्रत्येक पंक्तियाँ चरण के शब्द उसी खास अक्षरसे आरम्भ होते हैं । मुझे दुख है कि ऐसे शब्द मुझे हिन्दी से बहुत कम मिले । यहाँ के पूज्य श्री युत धरणी धरजी वकील साहेब ने बाबा नानक की रचनाओं मेसे ऐसे पद्य देनेका वचन दिया था और उन्होंने इसका भरसक प्रयास भी किया । जिस हेतु मै उनका कृतज्ञ हूँ, किन्तु विदित होता है बाबा नानक जी रचनाओं मे ऐसे पद्य नहीं हैं । विवश होकर मुझे मैथिली के महाकवि गोविन्द दास जी तथा एकाध और कवियों की रचनाओं से ही संतुष्ट होना पड़ा है । एक आध पद्य मैने अपना भी रखने का प्रयास किया है ।''. . . .''

मैथिलीक उत्थानक लेल संघर्षमे भोला बाबू तेना सक्रिय भऽ गेलाह जे हुनका अगत्या ओकालति सन जमल पेशा छोड़य पड़लनि । एहिसँ हुनक आर्थिक स्थिति बहुत खराब भऽ गेलनि । मैथिली पत्रिका 'भारती'क लेल जे कर्ज भेलनि तकरा सधेबाक लेल लहेरिया सरायक अपन मकान भरना राखय पड़लनि । 1940 ई. मे भोला बाबू लहेरिया सराय छोड़ि पटना चल अयलाह । आर्थिक कठिनाइकेँ हटेबाक लेल एक हिन्दीक लेखक रूपमे पटनाक 'युनाइटेड प्रेस लि.'क प्रकाशन विभागक प्रभारी बनि नौकरी करय पड़लनि । एहिठाम रहैत हिन्दीक कतोक पाठ्य पुस्तक लिखलनि तथा सम्पादन कयलनि । हिनक 'हिन्दी व्याकरण के सिद्धान्त', 'व्याकरण कलाधर' आदि पुस्तक खूब प्रचलित आ लोकप्रिय भेलनि ।

ओही समयमे बिहार सरकार प्रारम्भिक शिक्षाक लेल हिनक किछु पोथी स्वीकृति कयलकनि । पहिनेतँ भेलनि जे विभिन्न प्रकाशक जे पोथी सभ मांगि रहल अछि तकरा दऽ दियैक आ मूल्य लऽ ली । मुदा बादमे साहसकय भोलाबाबू स्वयं प्रकाशक बनि गेलाह । 'सिद्धार्थ प्रेस' नामसँ प्रेस तथा 'अभिनय ग्रंथागार' नामसँ एक गोट प्रकाशन संस्था स्थापित कय पोथीसभ छापय लगलाह आ किछु दिनक लेल आर्थिक रूपसँ सम्पन्न सेहो भऽ

गेलाह । मुदा व्यापारी वला गुणक अभावक चलते किछु दिनक बाद पुनः स्थिति बिगड़ि गेलनि । कतोक नीक पुस्तकक प्रकाशन होहितहुँ व्यवसाय मे घाटा लागि गेलनि । पटनामे एक गोट मकानो नहि बना सकलाह ।

अन्तमे 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्'क साहित्यकार-कलाकार-कल्याण कोषसँ तीन सए टाका मासिक वृत्ति भेटय लगलनि ।

एहि पोथी सभक अतिरिक्त भोला बाबूक हिन्दीमे लिखल कतोक निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़ियायल छनि, जकर कोनो संकलन अघावधि नहि भऽ सकलैक अछि। कतोक मैथिलीक महान साहित्यकार जकाँ भोला बाबू सेहो राष्ट्र भाषा हिन्दीक सेवा प्रारम्भ कयने छलाह तथा हिन्दीकेँ राष्ट्र भाषा पद पर आसीन करबाक कार्यमे सहभागी बनल छलाह ।मुदा जखन कखनहुँ हिन्दीक समर्थक लोकनि मैथिलीक विरुद्ध प्रचार करैत छलाह तँ भोला बाबू अत्यंत खेदित भऽ उठैत छलाह । यद्यपि भोला बाबू अपन मातृभाषा मैथिलीक लेल समर्पित छलाह, मुदा तैयो हृदयसँ राष्ट्रवादी रहैत हिन्दीक अहित कखनहुँ नहि सोचि सकैत छलाह । हुनक धारणा छलनि जे हिन्दीक विकाससँ मैथिलीक प्रगति मे तत्त्वतः कोनो बाधा उपस्थितनहि भऽ सकैत छैक ।

मैथिलीक लेल अपन सर्वस्व झोंकि तथा मैथिलीकेँ बिहारक शिक्षा विभाग तथा पटना विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत प्रदान कराय आ ओकर विकासक मार्ग केँ प्रशस्त कऽ भोला बाबू केँ पुनः अपन आजीविका तथा योगक्षेम लेल हिन्दीक शरण लेबय पड़लनि, ई मैथिली भाषी लोकनिक लेल एक ग्लानिक विषय थिक तथा एहि पुर गंभीरतापूर्वक चिंतन होयबाक चाही । हमरा लोकनिकेँ एहेन व्यवस्था करबाक चाही जे भविष्य मे कहियो बाबू भोला लाल दास सन मैथिलीक अनुरागीकेँ अपन जीवनयापनक लेल ई कठिनाइ उत्पन्न नहि होइत न ।

भोलाबाबूक हिन्दीक रचना

1. हिन्दू लॉमे स्त्रियों के अधिकार
2. ईशावास्योपनिषद (पद्यानुवाद और टीका)
3. विश्व इतिहास दीपिका
4. अक्षरों की लड़ाई
5. व्याकरण-कलाधर
6. व्याकरण-कलाप
7. व्याकरण-कला
8. व्याकरण-विमर्श
9. बिहार टेकस्ट बुक कमिटी द्वारा स्वीकृत इतिहास ग्रंथ ।

उपसंहार

बाबू भोलालाल दासकेँ मैथिली दघीचि जे कहल जाइत छनि से पूर्णतया उचित । प्रारम्भसँ लऽ कऽ अद्यावधि जतेक गोटे मैथिलीक उन्नतिक लेल कार्य कयलनि अछि, ताहिमे निर्विवाद रूपसँ ई कहल जासकैत अछि जे भोलाबाबू सन त्याग, तपस्या, संघर्षशीलता ओ समर्पण दोसर कोनो दोसर व्यक्तिमे नहि पाओल जाइछ । भोला बाबू ताहि समयमे ओकालति प्रारम्भ कयने छलाह जे अपार धन कमैतथि आ प्रसिद्धि प्राप्त करितथि । मुदा अपन पेशाकेँ छोड़ि आ अपन एक मात्र मकानतककेँ भरनापर राखि मैथिलीकलेल संघर्ष करैत रहलाह । बादमे जखन प्रकाशनक कार्य पटनामे प्रारम्भ कयलनितँ किछु दिन धरि तँ नोट गनबाक पलखति नहि भेटैत छलनि, केवल नोटक गड्डी गनैत छलाह। मुदा व्यापारी ज्ञानक अभावमे ओहू मे घाटा लागि गेलनि, कारण हुनक समयक अधिकांश हिस्सा मैथिलीक कार्यमे तखनहुँ लगैत छलनि । सरस्वतीक अर्चना केनिहार आदर्शवादी व्यक्ति लक्ष्मीक कृपापात्र कतेक दिन रहि सकैछ ?

भोलाबाबूक समाज तथा अपन मातृभाषाक प्रति सेवाक ठीकसँ लेखा-जोखा अद्यावधि नहि भऽ सकल अछि । हुनक उचित स्थानक निर्धारण बाँकी रहि गेल अछि । असल मे कोनो भाषा ओ साहित्यक क्षेत्रमे जीवन लगौनिहार ओहि व्यक्ति दिस मूल्यांकन तथा समीक्षा केनिहारक ध्यान स्वतः आकृष्ट होइत छनि, जे सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्यक निर्माण प्रचुरमात्रामे कयने रहैत छथि । पाठक ओ समालोचक द्वारा रचनासभक अध्ययन करबाक क्रममे साहित्यकारक लेल उचित स्थान स्वत- निर्धारित भऽ जाइत छनि । परञ्च भाषाक लेल संघर्ष एवं आन्दोलन केनिहार भोलाबाबूकेँ सर्जनात्मक साहित्यक निर्माण करबाक लेल एकाग्रता तथा अपेक्षित समय कतयसँ भेटितैन ? ओ अपन समस्त ऊर्जा एवं श्रम मैथिलीकेँ उचित अधिकार प्राप्त करबामे लगा देलनि । जकर फलस्वरूप मैथिलीक गणना आइ भारतक समस्त प्रमुख भाषाक संग कयल जाइत छैक, प्राथमिक कक्षासँ विश्वविद्यालय स्तर धरि मान्यता प्राप्त छैक, विश्वसंस्था पी. इ. एन., ओरियेन्टल कान्फ्रेस, बिहार लोक सेवा आयोग तथा केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, मे सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त कयने अछि । मैथिली जे आइ संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे सम्मिलित होयबाक योग्यता प्राप्त कयने छि, आ ओहि लेल 'मिथिला विकास मंच नामक संस्थाक माध्यमसँ संघर्ष भऽ रहल अछि, ताहि पाछाँ भोलाबाबूक अथक ओ निस्वार्थ सेवा एवं त्यागक अवदान सर्वोपरि छनि ।

मैथिलीकेँ समृद्धि प्रदान करबाक दिशामे जे जीवन पर्यन्त भोलाबाबू चिन्तन शील तथा क्रियाशील रहलाह, ताहिसँ जे फल प्राप्त भेल छैक से थिक; — दरभंगाक मैथिली साहित्य परिषद्क स्थापना, पटना विश्वविद्यालय तथा बिहार संस्कृत एसोसियेशनक पाठ्यक्रममे मैथिलीक प्रवेश, नव-नव प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार एवं लेखकक खोज, प्रोत्साहन, साहित्य निर्माणक लेल मार्ग दर्शन तथा मिथिलांचलमे मैथिलीक प्रति जागरण आदि ।

रचनाकारक रूपमे भोलाबाबू ओना कविता सेहो लिखलनि, खण्ड काव्यक सृजन सेहो कयने छलाह, मुदा प्रधानतया ओ एक सशक्त गद्यकार एवं पत्रकार छलाह । ज्योतिरीश्वरक बाद आधुनिक मैथिलीक गद्य साहित्य चन्दा झा सँ प्रारम्भ मानल जाइत अछि । बीचमे म.म. मुरलीधर झा, म.म. परमेश्वर झा, लाल दास, जीवन झा, विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, म.म. मुकुन्द झा 'वख्शी', म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा, साहित्य रत्नाकार मुंशी रघुनन्दन दास , पं. जर्नादन झा 'जनसीदन', पं. जीवछ झा प्रमृति अनेक युवक, प्रौढ़ विद्वान मैथिलीक गद्य साहित्य केँ मजलनि तथा सजौलनि ।

संस्कृत साहित्य शास्त्रक आचार्य लोकनि काव्यत्वक दृष्टिसँ गद्य ओ पद्य मे मौलिक अन्तर नहि मानैत छथि । हुनका लोकनिक एकमात्र कसौटी छलनि सरसता अथवा रमणीयता, जकरा रङ्लापर गद्य सेहो काव्यथिक आ नहि रहलापर पद्योकेँ काव्य नहि कहल जासकैछ । एतबे नहि, ओलोकनि गद्यक द्वारा काव्यत्व-निष्पतिकेँ अत्यंत कठिन व्यापार मानलनि अछि । 'गद्य कवीनां निकषं वदन्ति'क प्रसिद्ध उक्ति एकरा स्पष्ट करैत अछि । कोनो भाषाक प्रारम्भिक रचना पद्य मे प्राप्त होइछ । भाषाक समृद्धि, विकास ओ ओकर ठोस रूप गद्य माध्यमसँ परिलक्षित होइत अछि । मैथिली भाषाक गद्यक रचना-निर्देश भोलाबाबू ओहि समयमे प्रारम्भ कयलनि जखन ओकर वर्त्तमान रूप निश्चित नहि भेल छल। वर्तिनी मे सेहो एकरूपता नहि आयल छल । परञ्च भोलाबाबूक मैथिली गद्य साहित्य चिक्कन छनि, प्रभावोत्पादक छनि तथा संप्रेषणीयतासँ उजागर छनि ।

भोलाबाबू अपन समकालीन सामंतवादी पृष्ठभूमि मे जनमल, पालित ओ पोषित महार्थी लोकनिक द्वारा कतबो नगण्य बनेबाक चोट सहने होथि, मुदा मिथिलांचक आधुनिक विद्वान, मैथिलीक साहित्यकार, अनुरागी तथा साधारण जन समुदायक मस्तिष्क आ हृदयमे हुनक स्थान अक्षुण्ण बनल छनि । मिथिलांचल मे आगाँ अबैवला सामाजिक सुधार एवं मैथिलीक उत्थान मे रूचिरखनिहार पीढ़ी दर पीढ़ी अनन्त कालधरि बाबू भोललाल दाससँ प्रेरणा ग्रहण करैत रहत । आइ सम्पूर्ण मिथिला बाबू भोलालाल दास सन अपन सपूत पर ओहिना गौरवान्वित अछि जेना निकटस्थ बंगाल राजाराममोहन राय पर अछि । एहेन लाल पर संसारक कोनो क्षेत्र अपन माथ ऊँच करत ! बाबू भोलालाल दासक आत्माक स्मृतिमे हमर शत शत नमन !!

11715
9.12.04

उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे अवतरित, उच्चकोटिक शैक्षणिक योग्यता-प्राप्त, असहयोग आन्दोलनसँ गांधीजीक अनुयायी, विभिन्न राष्ट्रीय विद्यालयक अध्यापक, स्वतंत्रता सेनानी, जहल-यात्री, मातृभाषा मैथिलीक उत्थान एवं मान्यता तथा मिथिलांचलक सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक नवजागरणक लेल आजीवन संघर्षरत एवं समर्पित, मिथिलाक इतिहासमे राजा राममोहन रायक समकक्ष आओर मैथिली एवं हिन्दीक कवि ओ निबन्धकार, कतोक पोथीक लेखक, पत्रकारितासँ छात्रावस्थासँ जुड़ल, बहुआयामी प्रतिभाक धनी व्यक्तित्व छनि बाबू भोलालाल दासक ।

एहि शताब्दीक समस्त साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहासमे भोला बाबूक नाम सर्वत्र चक-चक करैत छनि तथा जन-जनक हृदयमे ओ बसल छथि ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ वाणिज्य निकायमे स्नातकोत्तर डिग्री-प्राप्त, छात्रजीवनसँ स्वतंत्रता-संग्राममे भाग लेनिहार, कट्टर गांधीवादी आ संगहि समाजवादी आंदोलनसँ जुड़ल, बिहार सरकारक सहकारिता, लघुउद्योग, हस्तकरघा एवं हस्तशिल्प, खादी-ग्रामोद्योग आदि विभागमे उच्च पदाधिकारीक पदकेँ सुशोभित केनिहार, विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाक क्रिया-कलापमे संलग्न, मैथिली, हिन्दी आ अंगरेजीक सफल निबन्धकार श्री ज
विनिबन्ध बाबू भोलालाल दासक विरा
पर सम्यक प्रकाश दैत अछि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 D 26 D
00117115

पचीस टाका

ISBN 81-260-0615-3